परिभाषा
(कथा संग्रह)

परिभाषा

(कथा संग्रह)

कल्पना झा

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

परिभाषा (कथा संग्रह)
कल्पना झा

ISBN : 978-81-991905-5-9

कॉपीराइट : लेखिका

आवरण : पूजा कुमारी झा

पहिल संस्करण : 2025

मूल्य : **200/- टाका**

प्रकाशक :
किसुन संकल्प लोक, किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131
e-mail : kedarkanan3@gmail.com
kisunsankalplokpublication@gmail.com
मो. : 7542043991 / 7004917511

वितरक : मैत्रेयी प्रकाशन, बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, नई दिल्ली-110084, मो. 9431693352
e-mail : maitreyipublication@gmail.com

ले-आउट : हर्ष कंप्यूटर्स, दिल्ली-86 (मो. 7011503212)

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
- कल्पना झा, द्वारा : त्रिवेणी कुमार झा
  हाउस नं. 2, रोड नं. 3, इन्द्रपुरी, पटना-800024
  मो. 9102556655
- केदार कानन, किसुन कुटीर, गुदरी बाजार,
  सुपौल-852131 (बिहार), मो. : 7004917511

PARIBHASHA : Maithili short stories by Kalpana Jha
Price : Rs. 200/- (Rs. Two hundred only)

समर्पण

जाहिदिन सँ लेखनी धएलहुँ, डेग-डेग पर निःस्वार्थ भावें
मार्गदर्शन कएनिहार सभ आत्मीयजन कें सादर समर्पित

रचना-क्रम

दू शब्द	*9*
आफत सँ अवसरक परिणति 'परिभाषा'	*13*
हमर कथाकार	*15*
पीहू	23
पिता	30
जलमदिन	39
माधुरी-1	47
माधुरी-2	52
थेरेपिस्ट	57
जानवर	67
पुनरावृत्ति	75
ई दोष हमर ने!	85
या शुभ्रवस्त्रावृता	93
बसात	103
पुरुष मनोविज्ञान	112
दामी नूआ	115
परिभाषा	118

दू शब्द

निस्सन्देह माए बनब एकटा स्त्रीक लेल सभ सँ सुखद अनुभूति छैक। मातृत्व पद पाबि जाहि परिपूर्णताक अनुभव करैत अछि एकटा स्त्री, ठीक तहिना बुद्धिजीवी लोक किछु लीखि क', किछु सार्थक (अपना भरि सार्थके लिखैत अछि केओ, पाठक-आलोचक कें जेहन बुझाइन) सृजन क' क' अनुभव करैत अछि। छोट-मोट रचना सभ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित होइत, अपन लिखल जखन पोथी रूप मे लोकक सोझाँ प्रस्तुत करबाक बेर औतैक, तँ ओ कतेक आह्लादित-उत्साहित होएत, तकर अनुमान लगाओल जा सकैत अछि। वास्तव मे इहो अनमन मातृत्व पद पाबहिए सन सुखदायक अनुभव अछि।

पहिले-पहिल एकटा पोथीक रचयिताक रूप मे अपन नाम अंकित होएब, निस्संदेह सुखदायक अनुभव अछि मुदा ई सुख प्राप्त करबाक लौल मे पोथी प्रकाशित नहि करबाओल अछि हम, से स्पष्ट क' देब आवश्यक अछि। ई स्पष्टीकरण आवश्यक अछि एहि कारणें जे आइ-काल्हि देखि रहल छी, लक्ष्मीक प्रसादात् धड़ल्ले सँ लेखक बनि रहल छथि लोक। साहित्यकार मे गानल जाइ, ताहि लेल बेहाल अछि लोक। सत्य कही तँ हमरा एहन कोनो सौख जोर नहि मारने छलए। हम 'फेसबुकिया लेखक' बनि सेहो सन्तुष्ट छलहुँ। आत्मप्रशंसा नहि बूझल जाए एकरा। यथार्थ कहल।

चूँकि फेसबुक पर रहरहाँ किछु-ने-किछु लिखैत रहल छी हम, तँ बहुत लोकक नजरि पड़ैत रहैत छलनि। सौभाग्यवश ओहि लिखलाहा पर किछु स्थापित साहित्यकार लोकनिक नजरि सेहो पड़ैत रहलनि। आ सएह देखि बहुत गणमान्य कइअक बेर आग्रह करैत छलाह, उत्साह-वर्धन करैत रहैत छलाह, ''आब एकटा पोथी अएबाक चाही अहाँक'' (एहि बातक चर्चा भेटत ''हमर कथाकार'' मे) मुदा हम पहिने स्वयं आश्वस्त भ' जाए चाहैत छलहुँ, जे वास्तव मे हमर लिखल विषय-वस्तु पोथी रूप मे आबए योग्य अछि कि नहि! समाजोपयोगी अछि कि नहि!

फूसि नहि कहब, पूर्ण आश्वस्ति पाएब संभव नहि बुझना गेल। तथापि एकटा लेखकक रूप मे पहिल डेग उठएबाक दुस्साहस कइए लेलहुँ अछि, अन्ततः। आब

अपने लोकनि द्वारा सराहल जाएब, कि नकारल जाएब, सभ अवधार! दुत्कारल जाएब, तँ सेहो अवधार!

विज्ञ पाठक लोकनि सँ निवेदन जे भाषा सौन्दर्य आ शिल्पक मूल्यांकन, ई ध्यान मे राखैत करब जे लेखकक ई पहिल प्रयास छनि। भावना-प्रधान कथ्यक संग प्रस्तुत भेलहुँ अछि, तँ भाव देखबैक रचनाकारक। जहिना देवता-पितर कें अराधति लोक कहैत अछि ने...''भगवान 'भाव' देखैत छथिन, आडम्बर नहि'' सएह... भगवान बनि क' देखबैक हमर लेखन कें।

मनुष्यक मूल प्रकृति जे छै से इएह ने...प्रेम देब आ प्रेम पाएब...मुदा सामाजिक बन्धन मे ओझराएल मनुक्ख कें बहुत किछु सोचब, नीक-बेजाए परिणाम पर विचार करब आवश्यक रहैत छैक। ओना तँ 'प्रेम'क अभिव्यक्ति शब्द मे करब असंभवे बुझू, तथापि हम ओही 'प्रेम' कें परिभाषित करबाक प्रयास कएल अछि, अपन कथा सभक माध्यम सँ। तैं पोथीक नाम देलहुँ अछि ''परिभाषा'', परिभाषित भेल कि नहि, से अपने लोकनि कहबैक। भावुकता भरल कथा लिखैत काल शिल्प पर ध्यान केन्द्रित राखब कने कठिनाह बुझाएल हमरा। शिल्प आ भाव दुनूक संग तारतम्य बैसबैत प्रवाहमय कथा बूनब दालि-भातक कौर नहि छै। आ तैं चूक भेल होएत, निश्चित भेल होएत, इंगित कएल जाएत तँ परिष्कृत होइत जाएत लेखनी हमर। त्रुटि इंगित कएनिहारक प्रति कृतज्ञ रहब हम।

आइ जे-जेहन एकटा पोथी ल' क' अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत भेल छी, से प्रथम गुरु माता-पिताक आशीर्वादेक प्रतिफल अछि। माता स्व. वीणा झा इहलोक त्यागि चुकल छथि। स्थूल रूप मे हमरा संग नहि छथि तथापि हुनकर सूक्ष्म रूप आह्लादित भ' आशीर्वाद संप्रेषित कइए रहल होएत, विश्वास अछि। सौभाग्यवश पिता श्री गोपाल झाक आशीर्वाद आ प्रोत्साहन संग अछि सदिखन।

ई कहबाक बेगरता तँ नहि अछि, मुदा कहब आवश्यको अछि जे पति श्री त्रिवेणी झा जीक सहयोगक बिना हमरा सन सामान्य गृहणीक लेल 'रचनाकार' रूप मे अपने लोकनिक समक्ष प्रस्तुत होएब संभव नहि छलए। कृतज्ञ छी आ रहब हम हुनकर, एहि लेल जे कहियो ओ रंग-रंगक पकवान आ कि तरुआ-तरकारीक फरमाइश क' हमरा भनसाघर मे ओझरा क' राखए नहि चाहलनि। जे ध' देलिअनि सोझाँ परसि क', से प्रेम सँ ग्रहण कएलनि। तखनहि ने हम किछु लिखबाक समय निकालि पाबैत छी।

पुत्रद्वय चि. पीयूष आ चि. आयुषक संग, पुत्रवधू सौ. काजोलक संग मित्रवत संबंध हमरा टेंशन-फ्री राखैत अछि। जे रचनात्मकताक लेल सहयोगी तत्व अछि।

सभक प्रति कृतज्ञता भाव मोन मे अछि, मात्र एहिठाम लिखबा लेल नहि लिखि रहल छी। वास्तव मे हम कृतज्ञ छी सभक प्रति।

आ सभ सँ बेसी कृतज्ञ छी हम अपन कथाक पात्र सभक प्रति। चाहे ओ पोथी मे संलग्न पहिल कथा ''पीहू''क पीहू नामक मूक-बधिर बचिया होइथ, आ कि पोथीक अन्तिम कथा ''परिभाषा''क मुख्य पात्र सुजीत होइथ। कथाक एहि पात्रे सभ सँ तँ एहि पोथीक अस्तित्व अछि ने!

जे-जेहन लिखलहुँ अछि, से सप्रेम समर्पित क' रहल छी अपने लोकनिक कर-कमल मे। स्नेह ओ आशीर्वादक आकांक्षाक संग—

पटना **—कल्पना झा**

1 नवम्बर 2025

देवोत्थान एकादशी

आफत सँ अवसरक परिणति 'परिभाषा'

कोरोना काल मे सामाजिक संजालक सक्रियता सँ साहित्य सृजन मे अभूतपूर्व अभिवृद्धि भेल। मैथिली भाषा साहित्यक अल्प समय मे पठनीय विधा कथा, कविता, गीत, निबन्ध, आलेख आदि रचनाक बहुलता रहल। सहरसा, सुपौल, अररिया, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय नेपालक सुदुर गाम सँ ल' क' पटना, दिल्ली, बम्बई, कोलकाता, काठमांडू आदि नगर-महानगर धरि मे कोरोनाक भयावहता सँ मोन बहटारैत साहित्य सृजन सम्बल, साहस आ नव सँ नव लोक कें परिचिति प्रदान कएलक।

एहि काल खण्ड मे प्रवेशित रचनाकार समूह मे एकटा नाम कल्पना झा, बड़ थोड़ समय मे सामाजिक संजालक संग पत्र-पत्रिका होइत जनमानस मे बेस लोकप्रियता प्राप्त कएलक। पहिने लघुकथा, फेर कथा, बीच-बीच मे काव्य आ निबन्ध लेखनक माध्यमें अपन उपस्थिति दैत रहलीह अछि। अवसर विशेष पर आलेख पाठक वाचन मे सेहो सहभागिता रहलनि अछि।

एहि विधा चातुष्ट्य मे गुणात्मक दृष्टिकोण सँ हमरा हिनक कथा बेसी प्रभावित करैए। संयोग एहन जे 'परिभाषा' नामक कथा संग्रहक संग कथा लेखिकाक रूप मे विधिवत श्रेणीबद्ध भ' रहलीह अछि। संभव थिक लिली रे, नीरजा रेणु, उषा किरण खान, शेफालिका वर्मा, नीता झा, ज्योत्स्ना चन्द्रम, विभा रानी, आशा मिश्र, वीणा ठाकुर, सुस्मिता पाठक, मेनका मल्लिक, अभिलाषा, विजेता, रोमिशा आदि मैथिली कथा लेखिकाक बाद 'परिभाषा'क प्रसादात् कल्पना झाक नाम सेहो लोकक मानस मे अपन स्थान सुरक्षित क' लिअए। इहो भ' सकैछ जे मैथिली शब्द अरण्य मे कल्पना झा कतोक लेखक लेखिका जकाँ हेराएल भोतियाएल रहि जाथि। मुदा, एकर संभावना क्षीण अछि। 'परिभाषा' हिनका विस्मृत नहि हुअए देत।

एहि संग्रह मे चौदह टा कथा कें अपन परिभाषा गढ़बाक अवसर भेटल अछि। लेखिकाक मनोविज्ञानक ज्ञानक प्रभाव प्रायः प्रत्येक कथाक अन्तःसौन्दर्य थिक।

अभिनव कथ्य, रोचक शिल्प, कथ्यानुरूप चरित्रक निर्माण आ ओकर परिष्कार कथा सभ कें सामान्य सँ विशिष्टता दिस अग्रसर करैत अछि। अपन-अपन ढंगे कथा सभ प्रेम, ममत्व, श्रद्धा, समर्पण, विश्वास वा कही तँ मानवीय मूल्य कें नव धरातल प्रदान करैत अछि। परंच कतहु-कतहु भावनाक अतिरेक ठीक ओहिना लगैए जेना राजमार्ग पर स्पीड ब्रेकर।

एकैसम शताब्दीक रजत वर्ष मे जखन कोसी कमलाक बाढ़ि जकाँ काव्य-लेखनक उजाहि अछि, तखन एकटा पठनीय कथा संग्रहक संग कल्पना झा उपस्थित भेलीह अछि, से अभिनन्दनीय अछि। 'रुसल जमाय' सनक कालजयी कथाक रचनाकार उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क आत्मा तृप्त भेल हेतनि जे हुनक दौहित्री कथाकार भ' गेलीह।

एहि विवेचनक मूल्यांकन तखने संभव अछि जखन अपने लोकनि 'परिभाषा'क परिशीलन करब। लेखिकाक सुदीर्घ लेखन यात्राक कामनाक संग -

—अशोक कुमार मेहता

नीरजा रेणु जन्म जयन्ती
11 नवम्बर, 2025

हमर कथाकार

हमर लिखल तीन-चारि टा कथा विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित भ’ चुकल छलए। कथा सभ पढ़ि किछु गणमान्य प्रोत्साहित करैत रहैत छलाह, ई कहि जे, ‘‘एकटा नीक कथाकार बनबाक अपार सम्भावना देखैत छी, अहाँक भीतर।’’ एहन कहनिहार मे अधिकांश साहित्य अकादमी विजेता साहित्यकार, माने स्थापित साहित्यकार सभ छलाह। केओ कहथि, ‘‘अहाँ कथा नीक आ स्तरीय लिखि सकैत छी। से अहाँक अमुक पत्रिका मे प्रकाशित कथा पढ़ि एहन अनुमान लगाओल हम। मैथिली साहित्य कें एकटा नीक कथाकार भेटि जेतैक। नियमित कथा लिखी, हमर आग्रह।’’

एहि तरहक बात सँ बड़ प्रोत्साहन भेटए। मनोबल बढ़ए। आब हमर मोन सदिखन दमदार कथानकक लेल बौआए लागल। बौराए लागल, सेहो कहल जा सकैए। कतहु कोनो नोत-हकार पूरए जाइ कि कोनो यात्रा पर जाइ, सभठाम कथानकक तलाश रहए लागल। बाहर तँ बाहर घरो बैसल दुनू प्राणी जे बहसबाजी करी, सभ बात पर हुअए, ‘‘अरे...एहि मुद्दा पर तँ नीक कथा बूनल जा सकैए।’’

कहबाक माने शनैः शनैः हम मोन-प्राण सँ कथाकार भेल जा रहल छलहुँ। मुदा समस्या ई छलए जे हमर दुनिया घरे भरि रहल सभदिन। तँ भिन्न भिन्न मुद्दा बला कथानक उपलब्ध हुअए कोना। ओना लिखबाक लेल तँ अपन दाम्पत्य-जीवन आधारित असंख्य कथा लिखि सकैत छलहुँ मुदा अपना संग-संग हुनका (अपन पति परमेश्वर कें) किएक देखार करी, से सोचि ठमकि जाइत छलहुँ। डर छलए, पति-पत्नीक बीच अतिशय प्रेम देखि लोक नजरि ने लगा दिअए आ झगड़ा-झंझटक बात पर कथा लिखि अपन पाठकक सोझाँ दूइर होएब सेहो बुड़बकाहीए कहल जाएत। कारण झगड़ा झंझट हमहीं बेसी करैत रहैत छी घर मे। कहबाक माने क्रोधक वशीभूत बेसी हमहीं रहलहुँ सभदिन। पतिदेव श्री त्रिवेणी झा जी कने बेसीए सोझ/सज्जन प्रवृत्तिक लोक।

तहिना घरक भीतर बला प्रसंग पर, जेना सासु-पुतहु, आ कि ननदि-भाउज प्रसंग पर खिस्सा लिखि कोना आ किएक देखार करी ककरो। ई संबंध सभ नितान्त व्यक्तिगत राखबा योग्य होइत अछि। लिखी तँ की लिखी! भारी समस्या छलए। नैहरक खिस्सा लिखब तँ आरो दुष्कर हमरा लेल। आम तौर पर बेटी सभ माएक भक्त रहैत अछि। मुदा हम बाल्यकालहि सँ विचित्र टाइप कें प्राणी रहल छी। अत्यधिक संवेदनशीलता सँ ग्रस्त हम, माएक छोट-छोट डाँट-फटकार पर हिचुकि-हिचुकि कानए लागी। आ ई नेप चुआएब हमरा माएक कोपभाजन बनएबा मे भयंकर तरीका सँ सहयोगी रहल। नेप चुअएबाक संग-संग 'ओवरथिंकिंग' केर समस्या सँ ग्रस्त, सहनशीलताक कमी, मुंहफट होएब माने कटु सत्य बाजबाक बेमारी, कुल मिला क' कही तँ तुलसीदास जीक दोहा हमरा स्वयं पर अक्षरशः फिट प्रतीत होइत अछि—

''जौं अपने अवगुन सब कहऊँ।
बाढ़इ कथा पार नहिं लहऊँ।।
ताते मैं अति अलप बखाने।
थोरे महुँ जानिहहिं सयाने।।''

आ एही असंख्य दुर्गुणक कारणें माएक कोपभाजन बनले रहलहुँ सभदिन। आब एहन तरहक विषय पर की लिखी आ कोना लिखी हम।

ओना समय-समय पर अड़ोस-पड़ोस केर घटना सभ पर किछु कथा लिखा रहल छलए। एक बेर विद्यापति समारोहक आयोजन मे एक गोट साहित्य अकादमी विजेता साहित्यकार सँ भेंट भेल। ओ बहुत जोर दैत आग्रह कएलनि, ''आब एकटा कथा-संग्रह एबाक चाही अहाँक।'' पूर्व मे कहल प्रोत्साहित करएबला बात जकाँ इहो बात दिमाग मे 'सेट' भ' गेल एकदम। मुदा समस्या ई छलए जे कथा-संग्रह प्रकाशित करएबा लेल आरो कथा लिखए पड़ितए। तखनहि ने पोथी प्रकाशित कराओल जाएत।

बाल्यावस्था सँ विवाह समय धरि कएल अप्पन गाम, नानी गाम, पीसी गामक यात्रा सभक घटनाक्रम दिस दिमाग दौड़ाओल। किछु विशेष रोचक, जे कथा-साहित्य मे भूचाल सन आनि दिअए तेहन कथानक नहिए सूझल आखिर। तत्पश्चात विवाहोपरान्त पतिदेव संग भोपाल आ कोलकाता दू ठाम घर बसौलहुँ से मोन पड़ल। मुदा सोचलहुँ ओ आर्थिक तंगी बला समयक खिस्सा लिखि ककरो सहानुभूति किएक बटोरी आखिर। ओना ओहि समयक खिस्सा तँ बहुत मोन पड़ैत रहैए। कोना सन् 1994 मे मटिया तेल बला स्टोव आ कहियो काल बिजली बला हीटरक आँच पर नाना प्रकारक पकवान बनाए खुअबियनि पति-परमेश्वर कें।

आब सोचैत छी तँ अविश्वसनीय सन बात लागैत अछि। हम आ ओतेक मेहनती? ई कोना भेलैक। किएक भेलैक। नवविवाहिता पत्नी अपन कुकिंग टैलेंट देखएबा लेल अपसियाँत छलए प्रायः। आब तँ बेचारे फरमाइश करबाक सहासो नहि करैत छथि किछु। समय सभदिन एकरंग ककरो रहए जे हिनकर रहितनि। खैर जे-से।

दुनू बौआक नेनपन सँ जुड़ल असंख्य खिस्सा सभ सेहो मोन पड़ैत रहैए। एक सँ एक कथानक सभ अछि, बौआ सभ सँ जुड़ल। ओना एक संग बहुत रास कथानक दिमाग मे घूमब सेहो कन्फ्यूजनेक स्थिति उत्पन्न करैत छैक सेहो तँ बुझले होएत सभ कें। तखन दिमाग दोसर दिशि दौड़ाओल। एमहर तीन-चारि सालक भीतर किछु तीर्थयात्रा सभ संपन्न कएलहुँ अछि हम सभ। वाराणसी, सोमनाथ, द्वारकाधाम, नागेश्वर, त्र्यंबकेश्वर, भीमाशंकर, बैद्यनाथ धामक संग कोलकाताक कालीघाट, दक्षिणेश्वर काली मंदिर इत्यादि। मुदा तीर्थ यात्रा सभ पर किछु लिखब तँ ओ संस्मरण वा यात्रा वृत्तान्त रूप मे लिखि सकैत छी, से सोचि ओहो कथानक सभ 'पास' नहि भ' सकल।

तकर बाद मोन पड़ल बड़का बौआक समन्वय रेसिडेंसी, गाँधीनगर मे लेल डेरा मे बिताओल ओ दू मास। बड़ आनन्ददायक यात्रा छलए ओ समय। बिहार, झारखंड, बंगाल, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर आ दिल्ली धरिक यात्रा तँ कएल छलए मुदा गुजरात भ्रमण बाकीए छलए। नीक अनुभव रहल। गुजरात यात्रा पर सेहो असंख्य कथानक मोन मे नाचैत रहल। असंख्य कथानक मे फेर ओएह समस्या...कोन 'बेस्ट' रहत से तय करब कठिनाह भ' जाइत छैक।

गाँधीनगर यात्राक क्रम मे तँ एकटा बड़ दमदार भावनात्मक 'प्लॉट' सेहो भेटल। दिमाग मे 'सेट' छलए बहुत दिन धरि। मोने-मोन संक्षेप मे ओ खिस्सा टाइप सेहो कएल राखल रहल हृदयक कोनो कोन मे। तखने सँ जखन ओहिठाम सँ घुरि क' आएल छलहुँ पटना। असल मे गाँधीनगर (गुजरात) प्रवासक क्रम मे एक टा पाँच बरखक नेना कें हमरा सँ ततेक अटैचमेंट भ' गेल छलैक, जेना लागए पूर्व जन्मक कोनो कनेक्शन होइक ओहि नेनाक, हमरा संग। शुरु मे हम कनि इग्नोर करबाक प्रयास करी, मुदा शनैः शनैः हमरो ओतबे अटैचमेंट भ' गेल ओकरा प्रति। सोसाइटी मे कखनो भोर-साँझ टहलबा लेल उतरितहुँ निचाँ, आ कि ओ कतहु सँ, खिड़की वा बालकोनी सँ देखि लैत छलए आ छनहि मे संग लागि जाइत।

ओकर 'अटैचमेन्ट' एहि हद धरि छलैक, जे माए बाप कें स्कूल सँ आबैत-जाइत काल परेशान क' दैत छलैक हमरा सँ भेंट करैत ल' जाए लेल। ओ सभ चौथा

फ्लोर पर रहैत छलए आ हमसभ फर्स्ट फ्लोर पर। कतहु आबैत जाइत काल लिफ्ट मे ''एक'' जरूर दबाबैत ओ नेना। भले ही ओहिलेल माए-बाप सँ ओकरा डाँट सुनए पड़ैक। बस ''एक'' पर लिफ्ट खुजितइ, एक बेर हमरा हुलकि क' (केबाड़ खूजल रहल तँ) देखि लैत छलए, हँसि लैत छलए आ दौगल भागि जाइत, लिफ्ट मे ठाढ़ माए-बाप लग। केबाड़ बंद देखए, तँ खटखटा क' भेंट करए।

एक दिन हमरा सोझाँ अपन तरहत्थी पसारि क' कहलक ''अपना मोबाइल नम्बर लिख दीजिए। देखिए हम अपना नम्बर लिखवाकर लाए हैं मम्मी से।'' ठीके ओकर हाथ पर एकटा मोबाइल नम्बर लिखल छलैक। मुदा तखन हम ने ओ नम्बर नोट केलहुँ आ ने अपन नम्बर लिखलियैक ओकर तरहत्थी पर। कहि देलियैक, ''हम तुम्हारी मम्मी को दे देंगे अपना मोबाइल नम्बर।''

कहियो अपन किताब कॉपी आनि क' देखाबैत, अपन बनाएल ड्राइंग देखाबैत। स्वाभाविके हमरो ओहिना सिनेह जुड़ैत चलि गेल।

सोचैत छी, जँ ओहि नेनाक बएस दसो बरख बेसी रहितैक, मतलब पनरहो बरखक किशोर रहैत ओ, तँ हमरा मोन मे डर पैसि जाइत। अपना संग हमरो बदनाम करैत। समाजक लोक एकटा स्त्री आ एकटा पुरुषक (भले ही ओ किशोर हुअए वा वयस्क हुअए) बीच सिनेह भरल संबंध देखि 'उल्टा' मतलब निकालबे टा करत। ई केहन विडंबना!

हमसभ पहिने एकटा जीव छी (स्त्री-पुरुष सँ पहिने) ने! आ सभ सिनेहक भूखल सेहो। की हमसभ, संसारक समस्त प्राणी, एक दोसराक संग स्वच्छंद रूपें प्रेमक आदान-प्रदान करबाक अधिकारी नहि छी? प्रेममय व्यवहार राखबा मे एतेक डर किएक? सामाजिक-संरचना एहन किएक अछि आखिर?

एहि तरहक असंख्य प्रश्न मोन मे उमड़ैत-घुमड़ैत रहल कइअक दिन धरि, जखन गाँधीनगर सँ पटना घूरल छलहुँ हम। मुदा एहि सभ तरहक चिंतन-संबधी कथानक पर कथा लिखबा मे सेहो एकटा समस्या बुझना गेल। लोक कें डाउट भ' सकैत छनि जे आखिर स्त्री-पुरुषक बीच केर 'अटैचमेन्ट' पर एतेक गहन चिंतन आ एहि विडम्बना सँ एतेक व्यथित किएक छथि रचनाकार...किछु तँ बात जरूर छैक...। लोक एहन-ओहन किछु नहि सोचथि तैं इहो कथानक 'डम्प' क' देल गेल तत्काल।

आब एकमात्र विकल्प छलए काल्पनिक कथानक पर फोकस करब। मुदा कल्पना-शक्ति तेहन तीक्ष्ण नहि अछि हमर, से बुझबा मे हमरा भाङठ नहि छलए।

तखन अनायास मोन पड़ल बस-ट्रेन सँ यात्रा करैत काल अगल-बगल वा सोझाँ बैसनिहारि सभ संगे घुलबा-मिलबाक अपन लुतुक। जाहिलेल नेनपन मे माए

खिसिआइत रहैत छलीह, ''की सभ कें टोकैत रहैत छिहीं...कोन काज छलौ हेम-क्षेम बढ़ेबाक...?''

आ तहिना विवाहोपरान्त पतिदेव फज्झति करथि, ''रस्ता-पेरा मे चुप्पे चाप रहबाक चाही...कथी लब-लब करैत रहैत छी...कहाँ उतरना है...कहाँ की रहनेवाली हैं...?'' आ जखन सँ हाथे-हाथ मोबाइलक समय आबि गेल, तखन सँ तँ कतेको सहयात्री संग मोबाइल नम्बरक आदान-प्रदान सेहो होमए लागल हमर। घरबैया बिगड़थि तँ बिगड़थि। हम सुधरए बाली नहि। ओ कहबी छैक ने ...

चालि प्रकृति बेमाए...तीनू संगे जाए।

तँ सएह किछु सहयात्रीक खिस्सा मोन पड़ल आ तकरा मोबाइल मे टिपैत गेलहुँ। एहि तरहें भिन्न भिन्न प्लॉट पर दस-बारह टा कथा लिखा गेल छलए हमर। मोन मे छलए, जे पनरह गोट कथा इकट्ठा हुअए तँ कथा-संग्रह लेल कोनो प्रकाशक सँ गप्प करब।

एही क्रम मे एक दिन एकटा पुरुष मित्र कें (इएह फेसबुकिए बला मित्रता एक-दोसराक पोस्ट सँ प्रभावित होइत मोबाइल नम्बरक आदान-प्रदान होमए बला मित्रता) कहलियनि, ''यौ... नवीन जी, एकटा भरिगर सन पुरुखाही प्लॉट दिय' ने...। अपन वर्क प्लेस सँ संबंधित कोनो खिस्सा कहू न'...। जाहि पर एकटा जबरदस्त कथा बूनल जा सकए...''

ओ मखौलिया स्वभावक लोक। ठट्ठा करैत कहलनि, ''कए कट्ठाक प्लॉट चाही मैम?''

''ओफ्फोह... सीरियसली लेबैक कहियो अहाँ हमर बात कें...? अरे...हमरा अपन आस-पास सभटा मौगियाहिए प्लॉट भेटैत अछि। अहाँ देश-विदेश घूमल-फीरल छी। सोचलहुँ अहाँ लग तँ असंख्य कथाक प्लॉट हेब्बे टा करत। अपने अहाँ कहियो लिखब नहि, हमरा बतबितहुँ...हम प्रयास करितहुँ।'' हम अनुनय विनय बला 'जोन' मे प्रवेश करैत कहलियनि।

आब ओहो गम्भीर भेलाह। माने हँसी ठट्ठा 'जोन' सँ बहरएलाह। कहलनि, ''मुदा एतेक दबाव किएक? कथाकार बनबाक... साहित्यकार बनबाक? साहित्य स्वतः स्फूर्त हेबाक चाही। लिखबाक लौल कएने केओ साहित्यकार नहि बनि सकैत अछि। लेखन-कला नैसर्गिक-कौलिक गुण होइत छैक। जकरा खूब पढ़ैत-पढ़ैत तरासल जा सकैत अछि। मुदा आइ काल्हि हरसट्ठे सभ जे बड़का साहित्यकार बनि जेबाक सौख पालि लैत अछि से नीक बात नहि। कारण सौखे केओ बनिए नहि सकैए महान साहित्यकार। आ नहि बनि सकत तँ कुंठाक शिकार होएत। अहाँ सँ ई उम्मीद नहि छलए। छोड़ू ई सौख। अपन नैसर्गिक गुण पर काज करू।''

नवीन जीक कहल बात दमगर लागल। इहो बात दिमाग मे 'सेट' भ' गेल। ठीके जखन अपना भीतर सँ किछु लिखबाक मेटेरियल बहराए, तखनहि लिखबाक चाही। चाहे ओ पद्य रूप मे आबए किंवा गद्य रूप मे।

नवीन जीक बातक प्रभाव ततेक जबरदस्त पड़ल जे आब हम निश्चिन्त सन भ' गेल छलहुँ। कथा लिखाएत, नहि लिखाएत तकर कोनो दबाव नहि रहि गेल शेष। अपन दिनचर्या माने भानस-भात, काज-राजक उपरान्त पलखति भेटितहि पोथी-पत्रिका पढ़ब आ सोशल मीडिया पर ताका-झाँकी करबा मे मगन रहए लगलहुँ।

कालक्रमेण दुनू बालक उच्च शिक्षा ग्रहण कएलाक उपरान्त मल्टीनेशनल कंपनी ज्वाइन कएलनि। अपन-अपन कर्मभूमि गाँधीनगर आ पुणे मे दुनू गोटे डेरा लैत गेलाह। ताही डेरा सभक निरीक्षण लेल बेरा-बेरी दुनू ठाम जेबाक अवसर आएल। गाँधीनगर सँ पहिनहि घूमि आएल छलहुँ। आब नम्बर छलए पुणे जेबाक। सेहो फ्लाइट सँ। विवाहक तीसम वर्षगाँठ मनएलाक बाद हवाइ यात्राक पहिल अवसर आएल छलए। स्वाभाविके उत्साहित छलहुँ। अत्यधिक उत्साहित। जाहि हवाइ जहाज कें सभदिन घरक छत वा बालकनी सँ गरदनि उठाए टकटकी लगाए देखैत रहलहुँ, ताहि हवाइ जहाज कें भीतर सँ देखब तँ उत्साहक कारण छलएहे। कतहु ने कतहु पुनः इच्छा जागृत भ' गेल छलए कथानकक खोज करबाक। मोने मोन आश्वस्त छलहुँ जे पहिल हवाइ यात्रा पर आधारित एकटा दमदार प्लॉट भेटबे टा करत।

बेस! एकहक टा दिन गानैत अन्ततः ओ तारीख आबिए गेल जखन भोरे सँ पतिदेव हल्ला मचाएब शुरु कएलनि ''हे...बारह बजे कोनो हालत मे निकलहि पड़त एयरपोर्ट लेल।'' बस स्टैंड आ रेलवे स्टेशनक जगह पर 'एयरपोर्ट' सूनब सुखद अनुभूति छल! एयरपोर्ट मे प्रवेश करितहि ठाम-ठाम पर एयर होस्टेस सभ द्वारा मुस्किया-मुस्किया अभिवादन करब, अपन विशिष्टताक (क्षणिक) बोध करबैत रहल। आ इहो सुखदे अनुभूति छल!

जेना-जेना आगाँक प्रक्रिया सभ होइत गेल, शनैः शनैः सभ किछु मशीनी बुझा पड़ल। एतए धरि जे मनुक्खक मुस्की पर्यन्त। सभ किछु आर्टिफिशियल। रोबोट सन यंत्रवत सभ अपन-अपन काज करैत। चेक-इन भेल। बोर्डिंग भेल। टेक-ऑफ भेल। मूक-बधिर स्टाइल मे एयर होस्टेस आपात काल लेल सेफ्टी संबंधी जनतब देलनि। तत्पश्चात ट्रॉली गुड़काबैत चाह/कॉफी-जलपान द' गेलीह। बटन दबा-दबा क' एयर होस्टेस सँ पानिक डिमांड कएल। दू गोट एयर होस्टेस गार्बेज कलेक्शन

लेल अएलीह। समय-समय पर किछु किछु अनाउंसमेंट होइत रहल। मौसम खराब होएबाक, टर्बुलेंस संबंधी।

रेल-यात्रा आ रोडवेज सँ कएल यात्रा बेर-बेर मोन पड़ैत रहल।

दिमाग मे एक्कहि टा बात अटकि गेल छलए किछु काल लेल। नौ दुनी अठारह हजार टाका खर्च क' आखिर की देखलहुँ?

टेक-ऑफ आ लैंडिंग काल उँचाइ पर सँ धरतीक बाट-घाट-नदी-पहाड़-घर-दुआर देखब मात्र हर्षित कएलक। बाकी तँ बस मनुक्खक आविष्कार कएल एकटा बड़का मशीनक भीतर प्लास्टिक केर गुड़िया सन एयर होस्टेस सभ देखलहुँ। जकरा भीतर चाभी ऐंठल छलैक जेना; मुस्किआइत सभ यात्री दिशि ताकबाक लेल। यात्रीसभ सेहो यन्त्रवत अपन-अपन स्थान पर स्थापित। भाव शून्य, जिज्ञासा शून्य मुख मण्डल सभ नजरि आएल। फ्लाइट पर चढ़ल छी, हरसट्टे किएक ककरो टोकब, एहन 'माइंडसेट' हमर बनल नहि छलए एखन धरि। तैं हमरा ई सभ अनसोहाँत सन लागि रहल छलए। मनुक्ख छी, मनुक्ख सन व्यवहार करी ने...!

मनुक्ख, मनुक्ख कें देखि हँसए नहि, बाजए नहि एहनो कतहु मनुक्ख भेलए!

अन्ततोगत्वा सवा दू घंटा तूरक ढेरी सन व्याप्त बादल कें लाँघैत धरतीक स्पर्श कएलक विमान आ हम झटपट मोबाइल फ्लाइट मोड सँ हटाए नोटिफिकेशन देखब शुरु कएल।

सभ सँ पहिले जाहि मैसेज पर नजरि अटकि गेल, से छलए पटना सँ दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस मे भेटाएलि एकटा सहयात्री सुधा देवीक। ओ लिखने छलीह, ''आज पटना से दिल्ली जा रही हूँ। राजधानी एक्सप्रेस से। आपको miss कर रही हूँ।''

धरती पर पैर रोपितहि जेना मनुक्ख सँ सामना भेल। आ अन्ततः हमरा एकटा जबरदस्त कथानक भेटिए गेल!

पीहू

एक टा भव्य विवाह भवन। रंग-रंग केर खान-पीनक ओरिआओन। बरियाती सभ जलपान, चाह मे मगन। जयमाल कराओल जेतैक ताहि लेल कनिञा-ब'र कें चकरी जकाँ घूमैत स्टेज पर चढ़ाओल गेलैक। लाउडस्पीकर पर गीत बाजि रहल छल ''जेहने किशोरी मोरी तेहने किशोर हे...

विधना लगाओल जोड़ी केहन बेजोड़ हे...''

ब'र कनिञा एक दोसरा कें माला पहिरौलनि कि बड़ी जोर सँ फटक्काक अवाज भेल। हम चेहाए उठलहुँ। बड़ अजगुत लागल। ई की सभ सपनाए लगलहुँ हम? मोबाइल मे समय देखलहुँ तँ साढ़े तीन। एखन दू घंटा देरी छल फड़िच्छ होएबा मे। बाथरूम सँ आबि फेर सँ सुतबाक प्रयास करए लगलहुँ। मुदा एक बेर निन्न टुटि गेल तँ फेर सँ निन्न पड़ब कठिन हमरा लेल। धेआन चलि गेल ओहि बौक-बहीर बालिका पीहू पर। कोना ओकरा सँ सिनेह जुड़ि गेल रहए, से सभटा बितलाहा आँखिक सोझाँ आबए लागल।

जाड़क मास छल। भोरे-भोरे बालकोनी मे बैसलि रौद तापैत रही। आठ बजैत-बजैत देखलहुँ बगल बला चारि मंजिला घरक बाहर जे पोर्टिको सन बनल छैक ताहि मे सात-आठ बरख सँ ल' क' पनरह-सोलह बरख धरिक बहुत रास बच्चा सभक जुटान भेल अछि। एक्कहि रंगक परिधान। बुझबा मे आबि गेल जे ई सभ कोनो विद्यालयक विद्यार्थी अछि।

ई अपने टहलबाक लेल पार्क गेल छलथि। घर मे पैर धरितहि हम एक्कहि संग दू-तीन टा प्रश्न क' देलियनि—''इंजीनियर साहबक घरक बाहर बच्चा सभ कियैक जमा छनि? कोनो विद्यालय खुजलैक की? अहाँ कें तँ भेंट-घाँट होइत रहैत अछि हुनका सँ, किछु कहने नहि छलथि? बड्ड गहींर लोक छथि मुदा इंजीनियर साहब।''

''हँ-हँ...कहने तँ छलथि। मास दिन पहिनहि कहने छलथि। अगिला चौबट्टी पर ओ मूक-बधिर बच्चा सभक सरकारी स्कूल जे छैक ताहि मे किछु मरम्मतिक

काज करेबाक छै, तँ हिनका सँ साल भरिक लेल भाड़ा पर लेलकैक अछि विभाग। छओ मास सँ खालीए पड़ल छलनि, द' देलथिन निचाँक तीनू तल्ला।''

''ऐं यौ! अहाँ कें मास दिन सँ बूझल छलए आ हमरा किछु टेर नै लागल! अहूँ नहि कहलहुँ! केहेन विचित्र लोक छी! धुर जाउ...।''

''अहाँ कखन हमरा लग बैसैत छी थिर भ' क'? जे अहाँ कें हम कोनो बात कहब? जखन देखू तखन कथे कि निबंधे। ई कोन नबका रोग उपड़ि गेल अछि से नहि जानि!''

''आब छोड़ू ई सभ बहन्ना, हमरा जँ कतहु सँ कोनो नब समाचार सुनबा लेल भेटैत अछि तँ हम सभ सँ पहिने अहींकें सुनाबए लेल आतुर रहैत छी। हमरा सँ प्रेम रहत तखन ने हमरा किछु कहब।''

''अहाँ बात कें कतए सँ कतए ल' जाइत छी..., ओह... अहाँ सँ बात मे हम जीतब कहिओ...।''

हुनका संग बहस करैत बुझलहुँ जे पड़ोस मे आब किछु दिन मूक-बधिर विद्यालय चलत।

ओना तँ भोरका उखड़ाहा मे सभदिनाँ हमर बेसी समय बालकोनी मे बीतैत छल। मुदा जाहि दिन सँ ई मूक-बधिर विद्यालय बगल मे चलए लागल ताहि दिन सँ तँ जेना नियम बनि गेल छल जे जा धरि विद्यालय मे प्रार्थना संपन्न भेला उत्तर सभ विद्यार्थी अपन-अपन कक्षा मे नहि चलि जाइत, ताधरि हम बालकोनी सँ टस-सँ-मस नहि होएब। बालकोनी मे बैसलि अखबार पढ़ैत, बागवानी करैत, तरकारी कटैत वा आनो काजक संग मूक-बधिर विद्यार्थी सभक गतिविधि पर सेहो धेआन रहैत छल हमर। देखैत रहैत छलहुँ ओहि मूक-बधिर विद्यार्थी सभक विद्यालय आएब, अपना मे हाथ आ मुँह-कान चमकाबैत, सांकेतिक भाषा मे बतिआएब।

सभदिन देखैत-सुनैत एतबा बुझबा मे आबि गेल छल जे कोन बच्चा अपन बाप संग विद्यालय आबैत अछि आ ककरा माए छोड़य आबैत छैक। कोनो-कोनो संपन्न घरक बच्चा चरिचक्का सँ ड्राइवर संग आ कोनो कोनो बच्चाक संग तँ ड्राइवरक अलावे कोनो स्टाफ वा माए / बाप सेहो, तेना ओरिआ-पोरिआ क' विद्यालय अनैत छलैक, जेना जरैत दीप कें बिहारि सँ बचबैत होइक। सभ बच्चाक अपन-अपन भाग्य। हेंजक हेंज विद्यार्थी वैन, जीप, आदि मे सवार भ' अबैत छल। ओहि मूक-बधिर बच्चा सभक प्रत्येक गतिविधि कें देखैत हमर बाल मनोविज्ञानक प्रायोगिक ज्ञान बढ़ैत गेल।

ओहि मूक-बधिर विद्यालयक बच्चा सभ जेना मोन मे बसैत चलि गेल। इंजीनियर साहेबक जाहि घर मे ई मूक-बधिर विद्यालय चलि रहल छलए, ओहि घरक खिड़कीक सोझाँ हमर घरक खिड़की रहबाक कारण घरे बैसल ओहि बच्चा सभ संग हमहूँ रमए लगलहुँ। हम खिड़की लग जखन-जखन जाइ पाँच-सात टा बच्चा हमरा दिस बड़ सिनेह सँ ताकए, जे सभ खिड़की लग बैसैत छल। कक्षा मे शिक्षिका रहैक तैओ आ नहि रहैक तखन तँ कोनो बाते नहि।

ओहि बच्चा सभ मे सँ एक बच्चीक नजरि थोड़ेक बेसीए हमर खिड़की पर रहए लागल छलैक। ओकर उमेर मोसकिल सँ दस बरखक रहल हेतैक। कतेक बेर हम दुनू तरहत्थी जोड़ि वा कखनो बामा हाथक तरहत्थी कें कागत आ दाहिना हाथक औंठा आ तर्जनी सटाए कलमक संकेत करैत, लिखबाक संकेत करैत कहैत छलियैक 'पढ़ै...' 'लिखै...' मुदा कथी लेल ओ सुनत। ओकर धेआन पढ़ाइ दिस कम आ हमरा पर बेसी।

हमर खिड़की दिस टकटकी लगओने बैसलि ओ बालिका सदिखन पाछाँ घूमल रहए। ई क्रम कइअक दिन देखला उत्तर शिक्षिका खिड़की बन्न करबाक आदेश द' दैत छलथिन कोनो विद्यार्थी कें। कतेक बेर हम स्वयं हटि जाइ ओकरा सोझाँ सँ, ई सोचि जे ओकरा पढ़बा मे मोन नहि लागि रहल छैक हमरा कारणें।

दिनानुदिन हमरा आ ओहि बालिकाक मध्य सिनेहक डोरी ततेक सक्कत सँ बन्हाइत चलि गेल जे आइ धरि बन्हाएल अछि। आब ओकरा मोन होइक, जाधरि ओ कक्षा मे रहैत अछि ताधरि हम ओकर सोझाँ अपन खिड़की लग ठाढ़ि ओकरा सँ सांकेतिक भाषा मे बतिआइत रही। जखन-जखन कक्षा मे शिक्षिका नहि रहैक ओ खिड़कीक ग्रिल दुनू हाथें पकड़ि, ओहि मे अपन मुँह सटओने हमर घरक खिड़की दिस ताकैत रहैत छलि। ई स्थिति एहन सन लागए जेना जहल मे बन्न अपराधी बाहरक दुनिया देखि रहल होइक।

हम कतेको बेर आँखि गुड़रि क' डरेबाक प्रयास करी। पढ़बा-लिखबा लेल कहियैक। हाथ उठाए थापर मारबाक संकेत करियैक। मुदा, कथी लेल ओकरा पर कोनो प्रभाव पड़ितैक। भोरे स्कूल अबितहि कक्षा मे बस्ता राखब आ खिड़की मे सटि जाएब ओकर दिनचर्या भ' गेल छलैक।

हमर सेहो सएह हाल। विद्यालयक समय सारणी स्मरण रहैत छल सदिखन। भानस भात मे ओझराएल रहितहुँ तैयो दिमाग मे रहैत छल जे ''ओ'' कक्षा मे आबि गेल हेतीह। ''ओ'' खिड़की पकड़ि ठाढ़ हेतीह। ''ओ'' हमर प्रतीक्षा क' रहल हेतीह।

एक दिन भोरे स्कूल अबितहि सभ दिन जकाँ ओ बालिका खिड़की लग ठाढ़ छलि। जहाँ अपना खिड़की दिस हमरा आबैत देखलक प्रसन्नता सँ ओकर आँखि चमकि उठलैक। फेर ओ झटपट अपन बस्ता खोलि एकटा ड्राइंग कॉपी निकाललक। हाँइ-हाँइ पन्ना उनटबैत कॉपी दुनू हाथें पसारि खिड़की मे सटाए, हमरा देखबा लेल संकेत करैत बड़ गौरव सँ अपन छाती ठोकि संकेत कएलक जे हम बनओलहुँ। ओ ततेक उत्साहित छल कॉपी पसारने जे तुरन्त हम थोपड़ी पीटि आ औंठा-तर्जनीक माध्यम सँ 'बहुत नीक बनल छौक' से ओकरा सूचित क' देलियैक। फेर धेआन सँ ओकर बनाओल ड्राइंग देखलहुँ। ड्राइंग देखितहि जेना करेज फाटि गेल। मोन भेल जे खिड़की बाटे बहरा ओहि छौंड़ी कें करेजा मे साटि खूब दुलार मलार करी... मुदा से...तखन संभव नहि छलए।

ओकर बनाओल ड्राइंग झकझोरि देलक हमरा। ओकर बनाओल ड्राइंग मे बीच मे दू टा चोटी बनओने एकटा छौंड़ी जकर एक हाथ शर्ट पैंट पहिरने एक पुरुख पकड़ने आ दोसर हाथ साड़ी पहिरने एक महिला पकड़ने ठाढ़ छलि। पाछाँ बैकग्राउंड मे गाछ, बादल, पीअर रंग सँ रँगल सूर्यक गोला...आ किछु फूल-पात सँ सजाओल रस्ता बनाओल छल। माने बएसक हिसाबें बहुत नीक कलाकारीक प्रदर्शन कएल गेल छल आ भाव त' जे छल तकर वर्णने की कएल जाए।

ओहि ड्राइंग केर माध्यम सँ सभ किछु कहि देने छल ओ हमरा। ओकर ई सेहन्ता कहियो पूरा नहि भेल छलैक प्रायः जे माए-बाप दुनू दिस सँ हाथ पकड़ितैक आ कतहु ल' जइतैक। हमर जिज्ञासा आब ओकरा विषय मे सभ किछु पता लगओने बिनु शान्त होमएबला नहि छल।

बालकोनी सँ बैसल-बैसल आब विशेष रूप सँ एहि छौंड़ीक एबा-जेबाक गतिविधि पर धेआन देमए लगलहुँ हम। धेआन देबाक क्रम मे देखबा मे आएल जे सभदिन एक टा खूब चमचमाइत गाड़ी सँ ओ छौंड़ी आबए विद्यालय। आगाँ मात्र ड्राइवर आ पाछाँ ओ छौंड़ी आ साधारण वेश-भूषा मे एकटा जनानी रहैत छलैक जे उतरि क' हाथ पकड़ि ओकरा विद्यालयक गेटक भीतर प्रवेश करा दैक आ फेर गाड़ी मे बैसि आपस चलि जाइक।

बुझबा मे कोनो टा भांगठ नहि रहल जे ओ छौंड़ी सुखी-संपन्न परिवार सँ संबंध राखैत अछि आ ओ जनानी एकर परिचर्याक लेल राखल गेल छैक। विद्यालयक छुट्टी काल सेहो ओ गाड़ी निश्चित समय पर आबि क' ठाढ़ रहैत छलैक आ गाड़ी मे ओ जनानी सेहो।

जाहि दिन सँ ओ छौंड़ी ड्राइंग बनाए देखओलक ताहि दिन सँ हमरा उदबेग लागल छल ओकरा सँ भेंट करबा लेल। मुदा, कोनो संयोग नहि बनि रहल छल।

एक दिन हम सहास बटोरि निचाँ उतरलहुँ। पहिनहि बालकोनी सँ देखि नेने छलहुँ। ओकर गाड़ी आबि गेल छैक। एक रत्ती डर भेल जे जँ बेसी पूछताछ करए लगबै तँ की सोचत की नै सोचत! तथापि, ओहि छौंड़ीक माया तेहेन घेरने छल जे अछताइत-पछताइत ओकरा गाड़ी धरि पहुँचिए गेलहुँ। जनानी गाड़ी सँ बाहर निकलि छुट्टीक घंटीक प्रतीक्षा मे छलि।

हम ओकरा लग जाए अपन घर देखबैत बजलहुँ—''हम एहि मकान मे रहैत छी।''

ओ हाथ जोड़ि प्रणाम कएलक।

हमर छातीक धुकधुकी थोड़ेक कम भेल। पुछलियनि—''कोन मोहल्ला सँ अबैत छी?''

—''पटेलनगर।''

—''मालिक अहाँक की करैत छथि?''

—''मकान बनबाबैक काज।''

—''ओ! बिल्डर।''

—''तखनहि तँ एतेक पाइ बला छथि!''

—''एहि ठाम रहैत छथि?''

—''हँ। पूरे परिवार एहि ठाम रहैत छैक।''

—''आरो के सभ छनि घर मे?''

—''मम्मी, डैडी आ एक छोट भाइ।''

—''अच्छा! अइ बच्चीक नाम की छैक?''

—''पीहू...''

एहि तरहें शुरू कएल गेल गप्पक क्रम प्रायः दस मिनट धरि चलल हमरा आ ओहि छौंड़ीक परिचारिकाक मध्य। ताधरि पीहू विद्यालयक गेट सँ बहराएल। अपन गाड़ी लग हमरा ठाढ़ देखि खूब प्रसन्न होइत दुनू बाँहि पसारने दौगल आएल आ भरि पाँज पकड़ि लेलक। हमहूँ ओतबे आबेस सँ ओकरा पँजिअबैत माथ पर हाथ फेरैत, दुनू गाल सहलबैत दूटा डेयरीमिल्क चॉकलेट पीहूक हाथ मे राखि देल। ओ प्रसन्न भ' पुनः हमरा पँजिआ लेलक। परिचारिका ओकरा गाड़ी मे बैसबा लेल हड़बड़ाबए लगलैक मुदा ओ फेर हमरा भरि पाँज पकड़ि लेलक जेना घर जेबाक मोन नहि होइक। अन्ततः जखन हम ओकरा सांकेतिक भाषा मे बुझओलहुँ जे आब घर जाह, फेर काल्हि अएबह स्कूल तँ हम तोरा खिड़की बाटे देखबह, तखन ओ बैसलि गाड़ी मे।

भेंटघाँटक ई क्रम चलए लागल। ओ जनानी सेहो हमरा सँ खूब घुलि-मिलि गेल। ओकरा सँ भेल गप्प सँ ई बात स्पष्ट भेल जे पीहूक पिता एकरा अपन सन्तान रूप मे स्वीकार नहि क' सकलथि कहियो। एकरा अपन प्रतिष्ठा पर एक कलंक मानैत छथि। तैं पीहू कें कहियो कोनो पाबनि-तिहार वा कोनो तरहक सामाजिक कार्यक्रम मे अपना संग कतहु ल' क' जेबा सँ परहेज करैत छथि। हुनकर व्यवहार एहेन सन जेना हुनक सन्तान मात्र हुनकर बेटे टा। पत्नीक विवशता जे ओ पतिक कोपक भाजन बनि बेटीक प्रति ममताक प्रदर्शन कोना करथि तैं बेटी कें पूर्णरूपेण परिचारिकाक हाथ मे सुपुर्द क' ओहो निश्चिन्त भ' गेल छलीह।

मोन पड़ि गेलथि हमरा अपना गामक भट्ठीसेर बाली काकी। हुनकर दू बालक मे सँ एक टा बालक अक्षम, कनि दिमाग सँ सेहो, कनि हाथ पैर सँ सेहो। दरभंगा, पटना सँ ल' क' दिल्ली धरि ल' गेलथिन, डागदर-वैद्य, ओझा-गुनी, पूजा-पाठ, जे-जे लोक कहलकनि सभ कराए थाकि गेलथि, किछु सुधार देखबा मे अएलनि मुदा ततबा योग्य नहि भ' सकलनि बेटा कहियो जे बिनु माएक सहयोग कें अपन नित्य-क्रिया सँ सेहो निवृत्त भ' सकितनि। देह बढ़ल जाइक मुदा ज्ञान बुद्धि जस के तस। ओहि पितियाइनक चर्चा बड़ सुनने छलहुँ हम। लोक कहैए जे कहियो केओ हुनका ओहि बच्चा पर खिसियाइत कि खौंझाइत नहि देखलकनि। हुनकर जीवन ओहि बच्चाक लेल समर्पित छलनि। हुनकर जीवनक उद्देश्य ओहि बच्चाक सेवा करब छलनि जेना। दोसर स्वस्थ बेटा सँ बेसी ओहि बेटा लेल बेहाल, जे शारीरिक-मानसिक रूपें दुर्बल छलनि। ओ तँ जेना ओही अक्षम बेटाक लेल जीवित छलीह। भरि गामक लोकक आ सर कुटुम्बक आश्चर्यजक कोनो ठेकान नहि रहलैक जखन ई समाचार सुनलक लोक, जे ओहि अक्षम पुत्रक देहावसानक उपरान्त ओ जे सेज धेलनि से फेर नहिए उठलीह। मास दिनक भीतर माएक सेहो देहावसान भ' गेलनि। जेना हुनकर जीवित रहबाक उद्देश्य समाप्त भ' गेल होनि।

एक टा माए भट्ठीसेर बाली काकी छलथि आ एकटा माए पीहूक अछि। सोचि-सोचि व्यथित होइत रहलहुँ।

पीहूक मादे सभ बात बुझला उत्तर हमर व्यग्रता बढ़ैत चलि गेल। बीच-बीच मे भेंट क' अबियैक। किछु-किछु खेबाक वस्तु ल' जइयैक। ओकर प्रसन्नता देखि हमरा जे सुख भेटए से की कहू!

अखियासए लगलहुँ जे सोझाँ अबिते पीहू 'माँ...माँ' करैत हमरा पाँजर मे सटि जाइत। धीरे-धीरे हमरा लेल पीहू एकटा अनिवार्य आवश्यकता बनि गेल छल।

कैलेंडरक पन्ना उनटैत रहल। साल पुरैत-पुरैत मूक-बधिर विद्यालय अपन पुरनका जगह पर चलि गेल। तकर बाद पीहू सँ, एक सँ दू बेर भेट भेल हैत। हँ, खिड़की लग जाइ तँ कहियो काल पीहूक स्मरण भ' आबए। मुदा, आन कोनो खोज खबरि नै। समयक प्रवाह मे हमर दिनचर्या सेहो बदलि गेल।

आइ लगभग दस बर्खक बाद सपना मे पीहू आएल रहए आ सेहो कनिञाक रूप मे। रहि रहिक' बालकोनी मे जाए सड़क पर निहारी जे केम्हरो सँ पीहू अभरि जाए। भरि दिन मोन उचटल रहल। कोनो काज करबा मे मोन नहि लागल।

साँझ मे चाह पीबैत ओ टोकि देलनि—"की बात छैक! आइ भोरे सँ अहाँ परेशान सन लागि रहल छी? फेर कोनो कथाक प्लॉट तैयार भ' रहल अछि की?"

की कहिअनि से सोचि नहि पाबि रहल छलहुँ। फेर टोकलनि।

"पीहू मोन अछि।" चाहक कप रखैत बजलहुँ हम।

"हँ...वएह बौकी लड़की ने..?"

"हँ...आइ दस बर्खक बाद सपना मे पीहू कें देखलहुँ आ सेहो दुल्हिनक भेष मे..."

"तँ एहि मे परेशानीक कोन गप्प छैक...?"

"हमरा होइयै जे सपना, सपना नै रहए...ओ सच होअए।"

"तें हम कहैत रहै छी जे अहाँ बेकार मनोविज्ञान पढ़लहुँ।"

"मनोविज्ञान नहि पढ़ने रहितहुँ तँ राजनीति विज्ञान संग तालमेल कोना बैसितए?"

"अहाँ सँ कहिया जितलहुँ हम जे आइ जीति जाएब...!"

"मुदा हम निश्चित रूप सँ आइ जीतल महसूस क' रहल छी।"

"एहि अति आत्मविश्वासक कारण?"

"आजुक सपना मे ब'रक बापक कुर्सी पर अहाँ बैसल रही।"

पिता

''अटा...पटा...चटा...
बौआ कें पाँच टा बेटा...
एक टा गेलै दिल्ली, एक टा गेलै कलकत्ता...''

''ई की बूढ़-बुढ़ानुस बला फकरा पढ़ैत छी अपन सोन सन बेटा कें खेलाबए लेल। एकरा कनि अपग्रेड क' क' कहियौ ने..। देखियौ हम देखाबैत छी'' एतबा बाजैत बेटाक दहिना हाथ अपना बामा तरहत्थी पर राखैत दाहिना हाथें बेटाक तरहत्थी पर ताल ठोकैत शिवकुमार जी फकरा पढ़ब सुरुह केलनि''—''अटा...पटा. ..चटा...
बौआ कें पाँच टा बेटा ...
एक टा बनलै डाक्टर ...एक टा बनलै इंजीनियर...एक टा बनलै आइ ए एस ऑफिसर ...एक टा बनलै आइ पी एस...आ ई बनलै पायलट...''

—''ऊँ...ह! फकरा अपग्रेड केने की भ' जेतै?''

—''हेतै ई जे खेल खेल मे सेहो बच्चा कें पैघ-पैघ सपना देखबाक हिस्सक लागि जेतैक। पाँच टा बेटा कें सुयोग्य बनएबा लेल पहिने अपनहुँ तँ बड़का अफसर बनहहि पड़तनि बाउ कें।''

''एह! अहूँक विचित्र ताल अछि! तीन बरखक बच्चा कें एतेक सोचबाक शक्ति भ' जाइत छै से..?''

''खूब शक्ति रहैत छै। अहाँ नहि सुनने छी? कोमा मे जे कोनो मरीज रहैत छै, तँ लोक बुझैत छै ओ व्यक्ति बेहोश अछि मुदा ओहेन स्थिति मे सेहो ओकर अवचेतन मोन जाग्रत रहैत छै। ओ लोकक बात सुनैत अछि। बुझैत अछि। तहिना बच्चा कें लोक अबोध, अज्ञानी बुझैत छै मुदा कोनो मनुष्यक मस्तिष्कक नब्बे प्रतिशत अंश केर विकास ओकर जन्मक पाँच बरखक भीतर भ' जाइत छै।''

''ओह! छोड़ू ई ज्ञान विज्ञानक गप्प, अहाँ तँ हमरा भरि पोख दुलारो नहि करए दैत छी बौआ कें, आउ आउ हमर सोना बेटा...''बाजैत शीला बौआ कें कोरा

लेमए लेल दुनू हाथ पसारलीह। बौआ सेहो जेना बाप लग सँ पड़ाए लेल मुहें बओने छलाह। तुरन्त दुनू हाथ बढ़ाए माएक कोरा मे जाए लेल मचलए लगलाह आ माए लपकि क' कोरा मे लैत गाल, मुह, ललाट, सभ ठाम सिनेह सँ चूमैत आत्मविभोर होइत रहलीह।

माएक एतेक सिनेह लुटाएब शिवकुमार जी कें अनसोहाँत सन लगलनि "हे एक बात गिरह बान्हि लिय' सोनूक माए, अत्यधिक दुलार सँ बच्चा बिगड़ि जाइत छै।"

"हे भगवान! अहाँ एना किएक करैत छी हमर बैरिन जकाँ, जाउ न' अहाँ कें अबेर नहि होइए कार्यालय जेबा लेल। एगारह बाजि गेलै। जाउ स्नान करु ग' जल्दी सँ। हम झट् सनि भात चढ़बैत छी। जा धरि अहाँ स्नान ध्यान करब, भोजन तैयार रहत। फेर नहि कहब जे हमरे कारण विलम्ब भेल कार्यालय जेबा मे। ई अहाँक सभदिनाँक तमासा अछि, देरी करब अपने बैसि बैसि क' आ अबेर होइत रहत तँ कहब जे अहाँ बुते भानसे नहि होइत अछि समय पर।"

"अच्छा चलू, बड़का समय सँ चलए बाली बनैत छी। आठ बजे तँ ओछैन छोड़ैत छी आ एखन भाषण द' रहल छी। अहींक कारणें तँ अबेर होइते अछि कार्यालय जाए मे। एहि मे कोनो संशय?"

"अच्छा जाउ, जाउ, आब नहाउ जा क'..."

बच्चाक जन्मक तीन बरख मात्र भेल छलनि। आ घर मे एहि तरहक वाद-विवाद भोर-साँझ, जखन-तखन होएब सभदिनाँक खिस्सा भ' गेल छलनि शिवकुमार जी आ शीलाक मध्य।

शिवकुमार जीक लेल अंग्रेजी मे कहल जाए 'सेल्फ मेड मैन' तँ अतिशयोक्ति नहि हेतनि। एक टा साधारण सरकारी कर्मचारी पिताक छओ गोट सन्तान चारि पुत्री आ दू पुत्र मे सभ सँ छोट शिवकुमार जीक पालन पोषण बहुत अभाव मे भेल छलनि। आ तैं स्वाभाविक रूपें समय सँ पूर्वहि माने बाल्यकालहि सँ परिपक्व भ' गेल छलाह। गामक हाइ स्कूल सँ मैट्रिक पास केलनि। तदुपरान्त दरभंगाक सी एम साइंस कॉलेज सँ इंटरमीडिएट। सरस्वतीक कृपाक संग हुनक दृढ़ निश्चय, लगनशीलता एहेन जे मात्र स्वाध्यायक बलें आई आई टी क्रैक केलनि। कोनहुँ ट्यूशन-कोचिंग, किछु नहि। ओहि सँ पहिने हुनका गाम मे मात्र एक गोट युवक आई आई टी क्रैक केने छलनि। शिवकुमार जीक माथ पर पढ़बाक धुन एहेन असबार छलनि, जे कोनो पोथीक बेगरता होइन तँ पड़ोसक गाम धरि चलि जाइथ पैरे। कोनो संगी साथी, स'र कुटुम्ब सँ पोथी माँगि आबथि। ने रौद देखथि, ने बसात। कोनो हिसाब वा अन्य कोनो विषय बुझबा मे किछु कतहु भांगठ रहनि तँ ताहू लेल ओ कोनो

ब्यौंत क' कतहु पहुँचि जाइथ। एहेन सन क्रम जेना जा धरि जिज्ञासा शांत नहि होइतनि ता धरि उड़ी बीड़ी लागल रहितनि।

शिवकुमार जीक एतेक गुणी होएब हुनकर पुत्र सोनूक लेल अभिशाप बनि गेलनि, सएह कहबाक चाही। पुत्र कें अपना सँ बेसी योग्य बनाबी से शिवकुमार जीक मात्र सपना नहि, पुत्रक बढ़ैत बएसक संग एक टा जिद्दक रूप ल' लेलकनि। आ विडम्बना ई जे हुनका एहि बातक एक पाइ ज्ञान नहि जे हुनकर ई जिद्द हुनकर बालकक मोन मे पठन-पाठनक प्रति आ विशेष रूप सँ गणित विषयक प्रति एकटा अदृश्य भय उत्पन्न केने जा रहल छनि।

समयक प्रवाह मे बहैत नान्हि टा सोनू सोलह बरखक भ' गेलाह। आइ ओहि बालकक दसवीं बोर्ड परीक्षाक परिणाम घोषित होमए बला छलनि। साढ़े तीन बरखक होइतहिं शहरक सभ सँ नामी अंग्रेजी माध्यमक विद्यालय मे नामांकन कराओल गेल छलनि बाउ कें। शिवकुमार जी अपन सभदिनाँक समय पर कार्यालय लेल निकलि गेल छलथि। घर मे सोनू, माए शीला आ छोट बहीन बबली, जनिकर एखन गर्मी छुट्टी चलि रहल छलनि, उपस्थित छलथि। एक दिन पहिनहि समाचार आबि गेल छलैक जे काल्हि दसवीं बोर्ड केर परिणाम घोषित हेतैक नेट पर। सोनू सबेरे सँ बेर-बेर लैपटॉप मे साइट खोलि क' देखथि। माए बेर-बेर बौआ लग आबि पुछथिन, आएल परिणाम?

अन्ततः तीन बजेक लगीच परिणाम आएल साइट पर।

''मम्मा...आबि गेलै...'' माए कें सोर करैत सोनूक स्वर मे उत्साह भरल छलनि। दौड़ल एलीह दोसर कोठरी सँ। पाछाँ लागलि बबली सेहो एलीह। सभ लैपटॉपक सोझाँ आसन जमओलनि। परिणाम देखि मोन प्रसन्न तँ नहि भेलनि माए कें तथापि सोनूक सोझाँ आह्लादित हेबाक नाटक केलनि। बौआ कें बुझओलनि, एहि बेर जे भेल से भेल, आगाँ एहि सँ नीक करब ताहि लेल दृढसंकल्प क' लिय'।''

''बबली जाउ फ्रिज मे राखल अछि मधुर, से आनि क' खाइ जाउ सभ गोटे।''

''अहाँ मधुर आनए कहैत छियनि, डैडी भरिसक छौंकी सँ मारताह'' सोनू मुह लटकओने बजलाह।

''मोन छोट नहि करी बाउ, हुनका हम मारए देबनि से ... बड्ड मेहनति केने छलहुँ अहाँ आ ताहि अनुरूपें परिणाम आएल अछि। प्री बोर्ड सँ तेरह प्रतिशत बेसी अंक आएल अछि। ई प्रसन्नताक गप्प नहि की? हम बुझेबनि डैडी कें।''

माए बेटाक वार्तालाप चलिए रहल छलनि, तखने मोबाइल बजलनि शीलाक। शिवकुमार जीक फोन आबि रहल छलनि। तीनू गोटे एक दोसराक मुह ताकए लागल। सभ जेना डरे सकदम्म! रिसीव केलीह शीला ''हँ हँ आबि गेलै परिणाम। देखलियै हम सभ। बहुत नीक केलनि बौआ। उमेद सँ नीक नंबर अनलनि। हम बड़ प्रसन्न छी।''

''अहाँ कें कोन गप्प! अहाँ कें तँ आँखि पर ममताक पट्टी बान्हल रहैए सदिखन। अहाँ कें अपन बौआ मे किछु अवगुण देखाएल कहियो। कतेक नंबर छनि से तँ कहू।'' स्पीकर पर चलि रहल वार्तालाप सोनू आ बबली सेहो सुनि रहल छल।

''आउ न' साँझ मे घर तँ अपने आँखिए देखि लेब। फोन पर कतेक कहब।''

''बुझा गेल! अहाँ फोन पर कहब की ... दुलारे तँ माथ पर चढ़ओने रहैत छी बौआ कें।''

''ठीक छै, हम राखैत छी फोन'' कहैत शीला फोन काटि तत्काल तँ जान बचओलथिन सोनूक मुदा सभ आतंकित सन मुखमुद्रा बनओने छल। ''साँझ मे की हैत से नहि जानि'' एहेन सन भाव सभक मुखमण्डल पर।

साँझक सात बाजि क' चालीस मिनट पर कॉल बेल बाजल। बबली गेलीह केबाड़ खोलबा लेल। पिता घर मे प्रवेश केलथिन ता केबाड़ पकड़नहि ठाढ़ रहलीह। फेर केबाड़ बन्न क' भीतर जाए पढ़ए लेल बैसि गेलीह।

शिवकुमार जी कपड़ा बदलि, हाथ पैर धो सुभ्यस्त भेलाह आ पुत्र सोनूक सोझाँ बैसि रहलाह। सोनू अपन कक्षक ओछैन पर पालथी मारि लैपटॉप मे ओझराएल छलाह। पिता सोझाँ आबि क' बैसि गेलथिन तँ कनेक सकपकाएल सन भ' गेलाह सोनू।

''सी बी एस सी बोर्ड बला साइट खोलू तँ कनि'' पिताक आदेश छलनि।

शिवकुमार जीक छवि अपन घर मे एहेन छलनि जे धिया पूता सँ ल' क' पत्नी धरि, सभ हुनका सोझाँ सकदम्म।

पिताक अनुपस्थिति मे तीनू गोटें संग बैसि कखनो काल टी वी देखि लैथि, कखनो लूडो, कैरम, अन्ताक्षरी सन खेल सेहो खेला लैथि। माने तीनू एकदम संगी सन, संग मे समय बिताबथि अवकाशक समय मे।

मुदा जहाँ पिताक गाड़ीक आवाज सुनितथि, बबली, सोनू, शीला, केओ, आ कि झट् सनि टी वी बन्न, खेलक उपकरण सभ अपन ठाम पर। धिया पूता अपन अपन पोथी पतरा ल' बैसि जाइथ आ शीला हुनकर सभक मास्टरनी बनबाक

नाटक खूब नीक जकाँ करथि। एतेक नीक जकाँ जे शिवकुमार जी कें लागनि, ई सभ बड़ीकाल सँ पठन पाठन मे लागल छलए।

पिताक आदेशक पालन करैत सोनू साइट खोलि अपन रॉल नंबर निकालैत परीक्षाक परिणाम देखाबए लगलाह।

अपना सोझाँ लैपटॉप राखि एक-हक विषयक नंबर देखैत बेटा कें अपमानित करबामे कोनो टा कसरि नहि छोड़लनि ''ई की अंक अनलहुँ अछि? अड़सठि प्रतिशत। एहि अंकक संग की भविष्य बनाएब। एतेक सुख सुविधा...जे पोथी जखन चाही तखन कीनि क' आनि देलियनि। एक्कहि टा गणित पढ़बालेल चारि टा लेखकक पोथी आनि देलियनि कीनि क'। मुदा बूझि पड़ैए सभ टा पोथी मात्र अलमीराक शोभा बढ़बैत रहल। पचपन अंक गणित मे अनलनि ...'' पत्नी कें क्रोध भरल दृष्टिएँ देखैत आगाँ धाराप्रवाह बाजैत चलि गेलाह ''हम ओहि जमाना मे बिहार बोर्ड सँ चौरासी प्रतिशत अंक सँ उत्तीर्ण भेल छलहुँ, बूझल अछि ने? ई सभटा अहींक किरदानी अछि। केहनो परीक्षाफल एलनि, हुनका माथ पर चढ़ाबैत चलि गेलहुँ। अहाँक एक्कहि सुर...अगिला बेर नीक अंक आनि क' देखओताह बौआ। देखा देलथि ने नीक अंक आनि क'?''

आब शीला सुनैत सुनैत अकच्छ भ' गेल छलीह बिफरि पड़लीह ''तँ की करितहुँ, अहीं जकाँ बौआ कें मानसिक प्रताड़ना दैत रहितहुँ? जेना अहाँ करैत आएल छी? पहिली-दूसरी कक्षाक अंक देखि सेहो अहाँक एहने प्रतिक्रिया रहल सभदिन.. जेना आजुक अछि। अहाँ द्वारा कहल एक-हक टा शब्द मोन अछि हमरा। अहाँक कहब जे ''ई की अंक अनलहुँ, एहि अंकक भरोसे अहाँ डॉक्टर, इंजीनियर बनि जाएब? हमर ड्राइवरक बेटा टॉप करैत अछि कक्षा मे आ जकरा एतेक सुख सुविधा देने छी से नाम बुरा रहल अछि।'' एक्कहु बेर अहाँ सोचलहुँ जे एहेन एहेन गप्पक कतेक नकारात्मक प्रभाव पड़तनि बौआक मोन पर।''

''अच्छा चलू बेसी लेक्चर नहि झाड़ू। किछु बुझाइत अछि अहाँ कें? कतेक पाइ फेकि रहल छी हम बौआक शिक्षाक नाम पर। जँ मोन लगा क' पढ़ितथि तँ सभ सार्थक। एना तँ सभ बेकार जा रहलए, तेहेन लागैए।''

''पाइ फेकि रहल छी तँ ककर उपकार क' रहल छियै? अपन सन्तान पर बाप नहि पाइ खर्च करतै तँ के करतै?''

''हे हमर तामस नहि बढ़ाउ, ओल सन बोल बाजि क'...। एक तँ बेटा एहेन अंक सँ पास केलनि अछि जे केओ पूछत तँ की कहबै, से नहि फुरा रहल अछि। आ ताहि पर सँ अहाँ भिन्ने फाँड़ कसने छी।''

‘‘हुँह ...हम फाँड़ कसने छी वा अहाँ? हम तीनू गोटें तँ सोनूक परीक्षाक परिणाम देखि मुह मधुरेलहुँ। ‘मात्र टॉपरे विद्यार्थी जीवन मे सफल होइत छै’, एहि मानसिकता सँ बाहर निकलबाक बेगरता अछि अहाँ कें।’’

‘‘अहाँक एहेन एहेन बात सुनि बौआ अपन पढ़ाइक लेल गंभीर नहि भ’ पाबैत छथि, से अहाँ कें बुझबा मे आबैए?’’

एतेक घमासान फेर दू बरखक उपरान्त बारहवींक बोर्ड परीक्षाक परिणाम एला पर भेलनि दुनू प्राणी मे। बारहवीं मे तँ छओ प्रतिशत घटिए गेल छलनि सोनूक अंक। मात्र बासठि प्रतिशत अंक आनि उत्तीर्ण भेल छलाह सोनू। अन्ततः शिवकुमार जी हारि मानि लेलथि। विश्वास भ’ गेलनि जे बेटा अपन प्रतिभा सँ किछु नहि क’ सकताह। सोनूक समवयस्क सभ बच्चा किछु ने किछु उपलब्धि प्राप्त केलनि आ बाहर पढ़बालेल चलि गेलाह।

आब शिवकुमार जी दोसर रस्ता चुनलथि। अपन चारू गोटाक टिकट लेलथि बैंगलोर जेबाक। पत्नी शीला कें हाथ मे टिकट राखैत सूचित केलथिन ”हम सभ बारह जुलाई क’ बैंगलोर चलि रहल छी।’’

‘‘बैंगलोर? से किएक?’’पत्नीक अचंभित होएब स्वाभाविक।

‘‘बस चलबाक छै। किएक, कोना, से सभ पूछि दिमाग नहि खराप करू हमर।’’

‘‘चलू बढ़ियाँ छै! बैंगलोर जाएब तँ एक दिन लेल तिरुपति सेहो चलि जाएब। बालाजीक दर्शन सेहो क’ लेब। कतेक दिन सँ नेआर भ’ रहल छल तिरुपति जेबाक।’’

‘‘ठीक छै चलब’’ बिना कोनो आपत्ति कें पतिक स्वीकृति भेटब अचम्भित केलकनि शीला कें।

निश्चित तिथि पर प्रस्थान करैत गेलाह बैंगलोर लेल सभ गोटें। पहिनहि फोन पर सभ टा बात तय क’ आश्वस्त भ’ गेल छलथि शिवकुमार जी। बैंगलोर पहुँचितहि प्रात भेने सोनू कें संग ल’ विदा भेलथि। दुनू माइ-धी होटले मे रहलथि।

पत्नीक तँ कोनो गप्पे नहि, सोनू सँ सेहो एक बेर विचार नहि पुछलथिन आ सोझे इंजीनियरिंग कॉलेज मे नामांकन कराबए लेल ल’ गेलथिन। नामांकन करओलाक उपरान्त होटल आबि पत्नी कें सूचित केलथिन।

‘‘आब किछु बाजिए क’ की होएत‘‘ से सोचि शीला चुप्पे रहि गेलीह।

प्रातःकाल सभ तिरुपति बालाजी भ्रमण-दर्शन पर निकललथि आ तकरा प्रात घ’र आपस।

शिवकुमार जी सोनूक नामांकन कराए जेना जीतल सन अनुभव क' रहल छलाह। पाइक बलें बेटा कें कंप्यूटर इंजीनियर बना लेलहुँ हम, एहेन सन भाव। बीस दिनक उपरान्त फेर सँ दुनू बापूत बैंगलोर गेलाह। एहि बेर शिवकुमार जी सोनू कें कॉलेज पहुँचाबए लेल गेल छलथि।

देखैत देखैत छओ मास बीति गेल, पहिल सेमेस्टरक परीक्षा दए सोनू घर एलाह। छओ मास पर बौआ आएल छलनि आ सेहो मात्र पनरह दिनक छुट्टी मे, माए रंग रंगक पकवान बनाए खोआबए मे बेहाल। कॉलेज मे केहेन केहेन संगी साथी बनलए? कक्षा संपन्न भेला पर कोना समय बितबैत छी? एहेन एहेन प्रश्न पर सोनू किछु खुलि क' बाजनि नहि, से एक रत्ती माएक ध्यान गेलनि मुदा पनरह दिनक समय जेना चुटकी मे बीति गेलनि। लगले आपस जेबाक दिन आबि गेलनि।

''हे... हैए देखू सोनूक पहिल सेमेस्टरक परिणाम आएल अछि, हमरा मेल पर।'' कार्यालय सँ घुरितहिं शिवकुमार जी पत्नी कें सोर करैत बजलाह।

''अच्छा! तँ एना क्रोधें लह-लह किएक क' रहल छी?''

''क्रोध नहि करू तँ की करू? गणित मे बैक लागल छनि बाउकें।''

''तँ से कोनो बूझल नहि छल जे गणित हुनकर कमजोर छनि। एक बेर बौआ सँ वा हमरा सँ विचारो पुछने छलहुँ, बौआक नामांकन कराबैत काल?''

''अहाँ तँ बस हमरा सँ बहस करबाक मौका ताकैत रहैत छी।''

''तँ की करू?''

''कनि गप्प करियनु सोनू सँ, आगाँ मेहनति करताह? की सोचने छथि अपन जीवनक लेल।''

''सभ टा अपन सोचल नहि होइत छै जीवन मे। जकरा प्रारब्ध मे जे हेतै से भेटबे करतै। अहाँ बौआक पिता छी, भाग्यविधाता नहि से सदिखन मोन राखब।''

पाँच मासक बाद दोसर सेमेस्टरक परीक्षा संपन्न कए पुनः सोनू घ'र एलाह। एहिबेर एक मासक छुट्टी छलनि। बबलीक सेहो गर्मी छुट्टी। दुनू भाए-बहीन आ शीला संग मे बैसैथि उठथि, गप्प शप्प करथि, लूडो, कैरम खेलाथि, अन्ताक्षरी खेलाथि।

एहि बेरक छुट्टी मे सोनू कें टी वी देखबाक कनि व्यसन सन बुझेलनि माए कें। ताहू मे गायन सँ जुड़ल सुप्रसिद्ध कार्यक्रम ''सुर-संसार'' देखबालेल कनि बेसीए बेहाल। एक्कहु एपिसोड छूटए नहि तेहेन सन क्रम। एहि कार्यक्रमक तर्ज पर कहियोकाल दुनू भाए बहीन गीत-नादक पर्फॉर्मेंस देथि आ माए जज बनथि। एहि क्रम मे माएक धेआन गेलनि जे सोनू कें सुर-ताल पर पकड़ बहुत नीक छनि।

एहि कार्यक्रम मे देशक सभ क्षेत्र सँ प्रतिभागी अपन गायन प्रतिभाक प्रदर्शन क' अपना कें सिद्ध करबालेल एड़ी-चोटी एक कएने छल। देशक कोना कोना सँ नुकाएल प्रतिभा कें सोझाँ आनि अवसर देब, एहि कार्यक्रमक उद्देश्य। एहि सार्थक उद्देश्यक कारणें ई कार्यक्रम बहुत जल्दी बहुत बेसी लोकप्रिय भ' गेल छल। माए बहीन कें सेहो आब हिस्सक लागि गेल छलनि ''सुर-संसार''क सभ टा एपिसोड देखबाक। सभ कें एतेक मनोयोग सँ कार्यक्रमक आनन्द लैत देखथि, तँ शिवकुमार जी सेहो हाँटन-डाँटन करब छोड़ि देलाह। उन्टे कहियो काल आबि क' संगमे बैसियो जाइथ। सभ गोटे संग संग टी वी देखैत कनि सौहार्दपूर्ण वातावरण घरक बुझाए लगलनि आ से नीक लगलनि शिवकुमार जी कें। एहि कार्यक्रमक लाथें सभ कें टी वी देखबाक कनि छूट भेटि गेलनि।

छुट्टी समाप्त होइतहिं कॉलेज आपस गेलाह सोनू। मास दिन बीतल हेतनि कि सोनूक कॉलेजमे जेना उजाहि उठि गेल। ''सुर-संसार''क ऑडिशन होमएबला छलैक बैंगलोर मे। जकरा सुर तालक कोनो ज्ञान नहि सेहो सभ रजिस्ट्रेशन करएबालेल आफन तोड़बापर उतारू भेल छल। सोनूक तँ नाम 'सोनू निगम' राखि देने छलनि हुनकर मित्रमंडली, जखन वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम मे सोनूक प्रस्तुति सँ हुनक सहपाठी सँ ल' क' सीनियर विद्यार्थी आ सभ प्रोफेसर लोकनि पर्यन्त मन्त्रमुग्ध भ' गेल छलाह।

''अरे ओए 'सोनू निगम' तों नहि रजिस्ट्रेशन करओलह 'सुर-संसार' लेल?''

''ना...ओहिमे सेलेक्शन होएब दालि-भातक कौर नहि छै। बड्ड कठिन छै। हम कोनो कतहु सँ संगीतक प्रशिक्षण लेने छी से? ओ तँ ओहिना किछु गुनगुना लैत छी।''

''तोरा कठिन बुझाइत छह आ भेड़िया धसान जा रहलैए। रजिस्ट्रेशन करओने जा रहलैए। प्रयास करबा मे कोन हर्ज?''

संगी-साथीक बात राखैत सोनू सेहो रजिस्ट्रेशन करओलनि। ऑडिशन लेल चयनित भेलाह। सोनूक गायन मे किछु बात तँ अवश्य छलनि। बिनु कोनो साज बाजक भेल ऑडिशन मे ततेक नीक प्रस्तुति भेलनि सोनूक, जे जज सभ मंत्रमुग्ध भ' ठामहि अगिला राउंड लेल चुनि लेलथिन। जखन ''सुर-संसार''क नबका सीजन केर टेलिकास्ट होएबाक घोषणा भेलैक तखन माएकें फोन क' सोनू मोन पाड़ि देने छलाह ''आइ राति नओ बजे सँ आओत ''सुर-संसार'', बूझल अछि ने?''

कार्यक्रमक प्रसारण नओ बजे हेबाक रहैत मुदा पाँच-दस मिनट पहिनहि बबली, माएक संग टेलिविजनक सोझाँ आसन ग्रहण क' लैत छलीह। शिवकुमार जी कें अपना गीत संगीत सुनबामे तेहेन कोनो विशेष रुचि नहि। तँ ओ कार्यालय

सँ आबि दोसर कोठरीमे आराम करब बेसी पसिन करथि। माए बेटीक बतहपनी देखि किछु बाजब सेहो उचित नहि लागैत छलनि।

चारिम एपिसोडक टेलिकास्ट भ' रहल छलैक। माए बेटी बैसल देखि रहल छलीह अपन पसिनक संगीतमय कार्यक्रम ''सुर-संसार''। अनायास बबली जोर सँ चिचिया उठलीह ''डैडी...''

दोसर कोठरी सँ शिवकुमार जी दौड़ल एलाह। देखैत छथि टेलिविजन स्क्रीन पर सोनू कें। मुह बओने देखैत रहि गेलाह, निश्शब्द! सोनूक पर्फोर्मेंसक उपरान्त जज लोकनिक प्रशंसा ओ प्रोत्साहन भरल बात सभ सुनि माएक करेज सूप सन होएब स्वाभाविक मुदा शिवकुमार जीक भाव भंगिमा विचित्र सन।

बेटा पर गौरवक भाव आ आत्मग्लानिक भाव ल'त उनार होइत रहलनि जेना।

जलमदिन

''अरे ए... शकुन्तला, कल्हे तनि जल्दी चल अइह'... परसू बौआक बर्थडे हेतै ने... याद छ' कि नै। तनि घर दुआर साफ सुथरा करे पड़तै ना...भूल मत जइह'...'' शकुन्तला घर सँ बहरा गेल छलि तखन एक तरहें जेना पाछाँ सँ खेहारैत कहने छलथिन सुषमा।

''ठीक हइ भाभी...'' कहैत शकुन्तला बड़का-बड़का डेग उठबैत गेट सँ बहरा गेलि। एकहडिया देह, आँचर डाँड़ मे खोंसने, निचाँ सँ घुट्ठी देखाइत, हहाएल फुफुआएल भाग-भाग करैत कहुना तीन घरक काज सम्हारि घरबलाक बाँहि पूरैत छलए शकुन्तला। ककरो सोझाँ आँचर ओड़ब आ कि अपन कपार पीटब शकुन्तला कें स्वीकार्य नहि छलैक। दुनू प्राणी मिलि अपना संग अपन बाल-बच्चाक कपार दुरुस्त करबा लेल जी-जान सँ तत्पर रहैत छलए।

शकुन्तला बाइस बरख सँ काज क' रहल छलि सुषमा घरक। बेटा अर्जुन छओए मासक छलै कोरा मे तखने सँ धेने अछि काज। सुषमाक बौआ आलोक केर फेरन फारन कपड़ा लत्ता, स्वेटर जैकेट सँ अर्जुन केर पालन पोषण मे बड़ सहूलियत भ' गेल छलैक ओकरा माए-बाप कें। आलोकक न'बे न'बे दामी कपड़ा सभ छोट होइन तँ अर्जुनमा कें भाग जागि जाइ। आलोक सँ दू-अढ़ाइ बरखक छोट छलए अर्जुनमा।

मात्र कपड़े लत्ताक सुख नहि छलैक अर्जुन कें। आलोकक स्कूल बैग, किताब-कॉपी सभ किछु काज आबैत छलैक ओकरा। सुषमा आ आदित्यक एकमात्र सन्तान आलोक। पिताक नाम आदित्य छलनि, तैं बालकक नाम राखल गेल ''आलोक''। आदित्यक आलोक सँ घर जगमग भ' गेल छलनि सुषमाक। बच्चा नामक अनुरूपें दैदीप्यमान मुख मण्डलक स्वामी छलाह।

अर्जुनमाक बाप मजदूरी क' भरिदिन मे चारि-पाँच सए टाका कमा लैत छलैक। ओहो तीसो दिन काज भेटबे करतै, से निश्चित नहिए छलैक। तखन मौगीक कमाइक असरा रहैत छलैक। मौगीक देह-दसा देखने केओ अनुमान नहि

लगा सकैत छलए जे एहन जँघगरि हेतैक से। तीन घर काज क' आबैक आ तखन फेर अपन आश्रमक काज-राज। दुनू प्राणी हिलि-मिलि गृहस्थीक गाड़ी बड़ सुगमता सँ खींचि रहल छल। संगहि छौंड़ा अर्जुन कें पढ़ाइयो रहल छलए। दू टा बेटी सेहो छलैक, जकर बिआह-दान क' क' निश्चिन्त भ' गेल छलए ओ दुनू प्राणी।

बाइस बरख सँ सुषमाक घर धएने छलए शकुन्तला, तकर पाछाँ कारण इएह टा जे ओकरा विश्वास छलैक, अर्जुनमाक जीवन बनि जेतैक सुषमाक सहृदयताक बदौलति। आरो बहुत घर कइअक बेर पकड़लक, छोड़लक, सभ घरक रंग-ताल देखलक-सुनलक। कत्तहु एहन लक्ष्मी स्वरूपा गृहलक्ष्मी नहि भेटलैक ओकरा। सभठाम जतेक पाइ भेटैक, ओहि सँ दुगुन्ना काज लेबाक मानसिकता देखाइ पड़लैक। झाड़ू-पोछा-बरतन लेल राखल जाइक आ तखन उपर सँ काज अढ़ा देब...''हे...तनि साग चुनि दए ने शकुन्तला...तनिए सुन लहसुन छीलि दए ने...'' अहिना पोल्हा-पोल्हा क' काज लेब आ जखन देबाक बेर आओत, तँ मुट्ठी तेहन बन्हा जाएत जे खुजबाक नाम नहि लेत।

सुषमाक बौआ आलोकक चौबीसम जन्मदिन छलनि एहि बेर। माए-बापक एकमात्र सन्तान आलोक लेल अंग्रेजीक कहावत कहल जा सकैत छलए, ''born with a silver spoon in your mouth'' माने ओहि बच्चाक मुह सँ खसबाक देरी रहैत छलैक, बस। जाहि बस्तु केर इच्छा व्यक्त कएलाह, क्षणहि मे उपलब्ध करा देबालेल माए-बाप अपसियाँत। अठारहम जन्मदिन पर सुषमा आ आदित्य, एकटा ''होंडा'' कंपनीक बाइक कीनि गिफ्ट कएने छलथिन आलोक बाबू कें। आब ओहि बाइक सँ मोन अघाएल सन भ' गेल छलनि बच्चाक। दोसर बाइक लेबाक इच्छा व्यक्त कएलनि एक दिन। माए-बाप दुनूक विचार भेलनि, एखन जन्मदिनक अवसर पर फोर व्हीलर गिफ्ट क' देल जाए। बाइक कहियो अनदिने कीनि देल जेतनि।

सएह करैत गेलाह।

जन्मदिन सँ दू मास पहिनहि स्कोडाक शो रूम जाइत गेलाह। तीन-चारि टा मॉडल केर बीच मोन अथ-उथ क' रहल छलनि दुनू बाप-पूतक। सुषमा तटस्थ छलीह। जे निर्णय लेबाक छलनि, से दुनू बाप-पूत कें लेबाक छलनि। कारक मॉडल, कलर, सभ तरहें पसिन पड़लनि ''स्कोडा स्लाविया'' गाड़ी आ सएह 'बुक' कएल गेल। डिलीवरी डेट ''बर्थडे''क दिन राखल गेल।

आलोकक जन्मदिनक पार्टी सानन्द संपन्न भेलनि। पाँच किलोक 'थ्री टीयर' केक, रंग-रंगक खेनाइ-पिनाइ केर इंतजाम, सभ अभ्यागत कें रिटर्न गिफ्टक इंतजाम, खूब दिलदारी सँ सभ किछु कएल गेल छलए आदित्य आ सुषमा द्वारा।

किएक नहि करितथि! लक्ष्मीक कृपा एहि घर पर आ घरक सदस्य सभ पर आइ सँ नहि पछिला दू पुश्त सँ भरपूर छलनि। आदित्य जीक बाबेक जमाओल बिजनेस छलनि, जे दिन दुगुना राति चौगुना बढ़ैत चलि गेलनि।

शकुन्तला सेहो सभ प्राणी, राति बारह बजे धरि रहल सुषमाक घर पर। जा धरि लोकसभ वापस चलि नहि गेलाह, ता धरि।

आलोकक जन्मदिनक छओ मासक बाद अर्जुनक जन्मदिन आबैत छलैक। सुषमा दस दिन पहिनहि ओकरा लेल शर्ट-पैंटक संग नब जूता सेहो कीनि क' ओकरा माए कें द' देने छलथिन। सुषमा अपने मोने ततेक देब-लेब करैत छलथिन जे शकुन्तला कें मुह खोलि किछु माँगैत धाख होइत छलैक। मुदा छौंड़ा अर्जुनमाक मोन डोलि गेल छलैक, आलोकक बाइक पर। आलोक लेल नबका फोर व्हीलर किना गेल छलनि, तँ हुनकर बाइक पड़ले रहैत छलनि। आ बाइक सेहो नब किनाइए जेतनि हुनका लेल, सेहो अर्जुनमा आ ओकर माए दुनू कें बुझले छलैक।

अर्जुनक जन्मदिन सँ चारि दिन पहिने, भोरे जखन आएल ओकर माए शकुन्तला काज करबालेल तँ देखलक सुषमा ओछाइने पर पड़ल छथि। हुनकर मोन कनि सुस्त छलनि।

''की हो गेल भाभी? पिठ्ठी ससारि देहम? लगले सुस्ती छू मन्तर हो जइतन इनकर'' वास्तव मे चिंता भ' गेलैक शकुन्तला कें।

''अरे नै नै...तों झाड़ू-ताड़ू लगाबए... हम कनि काल मे अपने फरहर भ' जाएब'' सुषमा अनेरे सेवा लेबालेल लालायित रहए बाली महिला नहि छलीह स्वभावतः।

मुदा शकुन्तला मानए बाली छलए थोड़बे ने...हाँइ-हाँइ छाबा सँ एड़ी धरि ससारब शुरु कएलकनि। ओना ओकर ई चालि सभदिनाँक छलैक, जहाँ पड़ल देखितनि कि जाँतब पीचब शुरु क' दितनि। मुदा ओहि दिन शकुन्तलाक मोन मे एकटा लोभ सेहो छलैक। असल मे जाहि दिन सँ अर्जुनमा अपन इच्छा व्यक्त कएने छलैक माए लग आलोकक बाइक लेल। माएक दिमाग मे सदिखन छलैक ओ बात मुदा अवसर भेटि नहि रहल छलैक ओकरा। मुह खोलि माँगबाक हिम्मत जुटाएब पहाड़ लागि रहल छलैक। सन्तानक खुशी लेल लोक विवश भ' जाइत अछि। किछुओ करबाक हुब्बा आबि जाइत छैक जेना...

अपन बात रखलक सुषमाक सोझाँ, ''भाभी एगो बात बोलेला चाहै हलियै हम...उ अर्जुनमा के नजर हइ बौआ बला बाइक पर...हम बड़ी जोर के डँटली छौंड़ा के...ई सब तँ अपने मन से एतना लेन-देन करते रह' हथिन...आब केतना

देथिन...तैयो उ छौंड़ा जिद्दी कइले हइ दस दिन से...तूँ एक बार बोल के तँ देख आंटी से...''

सुषमा चुपचाप सुनैत रहलीह। बीच मे टोक-टाक नहि कएलथिन।

—''ना होतै तो कुछ पैसे कटा क' देबै तँ दे देम भाभी...बड़ी मन हो गेल हइ छौंड़ा के...एक जग काम पकड़ले हइ उ...घर से दूर पड़इ हइ...बस मे कोंचा क' जाइ पड़ै हइ ओकरा...बाइक हो जइतइ तँ जाइ-आबै मे सुभीता हो जइतइ बचबा के...''

''ठीक छै...हम हिनका कहबनि'' बस एतबे बजलीह सुषमा।

रतुका भोजनक उपरान्त पति-पुत्रक संग बैसकीक दौरान सुषमा बाइक देबाक प्रस्ताव रखलीह दुनू बाप-पूतक सोझाँ।

''हे...बेसी दानी-दाता नहि बनल करु अहाँ...बौआक पहिरल कपड़ा बुझि लेलियै की अहाँ बाइक कें...आ कि पूड़ी-जिलेबी बुझि लेलियै? जे उठेलहुँ आ द' देलहुँ शकुन्तला कें। सत्तरि हजारक बाइक छनि बौआक...एना केना द' देबैक... अहाँ के किछु बुझाइए?...पाइ गाछ मे फड़ैत छै की?'' पति आदित्य लुलुआ लेलथिन एकदम सँ।

''सत्तरि हजारक रहौक कि अस्सी हजारक, सेकेंड हैंड बाइकक कोन मोल छै बजार मे...कोनो बेचब पुरना बाइक? पड़ले ने रहत गैरेज मे? नबका लिएतनि बौआ लेल तखन नबके पर ने चढ़ताह...ओहि छौंड़ा के काज आबि जेतैक... माएओक आत्मा जुड़ेतैक, बुझू हमर बात!''

बापक पक्ष लैत बेटा आलोक सेहो सुषमाक प्रपोजलक ऐसी-तैसी क' देलकनि, ''माँ...नबका बाइक लेब तैयो हम नै देबै अर्जुन के अपन बाइक।''

क्षण भरि लेल उलबुका गेलीह सुषमा। मुदा ओ मोने-मोन बाइक देबाक निर्णय ल' चुकल छलीह। आ आब चौलेंज छलनि कोना कन्विन्स करथि दुनू बाप-पूत कें।

अगिला दू दिन धरि भोर-साँझ जखन अवसर भेटनि, अपन ज्ञान भरल बात सँ पोल्हबैत रहलीह दुनू बाप-पूत कें, ''भगवानक कृपा सँ हमसभ एहेन स्थिति मे छी जे ककरो उपकार क' सकी, तँ करबाक चाही ने? आ हम की अपन बच्चा के लिलोह क' क' ओकर कोनो बस्तु देबाक सोचैत छी?...भगवानक सोझाँ बैसि घंटी बजाबए सँ बेसी बड़का पूजा छै जरूरतमंद के उपकार करब...'' एहेन-एहेन डायलॉगबाजी करैत रहलीह सुषमा।

ओमहर काज क' क' घर गेलि शकुन्तला तँ छौंड़ा अर्जुन कें सभ खिस्सा सुनौलनि। कोना की कहलियनि तोरा आंटी के, से सभटा बात। साँझुपहर काज

करबालेल गेलि, फेर प्रातः काल सेहो गेलि, फेर दोसरो दिन साँझ मे, सुषमा कोनो चर्च-बर्च नहि क' रहल छलथिन बाइकक संबंध मे। सभ दिन, भोर साँझ छौंड़ा माए सँ पुछारी करै, ''की कहलथुन आंटी?''

बेर-बेर अर्जुनमाक पुछारी करब ओकर माए कें मोन दिक् क' रहल छलैक। सुषमाक सोझाँ दुबारा चर्चा करबाक सहास नहि होइक। मोने मोन सोचए, ''अधलाह त' ने लागि गेलै मलिकिनी के...लोभी बुझि रहल हेथिन हमरा...नहिए कहती बरु...बेकारे मुहो खोलली हम...'' मुदा सोझाँ बाजए किछु नहि।

तीन दिन धरि कोनो चाल-चूल नहि देखि दुनू माए बेटा निराश भ' चुकल छलए। जन्मदिन दिन भोर मे तँ काज करबालेल आएल, आ साँझ मे नहि एबाक अर्जी लगा क' चलि गेलि शकुन्तला।

तीनू घरक काज निपटा क' घर गेलि। घरक लगीचे छलैक तीनू घर, जतए काज धएने छलए ओ। दस मिनट लागैक जाए मे, ततबे दूर। घर पहुँचि नहाए सुनाए नीक नूआ पहिरि तैयार भेल, बेटाक जन्मदिन जे छलैक। छौंड़ाक नबका शर्ट पैंट, जे सुषमा देने छलथिन, पेटी मे सँ निकालि क' ओछाइन पर राखि देलकैक माए। ई सोचि, जे अर्जुनमा आएत आ नहाए-सुनाए झट् द' पहिरि लेत, ताकए नहि पड़तैक ओकरा।

बेटा संगी-साथी संगे कत्तहु गेल छलैक बाहर। ता माए बगले के एकटा दोकान सँ बैलून आ बर्थडेक सजावट केर किछु-किछु आरो समान दोकाने बला सँ पूछि क' आनि लेलक। पाँच बजे साँझ खनि बाप अएलै काज पर सँ तँ घुरती काल केक ल' अनलकैक। ताबे बेटा नहाए धोए नबका कपड़ा पहीरि तैयार छलए।

अर्जुनक पिसी आ मौसी दुनू लगे पास मे रहैत छलैक। पिसियौत भाए बहिनक संग पिसी कें आबै लेल कहि देने छलैक ओकर बाप। आ मौसी कें कहि देने छलैक ओकर माए। दू टा लोक एतैक, तखन ने बुझेतैक बर्थडे मनाएल सन, से दुनू प्राणीक विचार एक्कहि रंग छलैक। दुनू परिवारक भोजनक व्यवस्था करबाक छलैक माए कें। ओ अर्जुनमा-बाप के नहाए-सुनाए तैयार भ' जाए लेल कहि, अपने भानसक ओरिआओन मे लागि गेल। तरकारी मे पड़ितैक मटरछिमी, सएह छोड़ाबैत रहए आ कि ओकर फोन बजलैक। देखलक तँ सुषमा भाभीक फोन छलैक। एकरा क्षण भरि लेल डर भेलैक, कोनो काज लेल बजा तँ ने लेतीह। फोन उठेलक, ''परनाम भाभी...की... कोनो काम हो गेल की?''

—''धुर्र...बतहिया...काम कथी होतै...अरे अर्जुन के जन्मदिन छैक...ओकरा हैप्पी बर्थडे कहै लेल फोन कएलियै...फोन दे ओकरा...''

—''ठीक ठीक दइ हिअइ...''

अर्जुनमा फोन हाथ मे लैत, ''परनाम आंटी...'' कहलकनि आ फोन स्पीकर पर क' देलकैक छौंड़ा।

ओमहर सँ सुषमा बजलीह, ''फोने पर प्रणाम...आबि क' आंटी-अंकल के आशीर्वाद लेबैं से नै भेलौ...? वाह बेटा...बढ़ियाँ छौ...''

झट् सनि माए सफाइ दैत बाजलि, ''अरे हम बोलिए रहल हलियै छौंड़ा के...जा... अंकल-आंटी से असिरबाद ले ले...हम दुनू त खाली जनम देलियै... असली माए-बाप त इहे सब हथिन ओकर। आज एतना गो सरीर होलै, पढ़लकै-लिखलकै हिनके अउर के किरपा सँ...हाली सनि आबै हिअइ ओकरा ले के...उ अकेल्ले नइ जइतन भाभी...''

—''ठीक छै...'' कहैत सुषमा फोन काटि देलथिन।

दुनू माए बेटा तैयारे छलए, बाप के कहि देलकै, ''आबै ही पाँच मिनट मे...'' आ भागल घर सँ। फेर घुरि क' भोजन-भातक व्यवस्था सेहो करबाक छलैक ओकरा।

सुषमा दुनू प्राणी बाहर बरामदे पर प्रतीक्षा मे बैसल छलीह। दुनू माए-बेटा कें आबैत देखि सुषमा उठि क' ठाढ़ भ' गेलीह। अर्जुन गोड़ लगलकनि दुनू गोटे कें। माथा ठोकि आशीर्वाद दैत गेलथिन आ ओत्तहि टेबुल पर राखल बाइक के चाभी आ कागज सभ अर्जुन के हाथ मे धराबैत कहलथिन, ''ले..ल' जो बाइक गैरेज सँ निकालि क'... आब खुश ने?''

दुनू माए-बेटाक ठोर पर नमहर मुस्की देखि, ओकरा दुनू सँ बेसी सुषमा प्रसन्न भेलीह। ''ककरो आत्मा जुड़ाएब वास्तव मे सुखद अनुभूति छैक'' मोने मोन बजलीह सुषमा।

अर्जुनमा बाइक चलाएब सिखने छलए। मामाक घर पर जाइत छलए तँ ओत्तहि मामा सँ जिद करैत रहैत छलैक सिखाबै लेल। खूब नीक जकाँ सीखल छलैक। तैं मोन लुसफुसाइत छलैक बाइक लेल। आइ मनोरथ पूरा भेलैक छौंड़ाक।

खूब उत्साहक संग बाइक निकाललक गैरेज सँ। डिक्की मे कागज-पत्र राखि लेलक आ फेर एक बेर हाथ जोड़ि सुषमा दुनू प्राणी कें प्रणाम करैत माए कें बाइक पर बैसबालेल कहलकै छौंड़ा। दुनू माए-बेटा एकदम गदगद! माए के बाइक पर बैसा क' घर ल' गेल अर्जुन। मुदा ओतबी दूर चलाए मोन नहि भरलैक। माए कें कहलकै, ''माए गे... लॉन्ग ड्राइव पर चलमे...?''

—''भक्क... हमरा खनाइ बनाबै के है..एकरा लॉन्ग ड्राइव सुझै हइ... दोसर दिन चलिहे...''

मुदा छौंड़ा नहि मानलकै। घर पर बाइक रोकि बाहरे सँ चिकरि क' बाप कें कहि देलकैक, ''आबै ही आधा घंटा मे...'' आ फुर्र...

दुनू माए-बेटा बाइक पर नहि सातवाँ आसमान मे उड़ि रहल छलए। ई आनन्द प्रायः दोसर दिन लॉन्ग ड्राइव पर गेने नहि भेटितैक। ठीके! कखनोकाल तत्क्षण अपन इच्छा पूर्ति क' लेब आनन्द कें असीमित बना दैत छैक एहन अनुभव भेलैक शकुन्तला कें।

एकठाम रुकि क' समोसा-रसगुल्ला पैक करबा लेलक। जा धरि भोजनक व्यवस्था हेतैक, ताबे आगन्तुक संगे घरबैया सेहो केक आ समोसा-रसगुल्ला जलखइ क' लेत, से विचारलक दुनू माए-बेटा।

सएह भेलैक। घर आबि देखलक तँ अर्जुनमाक पिसी-मौसी सभ आबि गेल छलैक। पिसियौत-मसियौत भाए-बहिन सभ बैलून-तैलून फुलाए केक काटबाक टेबुल लग सजावट क' देने छलैक। समान सभ ओत्तहि टेबुले पर आनि क' राखले छलैक। घर पहुँचि हाल-चाल भेलैक, अभ्यागत सभक संग। फेर बाइक भेटबाक खुशी साझा करैत गेल दुनू माए-बेटा। सभ बाहर आबि बाइकक दर्शन कएलक। अर्जुनमाक बाप छू-छू क' सेहो देखि रहल छल बाइक कें। सीट पर हाथ फेरि आनन्दित होइत, गदगद स्वर मे बाजल, ''बाइक तो एकदम नए हइ...''

बापक मुह देखि अर्जुनमाक मोन भेलैक, बापो के ल' जाए लॉन्ग ड्राइव पर। कहबो केलकै मुदा तखन अबेर भ' रहल छलैक केक काटबाक।

हाथ मुँह धोए, केश ठीक-ठाक क' क' आएल बर्थडे बॉय। झट् सनि केक काटल गेलै। सभ के बाँटल गेलै। माए हाँइ-हाँइ भानस मे लागि गेल। पीठ लागल बहिन सेहो आबि गेलै मददि करबालेल। फेर पाछाँ ननदि सेहो आबि गेलै शकुन्तलाक। केओ आटा सानलक, केओ तरकारी चढ़ौलक, केओ पूड़ी बेललक, केओ छानलक, केओ परसि-परसि खुऔलक। खूब नीक सँ आनन्दपूर्वक जन्मदिन मनाओल गेल अर्जुनमाक।

प्रातः काल काज करबालेल सुषमा ओहिठाम गेलि शकुन्तला तँ खूब उत्साहित भ' क' रतुका सभ वृत्तान्त सुनाबए लागलि। सुषमा कें पैर छूबि गोड़ लगलक आ पुनः पुनः धन्यवाद दैत बाजलि, ''बड़ी खूस हो गेलै छौंड़ा हमर। जीवन मे पहिल 'जलमदिन' एतना अच्छा से मनौलियै हमसभ। फूकना-उकना सेहो फुला देलकै बाप आ मसियौत-पिसियौत भाए-बहिन सभ मिलि। केक आनिए देले हलइ बाप। आ उपर से ई सब बाइक देलथिन से त' उ असमान मे उड़ रहल हलइ जेना...''

—''हे...ओकरा कहिहें जे बेसी नै उड़ बौआ...पैर धरतीए पर रोपने रहब बड़ जरूरी छै...'' सुषमा सचेत कएलथिन मुदा ओकरा बूझए मे थोड़बे अएलैक किछु।

यथार्थ ई छलैक जे अर्जुन संगे ओकर माए सेहो सातवाँ आसमान मे उड़ि रहल छलए रातिए सँ। आनन्दक पारावार नहि छलैक ओकर सभक। बिन माँगे मोती मिले बला आनन्द छलैक।

फेर रतुका वृत्तान्त शुरू कएलक मौगी, ''जानइ हिअइ भाभी...हिआँ से गेलै बाइक ल' क' त छौंड़ा हमरा ले गेलै लॉन्ग ड्राइव पर। बाप रे...पुछू नै मलिकिनी...केतना खूस हलइ अर्जुनमा...लगलै जेना बाइक पर नै हवाइ जहाज मे उड़ रहल होइ छौंड़ा...का जने कभी हवाइ जहाज पर उड़तै त केतना खूस हो जेतै...बड़ी मन हलइ ओकरा बाइक लेल...ना दितथिन ई सब त मुह लटक जइतै बेचारा के...का कहियन भाभी... ई सब त भगवान हो गेलथिन हमरा खातिर...''

शकुन्तलाक ई बर्थडे वृत्तान्त सुनि सुषमा कें मोन पड़ि गेलनि अपन बौआ आलोकक कहल बात। छओ मास पूर्व जखन आलोकक जन्मदिनक उत्सव संपन्न भेल। लोक-बेद भोजन-भातक उपरान्त निकलि गेलाह। तदुपरान्त पुत्रक चौबीसम जन्मदिन पर गिफ्ट कएल नबका स्कोडा सुपर्ब कार मे बैसि लॉन्ग ड्राइवक आनन्द लेल जाए, से प्रोग्राम बनल राति बारह बजे। स्टीयरिंग व्हील आदित्य जी स्वयं पकड़लनि। बगल मे पुत्र आलोक कें बैसा क' ड्राइविंग टिप्स सेहो दैत रहलाह, बीच-बीच मे। ओना ड्राइविंग कोर्स पहिनहि कएल छलनि आलोक बौआक। ड्राइविंग लाइसेंस भेटलाक बाद लगले ड्राइविंग कोर्स क' लेबा लेल धड़फड़ाएल छलाह। तथापि किछु-किछु छोट-छोट टिप्स दैत ड्राइव क' रहल छलाह आदित्य जी। पाछाँक सीट पर बैसलि सुषमा रहि-रहि क' आलोकक मुह निहारथि। मोने-मोन गदगद होइथ। आलोकक मुख मण्डल पर गिफ्ट मे फोर व्हीलर भेटबाक प्रसन्नता कें जेना आत्मसात क' लेबाक लेल अपसियाँत छलीह।

दस-पन्द्रह मिनटक ड्राइव धरि तँ आलोकक प्रसन्नता देखा पड़लनि सुषमा कें। तकरा बाद बगल सँ एकटा चमचमाइत नमहर गाड़ी, हिनकर गाड़ी कें ओवरटेक कएलक। आलोक मुह बओने, अचरज सँ आँखि गोल-गोल करैत बाजि उठल छलाह, ''वाव...व्हाट अ कार...।''

माधुरी-1

''काल्हि सबेरे काउंसलिंग लेल निकलबाक अछि ने...यौ...मुकुल जी...सूति रहू जल्दी... गप्प सरक्का मे बारह-एक नै बजा लेब... जल्दी उठबालेल जल्दी सूतब सेहो जरूरी रहैत छैक, बुझलियै ने...'' सुतबाक सूर-सार करैत, कनि जोरे सँ पुत्र मुकुल कें हाक दैत अनिमेष जी बजलाह।

दोसर कोठली मे पुत्र मुकुल जी फोन पर गप्प क' रहल छलाह ककरो सँ।

जे देबाल एकटा नमहर-नमगर जगह कें दूटा कोठलीक रूप मे विभाजित क' रहल छलैक ताही देबालक दुनू भाग एकहक टा पलंग राखल छलैक। जाहि मे सँ एक टा पलंग पर बैसल अनिमेष जी, दोसर पलंग पर बैसल बालक मुकुल जी सँ गप्प क' रहल छलाह। माने देबालक एहि पार सँ ओहि पार बात पहुँचबाक छलैक। आ जाहि देबाल सटाए दुनू पलंग राखल छलैक ताही देबाल पर पलंग सँ एक हाथक बाद केबाड़ी छलैक।

एतबे दूर अपन बात पहुँचाबैक लेल, अनिमेष जीक एतेक जोर सँ बाजब पत्नी माधुरी कें नीक नहि लगलनि। पुत्र मुकुलक कोठली सँ सटले भनसाघर मे चुल्हा मिझा क' कप मे दूध ढारि रहल छलीह माधुरी। दूधक कप पतिदेवक हाथ मे थम्हबैत खिसिआइत बजलीह, ''ऐं यौ...एना चिकरि क' बाजब जरूरी छलए? निचाँ-उपर सभ सुतल हेतैक, सेहो नहि सोचैत छियैक एकबेर... विचित्र हाल अछि अहाँक।''

पत्नीक खिसिअएबा मे खीस कम अनुराग बेसी बुझेलनि अनिमेष जी कें आ तैं ओ कोनो प्रतिकार करबाक प्रयास नहि कएलनि।

माधुरीक अनुराग भरल झिड़कीक पाछाँ हुनकर अपन बुधियारी छलनि। ओ भरिदिन भानस-भात करैत, स्नान-ध्यान करैत बौआ मुकुलक गतिविधि पर गौर क' रहल छलीह। कतेको संगी-साथीक कॉल आएल छलनि दिन भरि मे, तकर हिसाब नहि। जखन सँ अनिमेष जी कार्यालय लेल निकललाह, तकर बाद भरिदिन बौआ फोने पर लागल छलाह।

जखन भोजन लेल दुनू माए-बेटा बैसलथि डाइनिंग टेबल पर आमने-सामने, तखन माधुरी पुछलथिन बौआ सँ, ''की बात अछि? बहुत कॉल आबि रहल अछि एमहर दू चारि दिन सँ...''

मुकुल जीक भीतर बहुत किछु दबल, भरल पड़ल छलनि। बिफरि पड़लाह, ''अरे दिमाग खराब भ' रहल अछि हमर। काउंसलिंग मे कोना-की भरल जाए से दिमाग काज नहि क' रहल अछि। केओ किछु कहैए केओ किछु।

''अच्छा एखन खाउ शांति सँ...'' कहैत तत्काल बौआक मोन शांत करबाक प्रयास कएलनि माधुरी।

भोजनोपरान्त बौएक कोठली मे आबि पड़ि रहलीह। बौआ टहलैत ककरो सँ बतिआए लगलाह भोजन पर सँ उठलाक बाद। जखन गप्प समाप्त भेलनि तँ अपन ओछाइन पर अएलाह। माए कें पड़ल देखि कहलथिन, ''एहिठाम किएक ओंघड़ाएल छी अहाँ...एहिठाम सूतल थोड़े हैत...हमरा कॉल सभ आबैत रहत एखन। अहाँ कें डिस्टर्ब हैत। जाउ अपन रूम मे आराम करु ग'...''

''हमरा सुतबाक अछियो नै...एकटा पोथी आधा पढ़ल अछि सुस्मिता पाठक जीक कनोजड़ि। तकरा फिनिश करबाक अछि।'' माधुरी ओहिठाम सँ घसकबाक मूड मे नहि छलीह।

जखन बौआ सेहो आराम करबालेल पड़लाह, तखन स्थिर भ' पुछलथिन बौआ सँ, ''की परेशानी अछि?''

''अरे की कहू माँ... बहुत माथा-पच्ची छै...नीक कॉलेजक लोभ करब तँ मनचाहा ब्रांच भेटब मोशकिल आ मनचाहा ब्रांच भेटत तँ कॉलेज कोनो आलतू-फालतू भेटत। समस्या इएह अछि। हमरा आइ आइ टी दिल्ली, मुंबइ, खड़गपुर, कानपुर, रुड़की, गुवाहाटी, एहि सभ मे सँ कोनो कॉलेज चाही। आ ब्रांच कंप्यूटर साइंस।''

कनि थम्हि क' फेर बजलाह बौआ, ''असल मे फर्स्ट एटेम्प्ट मे बारहवींक पढ़ाइ पर फोकस करब बेसी आवश्यक रहैत छैक ने...तैं रैंक नीक नहि आबि पाबैत छैक।''

''मुकुल जीक मोन एहन उहापोह बला स्थिति मे ओझराएल छलनि आ हम किछु पूछब सेहो आवश्यक नहि बुझलहुँ एतेक दिन सँ। एडवांस केर रिजल्ट अएला आइ पनरह दिन बीति गेल आ हमरा हुनकर मनःस्थिति बुझबाक कोनो बेगरतो नहि बुझाएल'' निरन्तर इएह सोचि रहल छलीह माधुरी।

उद्विग्न मोन कें थिर करबालेल किछु पढ़बाक उपक्रम कएलनि, मुदा मोनक उद्विग्नता पोथी पर धेआन जाए नहि दैत छलनि। रहि-रहि क' मोन मे एक्कहि बात घुरिआइत रहलनि, ''बौआक परेशानी कोना कम क' सकैत छी हम...''

माधुरीक ज्येष्ठ पुत्र मोहितक दू बर्ख पहिनहि एन आइ टी जमशेदपुर मे एडमिशन भेल छलनि। एहि बेर चारिम सेमेस्टरक परीक्षाक उपरान्त इंटर्नशिप लेल बैंगलुरू जेबाक छलनि, तैं दरभंगा नहि एलाह छुट्टी मे। घर मे मात्र पति-पत्नी आ छोटका बौआ मुकुल छलथि।

बड़का बौआ खेबा-पीबाक बेसी सौखीन, मुकुल जीक सिद्धान्त ''सादा भोजन उच्च विचार'' बला। तँ भोजन-भातक इंतजाम मे बहुत ओझराहटि नहि छलनि माधुरीक। घूरि-फिरि पुनः मुकुल जीक पलंग पर जाए, बैसि रहलीह। कनिकाल एमहर ओमहर कें गप्प भेलनि दुनू माए-बेटा मे। बेसी उपदेशो दैत डर होइत छलनि। तथापि बौआक स्ट्रेस कम करबाक प्रयास लेल डेग उठबैत बजलीह, ''दस लोकक बात मे नै ओझराउ...अहाँक अप्पन मोन की कहैए...एतेक आत्मविश्वास अछि? जे एक चांस आरो लेब, तँ नीक रैंक आबि जाएत? एहनो तँ भ' सकैत अछि ने, जे अगिला बेर पाँच हजार सँाती सात हजार मे आबए रैंक। कंपिटीशन परीक्षा मे निगेटिव मार्किंग के चक्कर सेहो रहैत छैक ने! भाग्य सेहो एकटा पैघ फैक्टर होइत छैक। रिस्क लेबाक इच्छा अछि, तँ देखियौक ल' क'...।''

''पप्पाजी खिसिएथिन... हमरा बूझल अछि नीक जकाँ'' मुह लटका क' बौआ बजलाह। मुकुल जीक मुख पर लाचारीक भाव स्पष्ट देखा पड़लनि माधुरी कें। सन्तानक विवशताक आँच पबितहि माएक हृदय मे प्रवहमान ममता आँच पर चढ़ल दूध जकाँ उधिआए लगलनि। घुसुकि क' बौआक आरो लग चलि गेलीह माधुरी, बौआक पीठ पर हाथ फेरैत, बजलीह, ''अहाँ हुनकर चिन्ता नहि करू; हुनका हम कन्विन्स क' लेबनि।''

एतबा सुनितहि मुकुल जीक आँखि मे कनि चमक आबि गेलनि जेना। आ ई चमक देखितहि माधुरी मोने मोन ठानि लेलनि, बौआ एक बेर फेर सँ तैयारी करताह, फेर सँ बैसताह कंपिटीशन मे ताहि लेल हुनका मनाइए लेबनि कहुना हम।

ओना अधिक काल आठ बजे धरि घर घुरि जाइत छलाह अनिमेष जी, कहियो काल साढ़े आठो बाजि जाइत छलनि। घर घुरलाक उपरान्त सुभ्यस्त भ' बैसलाह, तदुपरान्त चाह-पानि-भोजनक इंतजाम मे माधुरी लगातार अस्त-व्यस्त रहलीह! स्थिर भ' बैसिए नहि सकलीह पतिदेवक लग मे। चैन भेलीह भोजनक उपरान्त जा क'। अनुराग भरल झिड़कीक उपरान्त भरिदिनक खिस्सा कहलथिन पतिदेव कें। कहि देलथिन स्पष्ट जे बौआ एक बेर आरो प्रयास करबाक सोचि रहल छथि। काउंसलिंग ताउंसलिंग के चक्कर मे नहि पड़बाक छनि एखन हुनका।

अनिमेष जीक लेल ई एकदम अप्रत्याशित गप्प छलनि। ओ मेंटली प्रिपेयर छलाह भोरे काउंसलिंग लेल निकलब दुनू बाप-पूत पटना। आइ आइ टी पटना जाए काउंसलिंग लेल चॉइस भरबाक छलनि मुकुल जी कें। बमकि गेलाह एकदम! सोर पारलथिन बौआ कें। पुछलथिन—''की..? नहि जेबाक अछि काउंसलिंग लेल?''

बौआ चुप!

—''कहलहुँ ने हम...आब हुनका सँ की पुछैत छिअनि... ठीक छैक...जे मोन छनि से करए ने दिअनु...।'' माधुरीक टिपब अनिमेष जी कें नीक नहि लगलनि।

लुलुआ लेलथिन पत्नी कें, ''अहाँ की बाजैत छी? अहाँ कतेक दुनिया देखने छी?''

माधुरी चुप!

—''आइ आइ टी क्रैक करब दालि-भातक कौर छै की? कोन गारंटी छै...अगिला बेर नीक रैंक आबिए जेतनि? आ समयो के महत्व छै ने? अनेरे एक साल पछुआ जेताह। कोनो आइ आइ टी सँ पढ़ताह कहओताह तँ आइ आइटियने ने? आ पास आउट भेलाक बाद सभ आइ आइ टी डिग्रीधारीक एक्कहि मान प्रतिष्ठा रहैत छै, बुझलियै ने? ई बतहपनी हेतनि... निगेटिव मार्किंग होइत छै एहि परीक्षा मे से तँ बुझले छनि बौआ कें। हिनका बुझेबाक चाही बच्चा कें, तँ उन्टे आरो सनका रहल छथिन।''

एहि तरहें दुनू गोटे अपन-अपन तर्क दैत रहलाह पुत्र मुकुल जीक सोझाँ। आखिर अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता तँ छलनिहें माधुरीयो लग। माधुरीक तर्क देब कखन हठ मे परिणत भ' गेलनि, से ओ स्वयं नहि बुझि सकलीह।

अन्ततः अनिमेष जी लग मानि जेबाक इतर कोनो उपाए नहि रहलनि। कहलथिन—''स्त्रीहठक सोझाँ जखन साक्षात महादेव नतमस्तक भ' गेल छलाह... तखन हमर कोन बात! हम तँ मनुक्खे छी! भगवतीक कृपा रहलनि तँ बौआक मनोरथ निश्चित पूर्ण हेतनि।

अगिला एक बर्ख अत्यधिक धुकधुक्की मे बितलनि मुकुल जीक। अपना संग-संग माएक मान जे राखबाक छलनि। सालो भरि तेना चौचंक रहलाह, जेना रेलक यात्रा करैत काल ओ यात्री सभ चौचंक रहैत छथि जनिका लास्ट स्टॉपेज धरि नहि जेबाक रहैत छनि। माने बीचक कोनो छोट-छिन स्टेशन पर उतरबाक रहैत छनि, जाहिठाम मात्र दू मिनटक स्टॉपेज रहैत अछि। आ सेहो जँ सुतली राति मे उतरबाक रहल, तखन तँ आरो बेसी सजगताक खगता रहैत छैक।

सएह, तेहने रेलयात्री सन हाल छलनि मुकुल जीक। भगवान धरि रच्छ रखलथिन बच्चाक! साल भरिक सजगताक प्रभावें एकदम 'धमक' सँ पैर रोपलनि अपन गंतव्य स्थान पर। मनचाहा कॉलेज, मनचाहा ब्रांच, सभ भेटलनि। घरक वातावरण आनन्दम् आनन्दम्। एही आनन्दक वातावरण मे एक दिन अनिमेष जी पुत्र पर उमड़ैत स्नेह सह गौरवक भाव केर अभिव्यक्ति करैत बजलाह—''हमरा विश्वास तँ पूरा छलए मुकुल जीक लगन पर आ हुनकर दिमाग पर सेहो। डर बस एतबे छल जे कखनोकाल भाग्य साथ नहि दैत छै, तखन मेहनत आ दिमाग सभ फेल बुझू। एहन मे विद्यार्थीक मनोबल टूटि जाइत छै। हमरा डर बस एही बातक छलए।''

भनसाघर सँ माधुरी आ बापक सोझाँ कुर्सी पर बैसल मुकुल एक दोसर दिस तकलनि। आँखिये-आँखिमे किछु बतिया लेलाह जेना।

—''हमरा बौआक लगन, हुनकर आत्मविश्वास, हुनकर दिमागक क्षमता आ अपन भक्तिक शक्ति, सभ किछु पर भरोसा छलए। बौआक मेहनति व्यर्थ कोना जाए दितथिन हमर भोलेनाथ।'' माधुरी दुनू बाप-पूतक हाथ मे जलखइ के छिपली पकड़ाबैत बजलीह।

मुकुल जी मोने मोन बाजि क' रहि गेलाह, अहाँ की बाजैत छी माँ...अहाँ कतेक दुनिया देखने छी?

माधुरी-2

दू गोट युवा बालकक माए माधुरी कें बाल्यकालहि सँ पठन-पाठन मे विशेष रुचि छलनि, मुदा मिथिलाक धिया माए बापक लेल पर-धन। धियाक जन्म होइतहि शीघ्रातिशीघ्र ओहि धन कें ओकर स्वामीक हाथ मे सौंपि देब आ निश्चिन्त भ' जाएब एकमात्र लक्ष्य। माधुरीक माए-बाप कोनो मैथिल समाज सँ बाहरक लोक थोड़बे छलथिन, ओहो सभ अपन उत्तरदायित्व पूर्ण कएलनि। स्नातक प्रथम वर्षक छात्रा छलथि तखनहि सँ माए धड़फड़ाएल छलीह कन्यादान करबा लेल मुदा सुयोग्य वर ताकैत-हेरैत साल भरि लगलनि पिता कें आ स्नातक दोसर वर्षक परीक्षाक उपरान्त, कुमारि माधुरी सौभाग्यवती भ' गेलीह। ताहिदिनक धिया सभ कें अपन विवाहक चर्चा काल मूक-बधिर बनल रहबाक शिक्षा केओ दैत तँ नहि छलनि, जन्मजात ई गुण विद्यमान रहैत छलनि प्रायः। पिता विवाह तय क' क' अएलाह। शुद्ध समाप्ति पर छलैक। ताहि कारणें दसे दिनक भीतरक दिन निश्चित भेलनि विवाहक। माए सभ टा ओरिआओन कएलनि। लोक सभ मेहदी, आलता, काजर, ठोप लगाए तैयार क' देलकनि आ आनंदपूर्वक विवाह संपन्न भ' गेलनि माधुरीक।

विवाहोपरान्त स्नातक तेसर वर्षक परीक्षा देलनि। हिन्दी विषय मे प्रतिष्ठाक संग स्नातकक परीक्षा सेहो प्रथम श्रेणी सँ उत्तीर्ण क' माधुरी नैहर, सासुर दुनू ठामक लोक कें गौरवक अनुभूति करओलनि।

विवाहक दू बर्ख पूरैत-पूरैत एक टा बाल-गोपाल कोरा मे छलनि, जे आब माधुरीक जीवनक धूरी बनि गेल छलनि। ओहि नेनाक हँसब संग हँसब, ओकरे सुतब संग सूतब, ओकरे उठब संग उठब। समय जेना भागल जा रहल छलनि। तेहन सन जेना समय कें पाँखि लागि गेल होइक। किछुए दिन मे ओ नेना उनटैत-पुनटैत, पेटक बलें ससरैत, ठेहुनिआँ दैत ठाढ़ होमए लागल, फेर चलए लागल, दौड़' लागल। नेनाक एहि गतिविधि सभक आनन्दक सोझाँ कोनो सिनेमा-सरकस फेल छलनि माधुरीक लेल। ओहि नेनाक दोसर जन्मदिवसक

उत्सव मनएबाक बेर भेलनि ता धरि ओहि बच्चाक अनुज सेहो दू मासक भ' गेल छलाह। दुनू बाल गोपाल पढ़बा-लिखबा योग्य भ' गेलनि तँ हुनकर दुनूक नामकरण कराओल गेल विद्यालय मे, आब तँ माधुरीक व्यस्तता दोबर भ' गेलनि। बौआ सभक पोथी सभ सैंतब-उसारब, गृहकार्य कराएब, नाना प्रकारक अन्यान्य काज सभ बढ़ि गेलनि।

एहिसभ क्रम मे माधुरी जेना बिसरिए गेल छलथि जे हुनकर अपन सेहो कोनो अस्तित्व छनि, अपन नाम पर्यन्त विस्मृत भ' गेलनि जेना। एक माए, एक पत्नी, एक पुतहुक भूमिका मे तेना तन-मन सँ समर्पित भ' गेलीह जे अपना लेल जीअब की होइत छैक सोहे नहि रहलनि। ''स्व'' आ ''स्वाभिमान'' शब्दक अर्थ बदलि गेलनि हुनका लेखें, सभ किछु स्वामी आ बौआसभ भ' गेलनि। बौआ सभक पठन-पाठनक क्षेत्र मे नीक परफॉर्मेंस देखि गौरवान्वित होइत रहैत छलीह। 'माए-बापक लेल सन्तानक सफलता अपन सफलता सँ बहुत बेसी आनन्ददायक आ गौरवक विषय' एहि सूनल सुनाएल गप्प कें सद्यः अनुभव क' रहल छलथि माधुरी।

देखिते-देखिते दुनू बाल गोपाल युवावस्था कें प्राप्त क' उच्च शिक्षा ग्रहण करबालेल बेरा-बेरी घर सँ दूर, हुनका सँ दूर चलि गेलनि। दुनू बालकक अनुपस्थिति मे माधुरीक समय बीतब कठिन भ' गेलनि। दिन-राति जखन तखन कोनो बात पर आँखि नोरा जाएब, भरिदिन मे दसो बेर बौआ सभ कें फोन करब, की जलखइ भेटलनि, की भोजन भेटलनि, एहि सभपर धेआन लागल रहब, माधुरीक जिनगी भ' गेलनि। कखनो बौआ सभ फोन नहि उठओलनि तँ फेर भावुक भ' जाएब, माने बएसक संग भावुकता बढ़ैत चलि जा रहल छलनि।

वास्तव मे ओ अपना कें महत्वहीन बूझए लागल छलीह। आब हुनकर आवश्यकता नहि रहलनि बौआ सभ कें, से असहनीय पीड़ाक कारण भेल जा रहल छलनि। ''डिप्रेशन'' मे जाएब सन। जखन कि बुझैत छलीह जे आजीवन अपन आँचर सँ बान्हि क' नहि राखि सकैत अछि कोनो माए अपन बच्चा कें। एक दिस हुनकर सभक उन्नति केर कामना, दोसर दिस हुनकर सान्निध्य सेहो बनल रहए, ई दू विपरीत ध्रुव सन बात भेल, ततबा ज्ञान तँ छलनि हुनका। मुदा माएक हृदय मोमो सँ जल्दी पिघलि जाए बला जे रहैत छैक से पघिलैत रहलनि।

एहिना कानैत खीजैत छओ मास बीति गेलनि। छोटका बौआ छुट्टी मे घ'र एलथिन। पिता सभ खिस्सा बेटाकें सुनौलनि ''माए जखन-तखन कानैत रहैत छथि अहाँ सभलेल। अहाँ सभ पढ़ि लिखि सुयोग्य बनब ताहि बातक गौरव हेबाक चाही तँ उन्टे नेप चुअबैत रहैत छथि।''

बौआ कहलथिन ''दिन राति मात्र हमरे सभ पर धेआन रहतनि तँ इएह ने हेतनि। थम्हू हिनका फेसबुक पर अकाउंट खोलि दैत छियनि। ओहि मे ओझराएल रहतीह तँ इमोशनल होएबाक पलखतिए नहि रहतनि।''

जहिना बौआ कहलथिन, सत्ते फेसबुक पर ओझराएब असरि कएलकनि। आस्ते-आस्ते माधुरीक मानसिक स्थिति सुधरैत गेलनि। पढ़बा-लिखबाक सौखक संग चित्रकलाक सौख सेहो छलनि माधुरी कें।

कोनो-कोनो मैथिल गृहणी सभक समूह सँ जुड़ि गेलीह, फेसबुक पर। ओहि समूह सभक माध्यम सँ एकटा नीक प्लेटफॉर्म भेटि गेल छलनि, सभ स्त्रीगण कें। केओ गीत गाबि पोस्ट करैत छलीह, केओ कविता-कथा-संस्मरण लिखि, केओ एक सँ बढ़ि क' एक मिथिला पेंटिंग आ अन्यान्य आर्ट-क्राफ्ट बला बस्तु सभक फोटो।

एक दिन एकटा पोस्ट पर नजरि गेलनि माधुरीक, ''ऑनलाइन मिथिला पेंटिंग सिखबाक इच्छुक स्त्रीगण हमरा सँ एहि मोबाइल नंबर पर संपर्क करु।'' आब पढ़ि लिखि करियर बनेबाक बएस तँ रहि नहि गेल छलनि माधुरीक। समयक सदुपयोग करबाक उद्देश्य सँ, संगहि अपन मोन बहटारबाक उद्देश्य सँ ओहि मोबाइल नंबर पर संपर्क कएलनि। व्हाट्सएप्प पर मिथिला पेंटिंग सिखएबाक शुभारम्भ क' रहल छलीह ओ महिला। पचास साठि गोटेक एकटा व्हाट्सएप्प समूह बनाएल गेलैक आ ओहि पर सभदिन एकटा-दूटा चित्र टास्क रूप मे बनेबाक रहैत छलैक। खूब मनोयोग सँ सीखए लगलीह माधुरी। हिन्दी मे एकटा कहावत छैक ने, ''अंधा क्या चाहे दो आँखें'' सएह पड़ि छलनि माधुरीक।

जाहि जन्मजात गुण मे बीझ (जंग) लागि गेल छलनि, से बीझ छूटैत गेलनि। जन्मजात गुण निखरैत गेलनि। ओहि व्हाट्सएप्प समूह पर हिनकर बनाएल चित्र सभक खूब प्रशंसा होइन। सिखबालेल तँ बहुत लोक सीखि रहल छलीह, मुदा माधवी सन फिनिशिंग बड़ कम लोकक होइत छलनि।

माधुरी तँ बस शौकिया तौर पर सीखि रहल छलीह मिथिला पेंटिंग। प्रोफेशनल फील्ड मे उतरबाक बात दिमागक कोनो कोना मे नहि छलनि। मुदा जीवन मे बहुत किछु संयोगवश सेहो भ' जाइत छैक। सएह भेलनि माधुरीक संग।

एक दिन एक गोट परिचित महिला माधुरीक घर पर अएलथिन भेंटघाँट करबालेल। ओएह शुभचिंतक महिला माधुरी कें सलाह देलथिन, ''एतेक रास पेंटिंग सभ बना-बना क' जमा जे कएने जा रहल छी, से एकर मार्केटिंग करु। इच्छुक लोक संपर्क करथि, ताहिलेल फ्रेमिंग करबा क' पोस्ट करैत रहू कहियो काल फेसबुक पर। आ ओ स्वयं मिथिला पेंटिंग कएल एकटा टेबल क्लॉथ माधुरी सँ तत्काल किनबाक इच्छा व्यक्त कएलथिन।

माधुरी मना करैत रहि गेलीह, ‘‘नै नै...पाई नै लेब हम। उपहार स्वरूप ल’ जाउ दीदी...’’

मुदा ओ शुभचिंतक महिला वास्तव मे शुभचिंतक छलीह माधुरीक। ओ जबरदस्ती एक सए टाका सिंदूर लहठी किनबाक नाम पर पकड़ा देलथिन ई कहैत जे, ‘‘अरे अहाँक मेहनति तँ जे लागल अछि से तँ अछिए... मेटेरियल सेहो लागैत छै ने...पाइ किएक नहि लेब? प्रोफेशनल बनू... माधुरी रानी..’’

मना तँ क’ रहल छलथिन माधुरी पाइ लेबा सँ, मुदा जखन सिनेह सँ पकड़ाइए देलथिन पाइ तँ नीकें लगलनि। नीक की... बहुत नीक लगलनि। अपन मेहनति सँ कमाएल पहिल नमरी एकटा सुखद अनुभूति तँ देब्बे कएलकनि। संगहि उत्साह सेहो बढ़लनि।

ओहि एक सए टाका सँ, दू मीटर कपड़ा आनि फेर दू टा टेबल क्लॉथ बनौलीह। एहि तरहें प्रोफेशनलिज्म दिस डेग उठौलनि माधुरी। पाइ आबए लगलनि, तँ स्वाभाविके, काज करबा मे आरो मोन लागए लगलनि। मेहनति केर पारितोषिक भेटब ककरा अधलाह लगतैक?

समयक संग मिथिला पेंटिंग कें क्षेत्र मे जानल-मानल नाम भ’ गेलीह माधुरी। एतेक ऑर्डर आबए लगलनि, जे एकसरि पूरा करब संभव नहि छलनि। किछु आरो नीक कलाकार सभ कें अपना संग कएलनि। तीन-चारि साल मे माधुरीक मिथिला पेंटिंग बला कारबार ततेक पसरलनि जे तीस गोट महिलाक लेल रोजगारक व्यवस्था करबायोग्य भ’ गेलीह। अपन आर्थिक स्थिति तँ जानिए क’ सुदृढ़ भेब्बे कएलनि। आर्थिक सबलताक परिणामस्वरूप आत्मविश्वास मे सेहो वृद्धि भेलनि।

निस्संदेह पति अनिमेष जीक सहयोग भेटैत रहलनि, तखनहि एतेक आगाँ बढ़ि सकल छलीह माधुरी। आर्थिक सबलताक संग मान-सम्मान बोनस रूप मे भेटि रहल छलनि। समय-समय पर विभिन्न संस्था द्वारा मिथिला चित्रकलाक क्षेत्र मे उत्कृष्ट योगदानक लेल सम्मानित होइत रहैत छलीह माधुरी।

एकटा उल्लेखनीय सम्मान ‘‘प्राण प्रतिष्ठा कला रत्न राष्ट्रीय सम्मान’’ सँ सम्मानित भेलीह। अयोध्या मे निर्मित भव्य राम मन्दिर मे रामललाक गृह-प्रवेशक अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय कला महोत्सव मे रंग ओ कूचीक सहारे कैनवास पर उकेरल माधुरीक चित्रकला, पाँच सर्वोत्कृष्ट कलाकृति मे चयनित भेल छलनि।

तकर बाद लगले सेमेस्टर परीक्षाक उपरान्त दुनू बौआक दरभंगा अबाइ छलनि। बौआ सभक अबाइ सँ किछुए दिन पूर्व ‘‘बिहार रत्न सम्मान’’क घोषणा भेलैक। पत्नीक नामक घोषणा एहि सम्मानित सम्मान लेल होएब अनिमेष जीक लेल सेहो गौरवक बात छलनि।

संयोग एहन जे बौआ सभक दरभंगा रहिते मे एहि सम्मान समारोहक तिथि पड़लनि। चारू गोटे दरभंगा सँ पटना जाइत गेलाह। समारोहक प्रत्यक्षदर्शी बनलाह। गौरवान्वित भेलाह। सभक लेल असीम गौरवक क्षण छलनि ई। माधुरी जखन मंच पर सँ उतरि दर्शक दीर्घा मे बैसल अपन पति आ पुत्रद्वयक लग मे अएलीह तँ छोट बालक मुकुल जी हँसीए-हँसी मे अपन पिता कें आखिर कहिए देलथिन, ''की पप्पा जी...आबो सएह कहबनि माँ कें...'अहाँ की बाजैत छी...अहाँ कतेक दुनिया देखने छी?''

थेरेपिस्ट

''भूतकालक विषय मे की सोचब? भूत बदलल नहि जा सकैत अछि। भविष्यक चिंता केनहि की? भविष्य मे की होमएबला अछि, से लोक देखि नहि सकैत अछि। प्रारब्ध मे जकरा-जे नीक-बेजाए हेतैक, से भोगहि पड़तैक। तखन वर्तमानक आनन्द उठाबी। सएह ने बुधिआरी? की...? भूत-भविष्य सोचि अपन वर्तमान कखनहुँ खराप नहि करी।'' जीवनक एकहक क्षण आनन्द ओ उल्लासक संग जीबए बला धीरज, ई बात अधिक काल लोक कें कहैत रहैत छलाह। जखन कखनहुँ हुनकर हीत-मीत जीवन मे निराशाक अनुभव करथि, तँ। आइ अपनहि बाजल बात, अपन जीवन मे उतारब कठिन भ' रहल छलनि, धीरज लेल। रहि रहि क' भूतकालक चिंतन-मनन आ अनिश्चित भविष्यक चिंता मे डुबकी लगबैत हुनक मोन-मयूर जेना वर्तमानक आनन्द सँ आनन्दित भए नाचब बिसरि गेल छलनि। उनचासो बसात बहैत सन बुझा पड़लनि अनायास। जीवनक रुखिए बदलि गेलनि। भरि निन्न सूतब पर्यन्त कठिन भ' गेल छलनि, एमहर किछु दिन सँ।

तैंतीस बरखक धीरजक कैम्पस सेलेक्शन एक गोट प्रतिष्ठित मल्टीनेशनल कम्पनी मे दस बरख पहिनहि भेल छलनि। भव्य मुखमंडल, मृदुभाषी, प्रभावी व्यक्तित्वक स्वामी धीरजक व्यावहारिकता कर्मक्षेत्र मे सेहो हुनकर एकटा विशेष पहचान बनएबा मे सहायक भेलनि। जहिना इंजीनियरिंग कॉलेज मे संगी-साथी, जुनियर-सीनियर सभक बीच लोकप्रिय रहलाह, तहिना। 'कलिग' सभक संग सौहार्दपूर्ण व्यवहार आ काजक लेल हुनकर समर्पण देखि हुनकर चयन एक टा 'प्रोजेक्ट' केर 'टीम लीडर'क तौर पर भ' गेलनि। आ सेहो 'ज्वाइनिंग'क मात्र सोलहे मासक उपरान्त। हुनकर कंपनी 'टीम लीडर'क तौर पर छओ मासक लेल अमेरिका पठेबाक प्रोपोजल देलकनि। कंपनी द्वारा डॉलर मे देल गेल 'ऑफर' (दरमाहा) कें जखन धीरज रुपया मे 'कन्वर्ट' केलनि तँ अपनहु आँखि फाटि गेलनि। एतेक पाइ! कहियो सपनो नहि देखने छलाह मधुबनी सन छोट शहर मे पलल-बढ़ल धीरज, जे एतेक दरमाहा बला काज एतेक सहजता सँ भेटि जेतनि

हुनका। एहन स्थिति मे कंपनीक 'प्रोपोजल' अस्वीकार करबाक कोनहुँ प्रश्ने नहि छलनि। सहर्ष अमेरिका जेबा लेल तैयार भ' गेलाह। तैयारे नहि भेलाह, दिन गानए लगलाह। 'पासपोर्ट' तँ ज्वाइनिंगे काल बनल छलनिहें। वीजाक प्रक्रिया दू मासक भीतर संपन्न भ' गेलनि आ विदेश यात्रा पर निकलि गेलाह धीरज।

अमेरिकाक 'अटलांटा' शहर मे रहबाक व्यवस्था कंपनी पहिनहि सँ क' देने छलनि। ओहिठामक बात-व्यवस्था नीक लगलनि। अपन देश भारत सँ सभ किछु कें तुलना करबाक स्वाभाविक प्रवृत्तिक तहत धीरज सेहो ओहिठामक रहन-सहनक तौर तरीकाक तुलना अपन देश सँ करए लगलाह। जमीन-आसमानक अन्तर देखा पड़लनि सभ किछु मे। बहुत किछु आकर्षित कएलकनि। चकित भेलाह ओहिठामक लोक सभक रंग-ढंग देखि। नियम-कानूनक निष्ठापूर्वक अनुपालन करबाक प्रवृत्ति देखि। माने अपना देश जकाँ कानून कें ताक पर राखि मनमौजी करबाक लोकक प्रवृत्ति नहि देखेलनि। चाहे ओ 'ट्रैफिक रूल्स' होइक वा कोनो दोसर तरहक काएदा कानून होइक। एतेक धरि जे घरक बालकनी मे एकटा रुमाल पर्यन्त नहि पसारबाक अछि, तँ नहि पसारबाक अछि। सभ किछु सुनियोजित, सुचारू रूप सँ चलैत। प्रभावित छलाह धीरज। प्रभाविते टा नहि सम्मोहित भ' गेलाह, से कहबाक चाही।

अमेरिकाक सम्मोहन कही किंवा डॉलरक, धीरज ओहिठाम किछु दिन आरो रहबाक ब्योंत लगबए लगलाह। एक पन्थ दू काज होइत सन बुझा रहल छलनि। अर्थोपार्जनक संग विदेश-भ्रमण/प्रवासक आनन्द! एकटा प्रोजेक्ट पर कार्य समापन सँ पहिनहि कोनो दोसर प्रोजेक्ट भेटि जाइन आ, एहि प्रवास कें 'एक्सटेंशन' भेटि जाइन, ताहिलेल एड़ी चोटी एक क' देलनि। सफल सेहो भेलाह।

होइत-होइत ई 'एक्सटेंशन' दू बरखक भ' गेलनि। एमहर माएक कोंढ़ काँपए लगलनि। बेटा कोनो बिदेसी छौंड़ीक मायाजाल मे ने ओझरा जाइथ। अपन देल संस्कार पर भरोस छलनि, तथापि ...। एकटा अविवाहित नवयुवक, सेहो सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्वक स्वामी। एमहर-ओमहर सँ किछु खिस्सा-पिहानी सुनि, बिदेसक गोर झक-झक नारीक लेल धारणा नीक नहि छलनि माएक मोन मे। ''केओ हमर नेनाकें मायाजाल मे ओझरा ने लिअए'' ताहि आशंका सँ माए बेकल रहए लगलीह। सभदिन फोन पर विवाह लेल बेटाक कपार खाएब सुरुह कएलनि। पहिने तँ बेटा नाक पर माछीए नहि बैसए देथि मुदा समयक संग माए द्वारा अनवरत कपार खाएब कही वा खेखनित्रा करब असरि कएलकनि। माएक संग-संग पिताक सेहो प्रबल इच्छा देखि बेटा मानि गेलाह विवाह लेल।

रंग-रंगक कथा सभ आबिए रहल छलनि। मात्र सभ तरहें सुयोग्य कथा पर सभक मोन मिलबाक देरी छलनि।

दोसर 'प्रोजेक्ट' पर काज सुरुह होइतहि, छओ सप्ताहक छुट्टीक ब्योंत लगओलनि धीरज। भेटियो गेलनि छुट्टी। मधुबनी एलाह। मधुबनी मे धीरजक पिता दू कट्ठा जमीन ल' दू तल्ला मकान बनओने छलाह। वृत्ति सँ सिविल कोर्ट, मधुबनीक पेशकार। चारि गोट पुत्रक पिता।

पुत्रक अबाइ केर गप्प पहिनहि कन्यागत सभ कें बूझल भ' गेल छलनि। विशेष तत्परता देखओनिहार एकटा कन्यागत सँ बात-विचार मिलल सन बुझना गेलनि। झटपट मे देखा-सुनीक समय तय भेलनि। सभ किछु पसिन पड़लनि। विवाह तय भेलनि। विवाह संपन्न सेहो भेलनि। मैरेज सर्टिफिकेट सेहो बनवा लेलाह। एक्कहि यात्रा मे सभ काज संपन्न। मुदा नवविवाहिता कें संग ल' क' जेबा मे पासपोर्ट-वीजाक झंझट छलनि। तैं एकसरे आपस जाए पड़लनि धीरज बाबू कें।

कनिञाक नैहर-सासुर दुनू पक्षक विचार भेलनि जे मधुश्रावणी पाबनिक उपरान्त जाएब उचित हेतनि। फेर विचार भेलनि, कोजगरा सेहो निपटाइए लेब ठीक रहत। कोजगरा लेल नहि बेसी तँ कम-सँ-कम पनरहो दिनक छुट्टीक बात क' लेताह आ कनिञा कें संगहि लेने चलि जेताह। दुनू परिवारक सहमति एहि बात पर छलनि। ता धरि कनिञा स्नेहाक पासपोर्ट-वीजाक सभटा प्रक्रिया सेहो संपन्न भेल रहतनि। जे निश्चित छलनि, से बिनु कोनो व्यवधान कें पूरा भेलनि। नवविवाहित युगल जोड़ी देस छोड़ि परदेस गेलाह, अपन संसार बसाबए।

कालक्रमेण धीरजक तीनू छोट भाएक सेहो बेरा-बेरी विवाह संपन्न भेलनि। आब पेशकार बाबूक वंशक लत्ती चतरब-लतरब सुरुह भेलनि। धीरज सँ छोट भाए लक्ष्मी स्वरूपा धियाक पिता बनलाह। बर्ख भरिक भीतरे ताहि सँ छोट दुनू भाए बेरा-बेरी एकहकटा सुन्नर-सन बालकक पिता बनलाह। माए धीरज आ स्नेहा सँ बेर बेर पुछथिन फोन पर—''कोनो न'ब समाचार नै छै?''

—''न'ब समाचार ओहिना सुनबिहीन? पहिने तों छोटू कें कहिन जे तोहर आ बाबूक पासपोर्ट-वीजाक व्यवस्था क' क' राखत। 'इंडिए' मे बैसल बैसल दादी बनि जेबें?

एहिठाम आबए पड़तौ ने?'' धीरजक कहब छलनि।

—''हौ बाउ!! हम नै जाएब सात समन्दर पार। हमरा अपने डीह पर मरबाक अछि। आब हमरा सभक जिनगीक कोन ठेकान। कखन की भ' जाएत, के जानैए।

न'ब समाचार होइन, तँ एत्तहि बच्चाक जन्मलेल नेने एबनि स्नेहा कें। हमहूँ सभ रहब आ छोट दिआदनी सेहो आबि जेतनि टहल लेल। अहाँ रही वा नै रही, कोनो दिक्कत नै हेतनि कनिञा कें।''

—''एह!! तोंहूँ जे गप्प करैत छैं, से अनसोहाँते सन। आब गाम पर हिनका रहलो हेतनि। जहिं तहिं कूड़ा-कचराक ढेर। रस्ता-पेरा खराप। किछु व्यवस्थित छै अपना देस मे?''

—''आब से तँ अपने सभ बुझैत जाएब। रहल हेतनि कि नै रहल हेतनि। हमरा सभलेल अपन जगह-जमीन आ अपन देस स्वर्ग सन!''

एहि तरहक गप्प-सप्प सँ धीरजक माता-पिता कें अनुमान लागि गेल छलनि जे बेटा आब मात्र शरीर सँ नहि, मोन सँ सेहो परदेसी भ' गेलाह। समयक संग पदोन्नति होइत गेलनि धीरजक। ग्रीनकार्ड लेल प्रयास करए लगलाह। बनल-बनाएल बंगला लेलनि, गाड़ी लेलनि। भौतिक संसाधनक ओरिआओन कें प्राथमिकता दैत माए कें न'ब समाचार सुनेबाक कोनो तेहन धड़फड़ी नहि रहलनि।

सभ तरहें वेल सेट्ल्ड भेला उत्तर 'मेंटली प्रिपेयर' भेलाह। आब विलम्ब नहि करबाक चाही, से सोचि स्नेहा सेहो सजग भेलीह। भगवती कृपा सँ घर मे भगवतीक आगमन भेलनि। नाम सेहो नवागन्तुक भगवतीक, भगवतीए बला राखल गेलनि, आद्या। आठम मास चढ़ितहि स्नेहाक माए चलि गेल छलथिन अटलांटा। आगन्तुक नेना कें सम्हारबा लेल। छओ मासक 'वीजा' भेटल छलनि हुनका। हुनकर देश घुरबाक बेर भेलनि, ता धरि धीरज अपन माता-पिताक 'पासपोर्ट-वीजा'क व्यवस्था लेल अनुज सूरज कें भार द' देने छलथिन। पोती कें खेलएबाक नाम पर सहर्ष तैयारो भ' गेलथि दुनू प्राणी।

पोतीक संग छओ मास बितओलीह मुदा मोन नहि भरलनि। दादी कें तँ सहजहि, आद्याक रंग-ढंग सेहो तेहने छलनि। ओना बाजब तँ नहि शुरु भेल छलनि आद्या रानीक, दादी बाबाक अपना देस घुरबा काल धरि। मुदा स्नेहक अभिव्यक्तिक लेल शब्दक कोन बेगरता! आपस आबैत काल पोती काँकोड़ जकाँ दादीक कोरा जे ध' लेलकनि से छोड़िते नहि छलनि। दादीक प्राण पोती मे आ पोतीक प्राण दादी मे, से सहजहि केओ बुझि सकैत छलए।

जखन आद्या सवा दू बरखक भेलीह, तखन 'इंडिया-ट्रिप' 'प्लान' केलनि धीरज-स्नेहा। बच्चा कें एक्कहि संग सर-कुटुम्ब, टोला मुहल्ला, हीत-मीत सभक आशीर्वाद भेटि जेतनि, से सोचि एकटा 'गेट-टुगेदर'क आयोजन मधुबनी डेरा पर राखबाक नेआर भेल। अपना देस-आगमन पर बच्चाक भव्य स्वागत हेबाके चाही, से इच्छा सभ सँ बेसी आद्याक बाबा-दादीक छलनि। सभठाम 'व्हाट्सएप' आ फोन

पर नोत-हकार देल गेल। एहि बहन्ने सभक जुटान भेल मधुबनी डेरा पर। छोट भाए-भावहु आ बच्चा सभ तँ पहिनहि स्वागत मे आबि गेल छलाह मधुबनी। स्वागत-समारोह सँ एक दिन पहिने स्नेहाक नैहर सँ हुनकर माता-पिता, भाए-भाउज, बहिन-बहिनोइ सभ जुटलथि। भाएक दुनू बेटा, बहिनिक दुनू बेटी सभ। गाम सँ अपन दिआद-बाद मे सँ सेहो किछु लोक अएलाह।

पोतीक स्वागत लेल जकरा जकरा नोत हकार देलनि पेशकार बाबू, प्रायः सभ अपन उपस्थिति दर्ज कएलनि। आ से देखि हुनकर मोन गदगद छलनि। स्वाभाविके पिता कें आह्लादित देखि समस्त परिवार आह्लादित छलए। बहुत नीक जकाँ संपन्न भेल सभ किछु।

आद्या सेहो एहि कोरा सँ ओहि कोरा घुमैत प्रसन्न छलि। कानि-खीजि अकच्छ नहि कएलनि ककरो।

आब सभक स्व-स्थानम् गच्छ...क बेर भेल। जे जाहिठाम सँ आएल छलाह, बेरा-बेरी आपस जाइत गेलाह। जकरा जेहन जतबा छुट्टीक ब्योंत लगलैक, ततबा दिन रहैत गेलाह। स्वाभाविक रूपें जाइत काल सभ धीरज कें सपरिवार अपन अपन स्थान पर अएबाक आग्रह केलनि। आ से मात्र औपचारिकता बला नहि, सिनेह बला आग्रह। अधिकार बला आग्रह।

सभक बातक मान राखैत धीरज सभठाम लेल समयक विभाजन करैत सभठाम जेबा-एबाक फ्लाइटक टिकट बुक क' लेने छलाह। सर्वप्रथम बेरा-बेरी दुनू भाएक डेरा पर पाँच-पाँच दिन लेल गेलाह। पहिने तारापुर, महाराष्ट्र, 'एन पी सी आइ एल' मे कार्यरत माझिल भाए सँ भेंटघाँट लेल गेलाह। फेर हैदराबाद जाए 'आइ टी सेक्टर' मे कार्यरत तेसर भाए सँ भेंट कएलनि। तदुपरान्त सात दिन लेल सासुर कोलकाता सेहो घूमि एलाह। जाहिठाम स्नेहाक माता-पिता आ भाए-भाउज सभ गोटे संगहि रहैत छलाह। घुरैत काल सभ सँ छोट भाएक पटना डेरा पर दू दिन ठहरैत आपस अपन मूल निवास स्थान मधुबनी घुरि अएलाह। जाहि ठाम धीरजक माता-पिता सभदिनाँ रहैत छलाह। हुनकर सभक ओहिठाम रहब आवश्यक छलनि, दू कारण सँ। अपन बनाओल एहि घर आ बाग-बगीचाक देख-रेखक लेल आ दोसर, गामक जमीन-जथा, उपजा-बारीक देखभाल सेहो एहिठाम रहैत संभव छलनि।

एहि तरहें, एहि भारत-यात्रा मे सभठाम भिन्न-भिन्न बएसक बच्चा सभक संग आद्याक समय बितलैक। सभ सँ बेसी समय बितलैक मधुबनी मे। दादीक तँ आँखिक पुतरी बनि गेल छलीह आद्या रानी। बाबा सेहो खेलबैत छलथिन कखनोकाल।

मुदा दादीक तँ जाने नै छोड़थि कखनो आद्या। खाएब दादीएक हाथें, सूतब दादीएक संग।

ओना किछु दिन सभक जुटान रहलनि मधुबनी मे। मुदा दादी आ माएक अतिरिक्त आद्या ककरो संग ततेक नहि घुलि मिलि सकलि। पितियौत भाए बहिन संग सेहो ततेक खेलाएब धुपाएब नहि करथि। जखन कि सभ बच्चा समवयस्के सन। चारू दिआदनीक धिया-पूताक बएस मे बहुत बेसीक अन्तर नहि। दू-चारि बरखक अन्तर पर सभक जन्म छलैक।

देखिते-देखिते वापसीक दिन आबि गेलनि धीरज-स्नेहाक।

आपस गेलाक उपरान्त स्नेहा कनि चिन्तित सन रहए लगलीह। धीरज कें पहिने लगलनि, यात्राक थकान वा माए-बहिन सँ भेंटक बाद बिछुड़ब, कारण भ' सकैत छनि। किछु विशेष पूछताछ नहि कएलथिन। मुदा जखन आठ-दस दिन उपरान्तहुँ स्थिति ओहने देखा पड़लनि, तखन एक दिन सुतैत काल पुछलथिन स्नेहा सँ—''की बात छै? अपसेट लागि रहल छी? जाहिदिन सँ एलहुँ एतए, हँसब बाजब जेना बिसरिए गेलहुँ अहाँ। अपना देसक याद नै जा रहल अछि की दिमाग सँ?''

बात कें टारए चाहलनि स्नेहा—''नै नै, एहन किछु नै। बस ओहिना।'' स्नेहा करौट फेरैत बजलीह।

धीरजकें बुझबामे आबि गेलनि किछु गम्भीर बात छनि स्नेहाक दिमाग मे। डपटैत सन कहलथिन—''कहू त'...आखिर बात की अछि?''

—''एकटा बात अहाँ गौर केलहुँ भारत यात्राक क्रम मे। अपन आद्या, सभ बच्चाक तुलना मे कनि 'डल्' सन लागैत छल। हमरा चिंता भ' रहल अछि। अपन आद्याक मानसिक विकास ठीक ठाक भ' रहल छै कि नै, भगवान जानथि।'' धीरज दिस घुमैत स्नेहा उतारा देलथिन।

—''ओ...हो... अहाँक मोन मे प्रतिस्पर्धाक भाव आबि गेल बुझि पड़ैए। हमर बच्चा सभ सँ 'जीनियस' होअए, आ दिआदनी सभक बच्चा पछुआएल रहए, से भाव तँ नै?''

—''अरे नै...दिआदनीक आकि बहिनिक बच्चा सभ, की हमर अप्पन नै? ककरो पछुआएल रहबाक कामना करब हम। अहाँ कें किछु कहनाइ तँ बुझू काले बेसाहब सन।'' स्नेहा पुनः करौट फेरि लेलनि।

—''तखन फेर एतेक चिन्ता करबाक कोन प्रयोजन? सभ बच्चाक बौद्धिक विकास वा शारीरिको विकास एकरंग थोड़बे होइत छै।''

—''अहाँ नै बुझि रहल छी एखन। बाद मे समस्या बढ़त, तखन बुझबा मे आओत अहा कें। एखने सँ एलर्ट रहब, किछु 'ट्रीटमेंट' कराएब, तँ सुधारक बेसी संभावना रहत। हम से सोचि रहल छलहुँहें।''

—''नै नै कोनो ट्रीटमेंट कें आवश्यकता नै छै आद्या कें। ओ एकदम फिट अछि। अहाँ कें फुसिओ चिंता करबाक हिस्सक अछि।''

स्नेहा आगाँ आर बहस करबाक 'मूड' मे नहि छलीह। चुप रहि गेलीह आ सुतबाक नाटक क' लेलीह। बात आएल-गेल भ' गेल।

वास्तव मे स्नेहाक मोन सशंकित सँ बेसी सचेत छलनि आद्याक बौद्धिक विकासक प्रति। ओ सदिखन अड़ोस-पड़ोसक अन्य बच्चा सभक संग आद्याक व्यवहार, ओकर मानसिक स्थितिक अवलोकन-परीक्षण करैत रहैत छलीह। सामान्य बच्चा सभ सन आद्याक मोन मे कोनो बस्तु देखि, जीव-जन्तु देखि कोनो जिज्ञासा नहि देखाइत छलनि स्नेहा कें। जेना सामान्य बच्चा माए सँ प्रश्न पूछि-पूछि अकच्छ क' दैत छै, ''ई की छै? ई एना किएक छै? ई की क' रहल छै? किएक क' रहल छै?'' एहि सभ तरहक प्रश्नक तँ प्रश्ने नहि, कोनो बस्तु दिस आङ्गुर पर्यन्त नहि देखाबथि आद्या।

आद्याक बढ़ैत बएसक संग स्नेहाक चिन्ता बढ़ैत गेलनि। कहियो काल धीरज कें सेहो प्रत्यक्ष प्रमाणक संग बुझबथिन, ''देखियौ... ई बच्चा कतेक तेज छै। कतेक प्रश्न पुछि रहल छै माए-बाप सँ।''

मुदा धीरजक एक्कहि उतारा, ''अहाँ अनेरे दोसराक बच्चाक संग तुलना करैत रहैत छी। अपन आद्या एकदम ठीक अछि। अकच्छ नै करैए, तँ नीक बात ने...?''

जखन साढ़े तीन बरखक भेलीह आद्या, तँ 'प्ले-स्कूल' मे नामांकन कराओल गेलनि। मास दिन भेल हेतनि 'प्ले-स्कूल' जाइत-आबैत। एक दिन अनायास 'प्ले-स्कूल'क टीचर 'गेट' पर भेटि गेलथिन। जखन धीरज आद्या कें 'स्कूल' पहुँचाबए लेल गेल छलाह। आद्याक संग देखि, टीचर पुछलथिन धीरज सँ, ''अहाँ आद्याक पिता छी ने?''

—''जी, हम आद्याक पिता छी।''

—''ओह! हम आद्याक 'पैरेंट्स' सँ संपर्क करबाक सोचिए रहल छलहुं। ठीके अछि। संवाद पठबितहुँ, ताहि सँ पहिने एतहि अहाँ भेटाए गेलहुँ। 'शी नीड्स थेरेपी'। अहाँक बच्चा सामान्य नहि अछि। 'मेन्टल डेवलपमेन्ट' किछु 'स्लो' अछि अहाँक बच्चाक।''

आब तँ धीरज जेना गाछे पर सँ खसलाह। स्नेहा कें कोना, की कहताह, से भिन्न समस्या। गुम्म छलाह धीरज। टीचर जतेक सहजता सँ कहि देलकनि ''शी नीड्स थेरेपी''...ततेक सहजता सँ ओ कहि पओताह?

नै कहबनि सेहो कोना हैत?

किंकर्तव्यविमूढ़ बला स्थिति।

कहुना सहास क' टीचरक सभटा गप्प विस्तार सँ कहलथिन, ''अपन आद्या दोसर बच्चा सभ संग घुलि मिलि नै पाबि रहल अछि। पढ़ब-लिखब तँ दूरक गप्प, खेलाए धुपाए मे सेहो पाछाँ अछि। बॉल वा रिंग, कोनो बस्तु पकड़बाक प्रयास नै करैत अछि माने ओतेक तेजी सँ दिमाग काज नै करैत छै। कहबाक माने आद्याक दिमाग ओकर ज्ञानेन्द्रिय आ कर्मेन्द्रियक संग तत्क्षण को-ऑर्डिनेट नै क' पाबैत छै। जाहि त्परता सँ एक टा सामान्य बच्चाक करैत छै।''

आब तँ दुनू प्राणी आकाश-पाताल एक क' देलनि। नेट पर पूरा रिसर्च करए लगलाह। एहि तरहक समस्या लेल कोन डॉक्टर, कोन थेरेपिस्ट सँ सम्पर्क कएल जाए, ताहि संदर्भ मे।

एकटा डॉक्टर पर मोन नहि मानलकनि। तीन-चारि टा डॉक्टर सँ देखओलथिन।

समस्या छनि, से सभ डॉक्टर कहलकनि। मानव शरीरक सभ सँ जटिल अंग मस्तिष्कक विषय मे शोध तँ बड्ड भेल अछि मुदा मानव मस्तिष्क सँ जुड़ल जनतब बहुत कम छै एखनहुँ मेडिकल क्षेत्र मे। से अनुभव केलनि धीरज आ स्नेहा, एहि प्रकरण मे। डॉक्टर सभ स्पष्ट किछु बुझि नहि पाबैत छै जे आखिर ई समस्या किएक भेलैक। सभ रोगी पर शोधकार्य करैत रहैत अछि। कारण ओ निदान, दुनू पर बस शोध...शोध...शोध...।

तथापि ट्रीटमेंट सुरुह भेलनि आद्याक। होमियोपैथी, एलोपैथी, आयुर्वेद, सभटा ट्राइ करैत गेलाह। पानि जकाँ पाइ बहबैत गेलाह। पाइ बहओने जाहि समस्याक समाधान भ' जाए, ताहि समस्या सँ तँ लोक कहुना उबरिए जाइत अछि। दुनिया अन्हार तँ तखन लागए लागैत छै, जखन पाइओ काज नहि आबए।

कतहु सँ कोनो 'थेरेपिस्ट'क विषय मे पता लगलनि। ओहि 'थेरेपिस्ट' सँ सम्पर्क केलनि। 'थेरेपिस्ट' कोन तरहें 'थेरेपी'क माध्यम सँ आद्याक 'ट्रीटमेंट' करतीह, तकर विवरण देबाक क्रम मे ओ इहो बात कहलथिन—''थेरेपी तँ हम सुरुह क' देब। हमरा तँ एहि मे आर्थिक लाभे अछि। मुदा अहाँक बच्चाक मुह देखि एकटा मोह सन भ' रहलए। अहाँ दुनू प्राणीक बेकल मोन हमरा द्रवित क' रहल अछि। अपन आर्थिक लाभ सँ बेसी हमरा अहाँक बचियाक स्वस्थ होएबा सँ मतलब अछि। हमरा लग तँ असंख्य केस अबिते रहैए। थेरेपी सँ सुधार संभव

अछि, मुदा निश्चित नै छै, जे पूर्णरूपेण सभ समस्या समाप्त भ' जाएत। आ कतेक समय लागत, सेहो निश्चित नै कहल जा सकैए। थेरेपी सँ बेसी कारगर सिद्ध होएत, एहि बच्चा कें अहाँ ज्वाइन्ट फैमिली मे राखि क' देखू साल-दू साल। ज्वाइन्ट फैमिली माने जाहिठाम बुजुर्ग दादा-दादीक दुलार भेटैक बच्चा कें। समय-समय पर नाना-नानीक सान्निध्य भेटैक। पित्ती-पितिआइनिक संरक्षण, संगतुरिआ पितियौत, भाए-बहिन संग लड़ब-झगड़ब आ फेर मेल करब आ एहि सभक संग माता-पिताक दुलार-मलार।

कहबाक माने जतेक लोकक बीच मे रहि सकए बच्चा, ततेक नीक रहत। भिन्न भिन्न बएसक लोकक छत्रछाया मे रहत बच्चा, से बच्चाक मानसिक विकास लेल अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होएत। छओए मास ज्वाइन्ट फैमिली मे रहत अहाँक बच्चा, तँ अपनहि सुधार देखाए लागत अहाँ सभ कें।''

'थेरेपिस्ट'क इएह बात सुनि धीरज कें जेना उड़ी-बीड़ी लागल छलनि। रातिक निन्न आ दिनक चैन सभ खतम। मोन पड़लनि अपन नेनपन। तीन तल्लाक मकान मे अपन सहोदर भाइ-बहिनक अतिरिक्त पितियौत भाए-बहिनक संग धमा-चौकड़ी करब आ बाबी-बाबाक सिनेहक संग बीच-बीच मे कहियो काल भेटैत झिड़की पर रूसब-फूलब आ फेर क्षणहि मे हुनका सभ द्वारा परतारब-बौंसब, सभ किछु आँखिक सोझाँ नाचि गेलनि। मोने-मोन सोचलाह बचपन तँ शानदार बीतल हमर सभ भाइ-बहिनिक। भले ही भौतिक संसाधनक अभाव छलए मुदा लोकक अभाव नहि रहने आनन्दक अभाव नहि रहल। एक्कहि तुरिआक पितियौत भाइ-बहिन सभक संग एकटा स्वस्थ प्रतिस्पर्धाक भाव रहने पढ़बा-लिखबा मे सेहो सभ दिन नीक परफॉरमेंस रहल सभक।

कनिके काल मे चेतना जागृत भेलनि आ वर्तमान मे पटकि देलकनि। एहि स्थिति कें कोना सम्हारल जाए, ताहि पर ध्यान केन्द्रित करैत सोचए लगलाह। एहिठाम सभ बात-व्यवस्था भ' गेल अछि। आब असले साँप छुछुन्दर बला स्थिति बुझा रहल छलनि धीरज कें। फँसल सन स्थिति। ने सभदिन लेल माए-बाबू एहिठाम आबि सकैत छलथिन आ ने सभटा छोड़ि छाड़ि हिनकर सभक वापसी ओतेक सहज छलनि। भारी समस्या।

'थेरेपिस्ट'क बात बेचैन कएने छलनि। कहाँ सँ 'ज्वाइन्ट फैमिली'क व्यवस्था करु आद्याक मानसिक विकास लेल। चारू भाए, चारि ठाम अपन संसार बसा चुकल छथि। दस दिन लेल तँ जुटब संभवे नहि होइत छनि, छओ मासक तँ बाते की कएल जाए। दिमाग काज नहि क' रहल छलनि। की करी, कोना एहि समस्या सँ बहराइ। मोन मे की-कहाँ आबैत रहैत छलनि ''डॉलरक चमक सँ तेहन ने

आँखि चोन्हराए गेल, जे आगाँ पाछाँ किछु सोचबे नहि कएलहुँ'' एहि चकाचौंध मे की पाओल की गमाओल, तकर लेखाजोखा करए लगलाह धीरज।

दिमाग मे एक्कहि बात घूमैत रहैत छलनि, केओ करोड़ो टाका खर्च क' कोनो बस्तु आनए कहि दितए आद्याक लेल, तँ से हमर साध्य छलए मुदा ई 'ज्वाइन्ट फैमिली'...ओह...माथा हाथ ध' क' बैसि रहलाह धीरज। स्नेहा लगे मे छलीह। मोन द्रवित भ' गेलनि, बुझएबाक प्रयास केलनि—''एना मोन नै छोट करु। भगवानक देल ई समस्या अछि, भगवाने किछु रस्ता देखओताह। सभ ठीक भ' जाएत। विश्वास राखू देवता पितर पर।''

—''हँ...विश्वास तँ अछिए। मुदा प्रयास तँ अपनहि ने करए पड़त। हाथ पर हाथ ध' बैसल नै ने रहि सकैत छी। पाँच बरखक भ' जेतीह आद्या, तँ 'क्लास वन' मे 'एडमिशन' हेतनि। ता धरि एतबा सुधार भ' जाइन जे नॉर्मल बच्चा सभक संग पढ़ाइ क' सकतीह। 'स्पेशल चाइल्ड' बला स्कूल मे नै पढ़ाएब हम अपन आद्या कें।''

—''हँ...तँ 'थेरेपी' लेल बजा लिअनु 'थेरेपिस्ट' कें।''

—''थेरेपी' पर जखन 'थेरेपिस्ट' कें अपनहि नै भरोस छनि, तँ केहन 'थेरेपी'...?''

—''तँ आर की करब?''

—''छओ मास लेल अपना देश चलैत छी। 'वर्क फ्रॉम होम'क सुविधा भेटि गेल तँ ठीक। नहि तँ देखल जेतैक कोनो दोसर कम्पनी। एतेक दिनक 'एक्सपीरिएंस' अछि, काज भेटब कठिन नहि होएत। अहाँ निश्चिन्त रहू। एखन मात्र आद्याक स्वास्थ्यक विषय मे सोचबाक समय अछि। मधुबनीए रहब। पित्ती-पितिआइनि आ पितियौत भाए-बहिन नै तँ कम-सँ-कम दादी-बाबाक संग तँ भेटतनि आद्या कें। हमर माए सँ नीक कोनहुँ 'थेरेपिस्ट' नै भेटि सकैए एहि संसार मे। सभ 'थेरेपिस्ट' फेल भ' जाएत, हमर माएक सोझाँ। हमरा विश्वास अछि, दादीक संग रहि निश्चित ठीक भ' जएतीह अपन आद्या रानी।'' एतबा बाजैत-बाजैत आवाज भर्राए लगलनि धीरजक। मूड़ी नीचाँ गोंति लेलाह ओ।

लग मे बैसलि स्नेहा धीरजक पीठ हँसोथए लगलीह। धीरजक पीठ पर स्नेहाक स्नेह भरल ई हाथ जेना कहि रहल छलनि—''हम अहाँक संग छी। चिंता नै करु। सभ ठीक भ' जाएत।''

जानवर

आइ काल्हि युवा वर्ग मे ''लव यू'' ''मिस्स् यू'' सन शब्द-युग्मक उपयोग खूब चलन मे देखि रहल छी। ताही पर मोन पड़ल अपन कोलकाता प्रवासक ओ डेढ़ बरख।

लगभग तीस बर्ख पहिलुक ई खिस्सा अछि। सलिमपुर रोड, ढाकुड़िया मे एकटा कोठरी आ भनसाघर, बाथरूम युक्त डेरा लेने छलहुँ हमसभ। हमसभ, माने हम दुनू प्राणी आ हमर डेढ़ बरखक बालक अविनाश। तीन गोटे रहैत छलहुँ ओहि डेरा मे। डेरा एहेन छलए जकर 'एन्ट्रेन्स' अलग छलए। एक टा पातर तीन फीट चौड़ा दस फीट लम्बा गली छलैक, तकर बाद हमर कोठरीक केबाड़ पड़ैत छलैक। मकान मालिकक 'एन्ट्रेन्स' दोसर दिस सँ छलैक।

हमर बौआ डेढ़ बरखक भ' गेल छलाह तखन। तथापि हुनका अन्न खेबाक ततेक हिस्सक नहि लागल छलनि। माने खाए नहि चाहैत छलाह अन्न। दूधे पर पोषित भ' रहल छलाह। किछु फलक जूस बना क' पिअबियनि हम, सेहो जबरदस्तीए। प्रेम सँ मात्र दूधे टा पिबथि बौआ हमर। भरि दिन मे दू लीटर गायक दूध पीबि जाइथ। बोतल सँ दूध पिबाक तेहेन अभ्यास लागि गेल छलनि, जे लाख प्रयासक उपरान्तहु छुटि नहि रहल छलनि। एकाध घंटाक अन्तराल पर दूध छानि क' बोतल मे देमय पड़ैत छलए हमरा। जतेक बेर दूध छानी तँ छन्ना के उलटि दियै दरबज्जा पर, चौखटि कें बाहर। ई सोचि जे चुट्टी पिपरीक आहार भ' जेतैक। मुदा दुइए-चारि दिनक बाद देखलहुँ, जे ओहि छाल्ही पर एकटा बिलाड़ि धपायल रहए लागल। नित्य प्रति ओहि बिलाड़ि कें अपना दरबज्जा पर देखि बौआ बड्ड हर्षित होइथ। बौआक हर्ष देखि हमरो बिलाड़िक प्रति अनुराग बढ़ए लागल दिनानुदिन। आब हम दूधक छाल्ही, एक टुकड़ी रोटी पर ध' क' देबए लगलहुँ ओहि बिलाड़ि कें। ओ प्रेम सँ खा जाए छाल्ही-रोटी। भरि दिन मे कइअक बेर ई क्रम चलैत रहैत छलए। एहि तरहें ओ बिलाड़ि पोसा गेल जेना। अनायासहि।

सोम सँ शनि दिन धरि तँ बौआक पिता अतुल जी भरि दिन ऑफिसे मे रहैत छलाह, ओ ई तमाशा देखि नहि पाबैत छलाह। मुदा रवि दिन क' देखथि भरिदिन पेटकान धेने बिलाड़ि कें दरबज्जा पर बैसल। एकाध रवि धरि तँ ततेक गम्भीरता सँ नहि लेलनि एहि बात कें। मुदा तेसर रविक प्रात भेने, माने सोम दिन सेहो कोनो छुट्टीक दिन पड़लनि। लगातार भरि-भरि दिन धड़पड़नि देने देखलाह बिलाड़ि कें अपना दरबज्जा पर, दुनू दिन। सोम दिन साँझुपहर अचानक बड़ी जोर सँ बिगड़लाह हमरा पर, ''ई केहेन बतहपनी अछि अहाँक? बिलाड़ि चीता आ बाघक प्रजातिक जीव होइत छै, एतबो नहि बूझल अछि की? मांसाहारी जीव होइत छै, से तँ बूझल हैत ने? अहाँ एना केना पड़िका क' रखने छी एकरा। आ ताहि पर सँ बौआ सेहो ओकरा लेल बेकल रहैत छथि। ई कोन ग्रह बेसाहि लेलहुहें...अएँ... बौआ कें एकदम नै जाए दिअनु बिलाड़िक लग मे।''

हुनका क्रोधित देखि हमर सिट्टी-पिट्टी गुम! कारण ओ एहि तरहें खिसिआ क' कहियो बाजल नहि छलाह हमरा पर। तीन बरखक दाम्पत्य जीवन मे हुनकर छवि एकटा शान्त चित्त व्यक्तिक बनल छलए हमरा मोन मे। बहुत खराब लागि रहल छलए हमरा। हुनका एतेक क्रोध दिऔलियनि हम, से सोचि। मुदा हम जानि-बूझि क' किछु नहि क' रहल छलहुँ। किछु घटना जीवन मे स्वतः होइत चलि जाइत छैक। किछु की...अमूमन सभ किछु जीवन मे अनायासहि तँ होइत छैक। की... किछु गलत कहि रहल छी हम? ऐं...?

हुनका सोझाँ कोना-की सफाइ देल जाए...कोना अपन एहि हरकत कें सही साबित करी... दिमाग काज नहि क' रहल छलए हमर। कोना हुनका आश्वस्त करी, जे सभ किछु ठीक रहत, बिलाड़ि बहुत नीक अछि, एकदम शान्त प्रवृत्तिक अछि। हम अपन एहि विश्वास कें हुनका सोझाँ स्थापित कोना करी, से कोनो उपाए नहि सूझि रहल छलए। किंकर्तव्यविमूढ़ बला स्थिति छलए हमर।

ताहि दिन हाथे-हाथ मोबाइल छलैक नहि, जे फटाक सनि गूगल पर सर्च क' लितहुँ ''बिल्ली पालने के फायदे'' आ हुनका देखा क' हुनकर बोलती बन्द क' दितियनि। तत्क्षण बस अपन गलती स्वीकार क' हुनका सोझाँ 'भीगी बिल्ली' बनबाक इतर हमरा लग आरो कोनो चारा नहि छलए। मुदा मोन मे घूमैत रहल बात।

ओना हम अपन बात उपर राखबा लेल अनेक तर्क द' सकैत छलियनि मुदा तखन अपन गलती स्वीकारि स्थिति कें सामान्य करब आवश्यक छलए। मोन स्थिर देखि अपन बात राखब से मोने मोन नेआरि लेने छलहुँ हम।

हमर नैहर मे रंग-बिरंगक पत्रिका किनबाक चलन रहल छलए। असल मे हमर माँ पढ़बाक बड्ड सौखीन छलीह। धिया-पूता लेल चंपक, नंदन, अमर चित्र कथा सभ आबए घर मे आ माँ अपना लेल सरिता, मनोरमा, गृहशोभा आदि लेल करथि। पिताजी अखबारे टा पढ़थि। हमरा मोन पड़ल कनि छेटगर भेला पर सरिता उनटाबी-पुनटाबी हमहूँ, तँ ओहि मे पौराणिक कथा सभक धज्जी उड़बैत सन लेख सभ भेटैत छलए। हमरा विश्वास छलए माँ ओ लेख सभ पढ़ैत रहल छलीह, माँ कें अवश्य बूझल हेतनि बिलाड़िक संदर्भ मे सभ बात।

ओ लैंडलाइन के जमाना छलैक। एक दिन एस टी डी बूथ पर जाए माँ सँ गप्प करैत, हाल-चाल पुछला उत्तर पुछलियनि, ''माँ यै...एकटा बात बूझल अछि की? बिलाड़ि पोसब अशुभ मानल जाइत अछि की? माने बिलाड़ि दरबज्जा पर सदिखन बैसल रहए से अपशकुन बला बात भेल की?''

एस टी डी बूथ पर बतिआइत काल 'बिल'क चिंता सेहो रहैत छलैक लोक कें। जल्दी-जल्दी सभ सवाल दागि देबा लेल धड़फड़ाएल छलहुँ हम।

ओमहर सँ माएक उतारा आएल, ''देखियौ बहुत रास शुभ-अशुभ बला बात मे मतैक्य नहि देखाएत। कतहु शुभ कहल जाइत छैक, कतहु अशुभ। पौराणिक कथा सभ मे बिलाड़ि कें अलक्ष्मी देवीक वाहन कहल गेल अछि। लक्ष्मी जीक बहिन छथि 'अ'लक्ष्मी, जे दरिद्रता, दुर्भाग्य आ नकारात्मकताक प्रतीक छथि। कहबाक माने बिलाड़िक घर मे आएब-जाएब दरिद्रता आ दुर्भाग्यक आएब-जाएब भेल। ओना कतहु कतहु बिलाड़ि कें देवी 'षष्ठीक वाहन' सेहो मानल जाइत अछि जे धिया-पूताक रक्षक देवी मानल जाइत छथि। मुदा बिलाड़ि पर एतेक शोध किएक करबाक अछि अहाँ कें यै ममता दाइ...''

हम बात कें आरो लम्बा खींचि 'बिल' नहि बढ़ाबए चाहैत छलहुँ। कहलियनि, ''किछु विशेष नहि...बस ओहिना दिमाग मे घूमि रहल छलए...तैं पुछलहुँ।''

माएक बात सँ किछु तसल्ली तँ भेल हमरा। मुदा हम एखनो धरि हुनका कन्विन्स करबाक स्थिति मे नहि छलहुँ। ओ समय-समय पर डाँटैत रहलाह आ एमहर हमर रोटी पर छाल्ही धरब आ बिलाड़िक दरबज्जा पर आएब-जाएब चलैत रहल। हम निश्चिन्त छलहुँ जे ओ बिलाड़ि कखनो घरक भीतर तँ पैर नहि धरैए ने! केबाड़ी सँ बाहर, माने चौखटिओ सँ बाहर आबि क' बैसि जाइत छलए, बस। बौआक उठबाक प्रतीक्षा करए। ओकरा बूझल छलैक जे बौआ उठितहि अपने ओकरा लग आबि क' बैसबे करताह। आ तकरा बाद बौआ कें बोतल मे दूध भेटतनि। ताही संग दूधक छाल्ही आ रोटी ओकरो भेटबे करतैक। ई एकटा रुटीन बनि गेल छलए हमरा घरक।

एहि रुटीन प्रक्रिया मे हमरो ओहि बिलाड़िक प्रति आत्मीयताक संग एहेन विश्वास स्थापित होइत गेल जे ओ हमरा बौआ कें कोनो तरहक नोकसान/कष्ट नहि पहुँचा सकैए कहियो। हमर बौआ आब ओकर लगीच जाए खेलाए लागथि, ओकर रोइयाँ धरि नोचए लागथि कखनोकाल। मुदा ओ बिलाड़ि कहियो पलटि क' हमर बौआ कें एकटा खरोंच धरि नहि देलक। पति समय-समय पर हमरा हड़काबैत अपन पतिधर्म आ पिताधर्मक पालन मे लागल रहलाह। हमरा माथ पर मानव-धर्मक पालन करबाक भूत सवार रहल। पतिक बेर-बेर ई कहब, ''बच्चा कें ओकरा सँ दूर राखबाक चाही ओ बच्चा कें हानि पहुँचा सकैत अछि, आखिर अछि तँ ओ एकटा जानवरे ने...'' हमर मोन-मस्तिष्क कें क्षण भरि लेल प्रभावित तँ करए मुदा फेर ओहि बिलाड़ि कें देखितहि माया मे पड़ि जाइ। दरबज्जा पर बैसलि बिलाड़ि कें खाए लेल नहि दियैक किछु, ओकर अनादर करियैक, से हमरा बुते नहिए भेल आखिर।

मास दिनक बाद दुर्गा पूजा आबए बला छलए। बौआ कें देखबाक प्रबल इच्छाक तहत हमरा नैहर सँ बहुत आग्रह भ' रहल छलए, दुर्गा पूजा मे गाम आबि जाए लेल। पति महोदयक सोझाँ बात रखलहुँ, ''माँ के चिट्ठी आएल अछि। बड्ड जोर द' क' बजा रहल छथि गाम। हमरा गामक दुर्गा पूजा बड्ड नीक होइत अछि। चलू ने...अहूँ देखि लेब। हम आ बौआ दू मास रहि जाइ ओहिठाम, से मोन छनि माँ-पप्पाक। सभ बेकल छथि बौआ कें देखबा लेल। बौआ कें खेलाबै लेल। बौओ कें नीक लगतनि। नाना-नानी, मामा-मौसीक संग भेटतनि।'' हम नॉन स्टॉप बाजिते रहितहुँ, जँ ओ बीच मे नहि टोकितथि।

—''आ हमर की? बौआक बिना हमरा घर काटए दौड़त से?''

—''की करू? लिखि दिअनि चिट्ठी? नहि संभव अछि?''

—''अरे रुकू न'...सोझे जज जकाँ फैसला की सुनाबए लागैत छी अहाँ... सोचबैक...विचारबैक...टिकट अवेलेबल अछि कि नहि से पता करबैक...मोन स्थिर राखू अहाँ...''

हमर ठोर पर मुस्की आबि गेल। आ इएह मुस्की काज केलक प्रायः। पिघलि गेलाह ओ। दुइए-तीन दिनक बाद ऑफिस सँ अबितहि हावड़ा-दानापुर ट्रेनक टिकट हाथ मे ध' देलनि। कहलनि, ''भगवानक इच्छा छलनि जे बौआ एहि बेरक दशमी नानीगाम मे मनाबथि। टिकट अवलेवल छलए दानापुर बला ट्रेनक। दरभंगा बला ट्रेन मे वेटिंग लिस्ट नमहर छलए। सेकेंड एसी, थर्ड एसी सभ मे।''

—''हँ...जँ-जँ पूजाक समय लगचाएत, टिकटक समस्या तँ हेब्बे करत।''

—''हँ...यै हमर बुधियारि अर्द्धांगिनी जी।'' कहैत जोर सँ हँसि देलनि अतुल जी।

बाइसम दिनक टिकट भ' गेल छलए। हमर उत्साहक ठेकान नहि। माँ-पप्पा, भाए-बहिन लेल की सभ ल' क' जाइ, से विचारब आ फेर ओकर क्रियान्वयन मे अस्त-व्यस्त, कोन बाटे जेबाक दिन आबि गेल बुझेबे नहि कएल। जेबाक तैयारी करैत काल तँ बिलाड़ि लेल सोचबाक सोह नहि रहल मुदा डेरा सँ विदा होइत काल ओकरा चौखटि लग नहि, गलीक बाउंड्री वॉल पर चढ़ल देखि हृदय ममता सँ भरि गेल। आब ओ भरि-भरि दिन केबाड़ी बन्द देखत। कहाँ कहाँ भटकैत रहत। ओकर एकटा स्थिर ठिकाना भ' गेल छलैक हमर दरबज्जा। आ बुधियार केहेन, विदा होइत काल गेट पर नहि बैसि बाउंड्री वॉल पर छरपि क' बैसल छलए।

स्टेशन पहुँचैत-पहुँचैत ध्यान नैहर दिस चलि गेल छलए हमर। फेर ट्रेन पर बैसलाक बादो आ पटना सँ गाम जाइत, गाड़ी मे बैसलि तँ मोन पहिनहि नैहर पहुँचि चुकल छलए। आ पहुँचलाक बाद तँ दोसरे दुनिया मे विचरण करए लगलहुँ हम आ बौआ, दुनू गोटे। ओहि सिनेही बिलाड़ि दिस ध्यान किन्साइते कखनो जाए।

मुदा एमहर कोलकाता मे ओ बिलाड़ि, बौआ लेल व्याकुल। से कहलनि बौआक पिता अतुल जी। जखन ओ हमरा दुनू माए-बेटा कें गाम मे छोड़ि वापस अएलाह ड्यूटी ज्वाइन करबा लेल तखन देखलाह बिलाड़िक व्याकुलता। पहुँचनामा चिट्ठी जे आएल हिनकर, ताही मे लिखने छलाह। हुनकर लिखल अक्षरशः स्मरण अछि हमरा, ''अहाँक नबका प्रेमी बिलाड़ि तँ ओहिना दरबज्जा पर धरपड़नि देने रहैए।''

जखन कि ओहो दस दिन रहि क' घूरल छलाह कोलकाता। मुदा ओहि बिलाड़िक हृदय सँ हम आ हमर बौआ नहि बहरा सकल छलहुँ प्रायः।

पनरह-बीस दिन ड्यूटी क' ओ पुनः सुखराति सँ छठि धरिक छुट्टी ल' गाम अएलाह। तखन गप्पक प्रसंग मे ओहि बिलाड़िक चर्चा भेल। ताहि पर ई शुरु भ' गेलाह, ''अरे की कहू ओ तँ अकच्छ केने छलए हमरा...अहाँ कें कहैत रहैत छलहुँ... नै पड़िकाउ... मुदा अहाँ आ अहाँक ममता...दैब रौ दैब...''

—''एहेन की क' देलक से?''

—''पहिले घरक भीतर नै आबैत छलए, से आब घर सँ ल' क' भनसाघर के कहए, बाथरूमो खुजल देखैए तँ टहलि आबैए। सौंसे घर धुँगि-धाँगि क' बराबर केने रहैए।''

—''ठीके यौ...! बुझियौ...कोन जन्मक कोन संबंध छै ओकरा अपन अविनाशसँ से नै जानि...ओ बौआ कें ताकैत हैत सभतरि।''

—''हम कहि रहल छी आम, अहाँक दिमाग बुझि रहल अछि इमली...हम ओकरा सँ अकच्छ भेल रहैत छी आ हिनका जन्म जन्मान्तरक संबंध सूझि रहल छनि। बताहि भ' गेल छी अहाँ ओहि बिलाड़िक पाछाँ...!''

—''अच्छा ठीक छै बताहिए सही...अहाँ शान्त रहू...थम्हू हम जलखइ ल' क' आबैत छी।''

हमरा बुझबा मे आबि गेल जे हम कतबो कोशिश क' लेब ''एम बी ए''क डिग्रीधारी अतुल जी किन्नहुँ नहि बुझि सकताह ओहि बिलाड़िक सिनेह बौआक लेल आ हमर मनभाव ओहि बिलाड़िक लेल। तैं बात बदलि ओहिठाम सँ घसकि गेलहुँ।

दू मासक बाद गाम सँ कोलकाता घुरलाक बाद फेर अठबारे, माने सभ रविए-रविए हमरा दुनू प्राणीक बीच ओहि बिलाड़ि के ल' क' बहसबाजी चलैत रहल।

एक दिन साँझ मे हुनकर ऑफिस सँ घुरलाक बाद हम दुनू प्राणी संगे जलखइ करैत समाचार देखि रहल छलहुँ। तखनहि स्क्रीन पर एकटा ''आया''क करतूत बला वीडियो आएल। जाहि ''आया''क भरोसे अपन नेना के छोड़ि जाइत छलथि नेनाक कामकाजी माए-बाप, सएह ''आया' ओकर कोना दुर्दशा क' रहल छलैक तकर सी सी टी वी फुटेज प्रसारित भ' रहल छलए। एकटा मनुक्खक, एकटा स्त्रीक एहेन निर्दयता देखि हमरा अपन सहृदय बिलाड़ि मोन पड़ि गेल।

हम तपाक सँ बाजि उठलहुँ, ''हे भगवान...केहेन क्रूर महिला छै...देखियौ त. ..एहेन-एहेन मनुक्ख सँ बेसी विश्वासपात्र तँ हमर बिलाड़ि अछि। जकरा अहाँ बेर-बेर 'जानवर' कहैत रहैत छियैक। जानवर ओ अछि कि ई महिला...सोचबैक कनि...जे एहि तरहें अबोध बालक कें प्रताड़ित क' रहल अछि... जखन कि जानवरक प्रकृति छैक शिकार करब मुदा ओ शान्त रहैए चाहे बौआ कतबो अकच्छ क' क' ध' देथिन ओकरा।'' एतबा बजिते छलहुँ आ कि भनसाघर सँ बौआक चिचिआएब सुनलहुँ। जलखइ बला छिपली हाथ मे धेनहि भनसाघर दिस दौड़लहुँ। पीठे लागल बौआक पिता सेहो दौड़लाह।

समाचार देखैत सोहे नहि रहल, कखन बौआ हमरा पीठ पर सँ ससरि ओमहर भनसाघर दिस भागि गेल छलाह।

देखैत छी बौआ अपन तरहत्थी भनसाघरक केबाड़ीक निचाँ फँसा लेने छथि। फर्श आ केबाड़ीक निचला भागक बीच अपन चारू आँगुर घुसिऔने, अंगूठा

बाहर। ओहि डेराक केबाड़ीक पल्ला सभ फर्श कें छुबैत सन छलए। माने गैप नहिए जकाँ छलैक। आँगुर घोसिया तँ लेलाह बौआ मुदा निकालल नहि भ' रहल छलनि। असल मे निकालबाक प्रयास करैत काल आँगुर सभक बिचला पोर कनि उठा दैत हेताह, तैं आँगुर निकलि नहि रहल छलनि। जहिना घोसिऔलनि, तहिना निकालितथि तँ आराम सँ निकलि जइतनि। हम जा क' सएह केलहुँ आ बौआक आँगुर सभ पर फूकि क', चूमि क', केबाड़ी के थोपिया क' बौआ कें फुसलौलहुँ।

बौआ जखन सँ चलए लागल छलाह, किछु ने किछु काण्ड करिते रहैत छलाह। जएह पौलनि सएह हाथ मे उठा क' सोझे मुह मे ध' लेब। कोनो बस्तु छू लेब, खसा देब, ई सभ काण्ड सामान्य बात छलए।

एक दिन हम कपड़ा पर प्रेस करैत छलहुँ। लगे मे बौआ सेहो अपन खेलौना सँ खेला रहल छलाह। जा धरि हम शर्ट के बाँहि हाथ सँ सरिआ रहल छलहुँ प्रेस करबा लेल, ता गरम प्रेस पर हाथ ध' देलनि बौआ। कहबाक माने बालसुलभ अगत्तीपना करिते रहैत छलाह रहरहाँ हमर अविनाश बाबू।

एहि तरहक अगत्तीपना बला काण्ड सभ सँ राहत रहैत छलए हमरा, जखन बौआ बिलाड़िक संग ओझराएल रहैत छलाह। एकरा हमर स्वार्थ कहल जा सकैए, बौआ कें बिलाड़िक संग रहबाक छूट देबाक पाछाँक। मुदा एकसरि रहैत बच्चा पर चौबीस घंटा नजरि राखब कठिनो तहिना लागैत छलए। विवशता सेहो छलए हमर।

मुदा कतबो स्वार्थ कि विवशता रहैत, जँ ओहि बिलाड़ि पर विश्वास नहि रहैत हमरा, तँ किन्नहुँ नहि छोड़ितियनि हम बौआ कें कनिको काल लेल ओकरा संग। किएक एतेक विश्वास स्थापित भ' गेल छलए, भगवान जानथि। जेना सिक्स्थ सेंस काज क' रहल छलए...की..की..नहि जानि।

मुदा ओ बिलाड़ि एक दिन सिद्ध क' देलक जे हम ओकरा पर विश्वास क' कोनो भूल नहि क' रहल छलहुँ। ओ बिलाड़ि वास्तव मे विश्वासक पात्र छलए। ''हमर बौआ अविनाश सँ ओकर पूर्व-जन्मक कोनो संबंध तँ ने छलैक'' हमरा मोन मे कइअक बेर ई बात आबैत रहैत अछि एखन धरि।

असल मे बौआक प्रति ओकर प्रेम, बौआक लेल जान न्योछावर करबाक हद धरि देखाएल एक दिन। जँ ओ दरबज्जा पर नहि रहैत तँ नहि जानि की होइत ओहि दिन। ओकर ओहि समर्पण-युक्त प्रेमक सोझाँ हमरा ओहि बिलाड़िक लेल कएल अपन कर्तव्य तुच्छ सन बुझा पड़ल। हम तँ तेहेन किछु नहि करैत छलहुँ ओकरा लेल। बस ओकरा आगाँ एकटा रोटीक टुकड़े तँ ध' दैत छलहुँ ने! मनुक्ख रहैत तँ पहिले इएह सोचए लागैत, ''ई की केलनि हमरा लेल जे हम हुनका लेल

ठाढ़ रहबनि'' मुदा ओ तँ 'जानवर' छलए ने...ओकरा ओतेक सोचबाक शक्तिए कहाँ छलैक। ओ तँ बिनु सोचने-विचारने जी-जान लगा देलक हमर बौआ लेल। बौआक प्रति ओकर प्रेम अनमोल छलैक।

एकदिन साँझु पहर सभदिनाँ जकाँ बौआ बिलाड़ि संगे मगन छलाह खेलाए मे। कोनो काजे हम क्षण भरि लेल भनसाघर चलि गेलहुँ बौआ कें बिलाड़िक संग छोड़ि क'। आ जखने बहरएलहुँ देखैत छी बिलाड़िक मुह मे छोटे सन साँप! साँप कें मुह मे दबोचने ओ गली सँ बाहर तेजी सँ भागल जा रहल छलए। ग्राउंड फ्लोर पर डेरा रहने, साँप कीड़ाक प्रकोप छलए ओहिठाम।

एतेक दिन सँ सुनल छलए जे बिलाड़ि मूसक भक्षण करैत अछि, साँपक भक्षण करबाक सहास कोना आ किएक कएलक ओ बिलाड़ि, अचम्भित छलहुँ हम!

पुनरावृत्ति

पल्लवी घर मे प्रवेश करितहि धम्म द' सोफा पर बैसैत, माए दिस ताकैत धाराप्रवाह एक्कहि साँस मे सभ कहि गेलथि, ''प्रफुल्ल हमर दुनू बहिनिक टिकट बुक कराए लेलनि अछि। पनरहम दिनक टिकट अछि, फ्लाइटक। एतेक कम समय मे कोना सभ तैयारी होएत...हम बैंक मे छलहुँ तखनहि हुनकर कॉल आएल छल। हमरा काज सँ पलखति नहि भेल एक्कहु मिनटक, तैं अहाँ कें कॉल नहि क' सकलहुँ हम। ओहिठाम हैदराबाद मे एक टा नीक टूबीएचके डेरा भेटि गेल छनि। आब हुनका बाहरक खेनाइ खा-खा क' मोन उबिआ गेल छनि। बिआहक उपरान्तहुँ छओ मास सँ हुनका बैचलर बला जीवन जीबाक सजाए भेटि गेलनि, ताहि लेल हमरा पर बिगड़ि रहल छलथि ...''

पल्लवीक बात बिच्चहि मे काटैत माए सुनीता बाजि उठलीह ''ऐं... तँ एहिलेल अहाँ पर किएक बिगड़ताह, सभ टा जानैत बुझैत बिआह कएने छलथि ने ...''

—''हँ से तँ बूझल छलनि जे एहि प्रक्रिया मे समय लगतैक। बिआहक बाद जाहि शहर मे पतिक पोस्टिंग रहैत छै, ओतहि पत्नीक पोस्टिंग करबाक प्रावधान छै मुदा ई एतेक लंबा प्रक्रिया हेतैक से नहि बूझल छलनि। आब मोन दिक् भेल छनि।''

पल्लवी आ प्रफुल्ल संग-संग एक्कहि महाविद्यालय सँ स्नातक केलनि। तदुपरान्त संग-संग बैंकिंग केर तैयारी कएलनि। संयोग एहन जे प्रथमहि प्रयास मे दुनूक सेलेक्शन ''पीओ''क पोस्ट लेल भ' गेलनि। दुनूक आनन्दक कोनो सीमा नहि। देव दहिन छलथिन, जे-जे कामना छलनि, से सभटा पूरा होइत गेलनि। आब दुनू गोटे कें प्रतीक्षा छलनि मात्र ज्वॉनिंग लेटरक। तत्पश्चात बिआहक दिन तय कएल जाएत आ नवजीवन मे प्रवेश कएल जाएत से सोचल छलनि पहिनहि सँ।

रंगरूप सँ ल' क' शैक्षिणिक योग्यता आ बात व्यवहार, सभ तरहें दुनूक मेल बेजोड़, केओ ककरो सँ कम नहि, ने रूप मे, ने गुण मे। तैं दुनू गोटाक

माता-पिताक सहमति सेहो पहिनहि सँ भेटि चुकल छलनि। कोनो पक्ष कें कोनो टा आपत्ति नहि। माने व्यवधानक कोनो बाते नहि छलनि।

प्रतीक्षा समाप्त भेलनि, बेरा-बेरी दुनूक ज्वॉनिंग लेटर अएलनि। मुदा ई की? पल्लवीक पोस्टिंग अपनहि शहर दरभंगा आ प्रफुल्लक पोस्टिंग हैदराबाद द' देल गेल छलनि। आब दुनू चिंता मे पड़ि गेलथि। बहुत सोच विचारक उपरान्त पल्लवी-प्रफुल्ल आ दुनूक माता-पिताक विचार भेलनि जे यथाशीघ्र बिआह भ' जाए दुनूक, ताही मे कल्याण अछि। कारण बिआहक बाद एक्कहि शहर मे पोस्टिंग सेहो भेटि जेतैक, एहेन प्रावधान छैक।

बेस! शुभ शुभ क' बिआह संपन्न भेलनि, पल्लवी संग प्रफुल्ल कें।

पल्लवीक छोट बहिन पँखुड़ी, स्नातक प्रथम वर्षक छात्रा, पल्लवी सँ दू बरखक छोट मुदा बान्ह काट सँ बुझाए जेना पँखुड़ी पैघ होइथ आ पल्लवी छोट, कारण पल्लवीक देह-दसा माए सन कनि छोट-खाँट आ पँखुड़ी बाप सन लम्बा। पातरि छितरि छरहर पँखुड़ीक सुनरताइ एहेन (छलकैत) जेना पानि पर तेल छह छह करैत हुअए।

पल्लवी आ पँखुड़ी सहोदरा होइतहुँ, बहिन नहि एक दोसराक संगी सन रहैत छलीह। छोट-सँ-छोट गप्प एक दोसराक संग साझा करब, हँसी ठिठोली करब, जेठ-छोटक कोनो बन्धन नहि। मात्र स्वच्छन्द मित्रताक भाव। माए सुनीता दुनू बहिनिक सिनेह देखि मंत्रमुग्ध होइत रहैत छलीह।

सुनीता एक कुशल गृहणी, रूप आ गुण दुनू कें जँ दू पलड़ा पर राखल जाए तँ दुनू एकदम बरोबरि। स्वामी आ दुनू धिया पल्लवी-पँखुड़ीक लेल पूर्णतः समर्पित। हुनकर संसार बस एतबे टा छलनि।

पल्लवी आ माएक वार्तालाप सुनि भीतर बला कोठरी सँ पँखुड़ी बहार भेलीह ''केहेन टिकट, ककर टिकट केर बात भ' रहल छल?''

—''अपन दुनू गोटाक, हैदराबाद जेबाक टिकट बुक भ' गेल अछि।''

—''अर्रे वाह! हमरो? ओझाजी कतेक नीक छथि, हुनकर कृपा सँ हमहूँ हैदराबाद घूमि आएब, ओहुना एखन ऑनलाइन क्लासक फेरा मे घर मे जहल जकाँ बन्न भ' क' रहि गेल छी।'' पँखुड़ीक प्रसन्नताक कोनो सीमा नहि छलनि।

माए सुनीता कनि तमतमाइत बजलीह—''मुदा टिकट बुक करएबा सँ पहिने एक बेर ओझाजी कें हमरा सभ सँ विचार त' पुछबाक चाही छलनि।''

—''विचार पुछबाक कोन बेगरता...एखन पढ़ब लिखब तँ घरहि सँ भ' रहल छनि पँखुड़ीक, तँ जेहने एहिठाम रहने, तेहने ओहिठाम। आ नब जगह रहत, हमरो

सभ कें नीक लागत पँखुड़ीक रहने। संगहि कनि मददि सेहो भ' जाएत घर बसएबा मे'' पल्लवी अपन माएक बातक विरोध करैत बजलीह।

सुनीता बात कें बदलैत बजलीह ''अच्छा छोड़ू ... जाउ आब हाथ मुह धो क' आउ, हम किछु खेबा लेल आनैत छी।''

सुनीता कहबा लेल तँ कहि देलथिन, ''अच्छा छोड़ू'' ...मुदा पँखुड़ीक हैदराबाद जेबाक गप्प रहि-रहि कें झकझोरैत रहलनि। पँखुड़ीक पापा सेहो ऑफिसक काज सँ बाहरे रहथि।

''दुनू बहिन खा लिहें...हम आइ नहि खाएब'' कहि सुनीता सुतए लेल चलि गेलीह।

एकसरि पलंग पर अंटशंट सोचैत, एहि करोट सँ ओहि करोट करैत रहलीह। कोनो नीक बात दिमाग मे नहि आबनि। विवाहोपरान्त एकाध बेर प्रफुल्लक व्यवहार पँखुड़ीक संग अशोभनीय लागल छलनि सुनीता कें जाहि पर पल्लवीक धियान नहि गेल छलनि। पल्लवीक संग पँखुड़ी कें सेहो हैदराबाद ल' जेबाक कोन प्रयोजन? की सोच भ' सकैत छनि प्रफुल्ल कें... सोचैत-सोचैत ओ तीस बर्ख पाछाँ चलि गेलीह।

मोन पड़ि गेलनि मैट्रिकक परीक्षाक सेंटर मधुबनी पड़ल छलनि सुनीताक तँ ओहो अहिना प्रसन्न भेल छलीह, जहिना आइ पँखुड़ी चहकि उठलथि। सुनीता उत्साहित छलीह ई सोचि जे परीक्षाक लाथें मौसी लग रहबाक अवसर भेटत। ओना तँ माए कहियो ल' नहि जाइत छथि। मौसी कतेको बेर कहैत-कहैत थाकि गेलथिन, मुदा संयोग नहिए बनल कहियो। ओतेक टा हवेली सन घर छनि मधुबनी मे। चरिचक्का गाड़ी, ड्राइवर, सभ सुख सुविधा। कहियो देखनहुँ नहि छलथि सुनीता मौसीक घर। मात्र माएक मुहें सुननहि छलीह। माए-बाबुजी कोनो-कोनो काज सँ (डाक्टर-वैद्य, हाट-बजार) जाइत रहैत छलथि कारण सुनीताक गामक सभ सँ लगीच बजार मधुबनीए पड़ैत छलैक। मोसकिल सँ आठ-दस किलोमीटर। मौसी कें अपना बेटी नहि। तीन टा बेटा छलनि। मौसी सेहो बड़ उत्साहित छलीह, परीक्षाक लाथें बहिन-धी आबि क' रहत, बरु किछुए दिनक लेल बेटीक मनोरथ तँ पूरत। मौसी-मौसा सँ अंतिम बेर तीन बरख पहिने नानीगाम मे भेंट भेल छलनि सुनीता कें, ममियौत भाए सभक यज्ञोपवीत संस्कारक क्रम मे।

परीक्षाक तिथि सँ दू दिन पहिनहि रविदिन सुनीता अनुज सतीशक संग मधुबनी लेल प्रस्थान केलथि, जे तखन आठवीं कक्षाक विद्यार्थी छलाह। बहिन कें मौसी डेरा पर छोड़ि सतीश ओहीदिन साँझुपहर गाम घुरि गेल छलाह।

मौसीक ठाठ बाट देखि सुनीता अचंभित छलीह। कतेक रास कोठरी! बड़की टा ओसाराक बाद सटले एक टा कोठरी, जाहि मे मात्र सोफा सेट आ कोना पर एक टा पोथी राखबाक शीशा बला अलमारी (बुकशेल्फ) राखल छल। कोनो सिनेमाक दृश्य सन सजाएल, झाड़ल पोछल कोठरी। किएक नहि रहितैक, मौसीक डेरा पर दू-दू टा स्टाफ चौबीस घंटा खटैत छलनि। ओहि कोठरीक बाद भोजन-भातक लेल बड़की टा डाइनिंग हॉल, जाहि मे छओ कुर्सी बला डाइनिंग टेबल, आ टेबल पर बीच मे सुन्दर सन गुलदस्ता राखल।

जे बस्तु ताहिदिन ककरो-ककरो घर मे रहैत छलै से सभ टा भौतिक सुखक साधन सँ युक्त घर देखैत सुनैत, सुनीताक मोन मे मात्र सोलह बरखक अल्प-बएस रहितहु बेर-बेर ई बात आबि रहल छलनि, 'एकहि कोखि सँ जनमल दू बहिनिक भाग्य मे एतेक असमानता?' प्रारब्ध एकरे कहल जाइत छै बुझाइए! हुनकर माए माटिक चुल्हि पर आँच उसकबैत, धुआँ सँ आँखि नोराइत, डिबिया, लालटेन मे भानस करैत छथि आ एहि ठाम मौसी खट् सनि लाइटर सँ गैस चुल्हा लेसलथि आ चाह बना लेलथि, ने बासन कारी हेबाक चिंता ने लेबा लगेबाक बेगरता।

मौसी सभ घर देखबैत सभ सँ अंतिम कोना बला कोठरी मे ल' गेलथिन सुनीता कें "हैअए देख...ई कोठरी तोरे लेल साफ करौलियौए...आइए...। एहिठाम चैन सँ पढ़ल हेतौक, दिन मे सेहो आ राति मे सेहो। ओमहर सभ टीवीओ देखैत रहत तैयो तोरा कोनो टा व्यवधान नहि हेतौक पढ़बा मे।" पाछाँ-पाछाँ मौसा सेहो आबि गेलथिन कोठरी मे। सुनीताक माथ पर हाथ सोहरबैत कहलथिन "परीक्षाक डर नहि ने मोन मे बुच्ची? किछु दिक्कत होउक तँ हमरा कहिह' हम बुझा देबह। कोनो विषय, हिसाब-तिसाब हुअ' वा विज्ञान मे कोनो समस्या हुअ' ..." मौसाक संग दैत मौसी सेहो बाजि उठलीह "से ठीके कहैत छथुन मौसा, ई तँ सभ विषयक मास्टर छथुन। ओहिना एतेक बड़का हाकिम नहि ने बनलथिन? किछु पुछबाक होउक तँ कहिअहुन मौसाकें।" एतबा कहि मौसी कोठरी सँ बहरएलीह, संग लागल मौसा सेहो।

पहिल दिन कनि असहज सन लागल छलनि सुनीता कें, बड़ी राति धरि निन्न सेहो नहि भेलनि आ ने पढ़हि मे मोन एकाग्र होइन। दोसर दिन सँ सभ किछु सामान्य सन लागए लगलनि, अपन घर सन। पहिल दिनक परीक्षा छलनि तँ मौसी ड्राइवर कें कहि देने छलथिन, सेंटर पर पहुँचा आबए लेल। परीक्षाक उपरान्त घर आनए लेल सेहो कहल छलैक। सुनीता कें एखन धरि सभ टा ओहिना स्मरण छलनि जेना कल्हुके गप्प होइक।

दोसर पेपर तीन दिनक उपरान्त मंगल दिन छलनि। कारण बीच मे रवि पड़ि गेल रहैक। शनि आ सोमदिन कोनो छुट्टी पड़ि गेल रहैक, ईद वा बकरीद तेहने सन। अत्यन्त प्रसन्न छलीह सुनीता ई सोचि जे बीच मे तीन दिन समय भेटल तकर पूरा लाभ उठबैत नीक जकाँ रिवीजन करतीह आ नीक सँ नीक अंक प्राप्त करतीह।

साँझ मे मौसा कार्यालय सँ घुरलाह। चाह जलखइ क' सुनीताक कोठरी मे जाए जिज्ञासा केलथिन ''कोना की परीक्षा मे लिखलह बुच्ची? नरभसएलह नहि ने? कोनो प्रश्न छुटलह तँ नहि?'' तकरा बाद प्रश्नपत्र मंगलथिन। सभ प्रश्न पर पूछताछ करए लगलथिन। सुनीता जतेक परीक्षाभवन मे नहि उलबुकएलीह ततेक घर मे मौसाक सोझाँ, हुनकर प्रश्न सभ सँ उलबुकाएल सन भ' गेलीह। गरा-बकौर लागि गेलनि जेना। ता धरि मौसी सेहो एलीह ओहि कोठरी मे आ मौसा कें जोर सँ डपटलथिन, ''छोड़ि ने दियौ, जे लिखलकै से लिखलकै...आब किएक ओकर मोन दिक् करैत छियै। आब आगाँक लेल पढ़ए दियौ ने शांति सँ। जे परीक्षा भ' गेलै ताहि पर माथा पच्ची क' क' की हेतैक? चलू अहाँ... पढ़' दियौ ओकरा।'' एतबा कहि मौसी, मौसा कें संग नेने अपना कोठरी मे चल गेलीह।

रतुका भोजन लेल सभ हॉल मे आएल आ भोजनक उपरान्त पुनः सभ अपन अपन कोठरी मे चलि गेल। सुनीता अगिला पेपरक लेल दू बजे राति धरि पढ़ैत रहलीह। तकर बाद लागए लगलनि, जेना आँखि मुना रहल अछि। आब पढ़ल नहि होएत, से विश्वास भ' गेलनि तँ पोथी सभ समेटि बाथरूम गेलीह। आँखि मे पानि कें छिच्चा मारलनि। सोचलनि एहि सँ भक खूजत। बाथरूम सँ घुरि अपन कोठरी मे अएलीह तँ देखैत छथि मौसा कें पलंग पर बैसल। अनायास मौसा कें देखि भयाक्रान्त सन भ' गेलीह। मौसाक ताकब पहिले दिन सँ किछु शंका उत्पन्न कएने छलनि सुनीताक मोन मे। जखन-तखन अपन कोठरीक केबाड़ लग आबि हुनकर हुलकी मारब, विशेष रूप सँ जखन मौसी नहाए लेल जाइथ वा पूजा पर बैसल रहथि तखन क' अवश्य एक बेर हुलकी मारि, किछु पढ़ाइक संबंध मे जिज्ञासा करए पहुँचिए टा जाएब, ठीक नहि लागनि सुनीता कें। तीनू मसियौत भाए भोरे स्कूल चलि जाइत छल।

सोलहम बर्ख चढ़ले छलनि सुनीता कें। एतेक बएस धरि ओ पुरुखक रूप मे पिता, बाबा, नाना, पित्ती, मामा, पीसा आ भाए सभ कें सिनेह पाबि पैघ भेल छलीह। एहि सभ सँ भिन्न पुरुखक कोनो रूप होइत छैक, तकर एक रत्ती ज्ञान नहि छलनि। गाम पर बालिका विद्यालय मे पढ़थि, पितियौत बहिन सभ संगे विद्यालय जाइथ-आबथि। विद्यालय सँ आबैत जाइत काल रस्ता मे कोनो-कोनो

छौंड़ा सभ ताकनि मुदा ओ कोनो धियान देमए बला गप्प नहि लगलनि कहियो। गाम घर मे ओहुना आधा गाम तँ दियादे रहैत छैक, किछु भगिनमाने भेलथि। तँ भरि गाम भाए-भैयारी बला हिसाब किताब रहैत छैक। पुरुखक एहि रूप सँ सुनीता पूर्णतः अनभिज्ञ छलथि तथापि मौसाक रंग-ढंग नीक नहि, से अनुमान पहिले दिन सँ लागि गेल छलनि।

मौसा कें अपना पलंग पर बैसल देखि अकबकएलीह सुनीता। मुँह सँ बकारे नहि फुटलनि किछु...दिमाग काज करब बन्न क' देलकनि अनायास। मौसाक ताकब तेहन छलनि जेना ओ निर्वस्त्र छल होइथ हुनका सोझाँ। भरि पाँज पकड़बाक प्रयास केलनि मौसा ''हम तोरा कना देलियह तखन...ताहि दुखें हमरा निन्न नहि भ' रहल छलए। मौसी तोहर फोंफ काटि रहल छथुन आ हम तोरे सोच मे मरल जाइत छलहुँ। तों कह' जे हमरा माफ क' देलह ने?''

सुनीता अपना कें मौसाक बाहुपाश सँ छोड़बैत बजलीह ''की भेल अहाँ कें? ई की क' रहल छी अहाँ? जाउ न' एतए सँ... ''

—''नहि...जा धरि तों कहब' नहि, जे 'माफ क' देलहुँ' ता धरि हम कतहु नहि जाएब।''

—''अच्छा ठीक छै माफ क' देलहुँ, आब जाउ।'' कहि हुनका धकेलबाक प्रयास कएल मुदा मौसाक बलिष्ठ शरीरक सोझाँ सुनीताक ओकादिए की छलनि।

—''ठीके माफ केलह? आ कि झुट्ठे कहैत छह? हम कोना विश्वास क' लिय' हइ दाइ?''

—''ओह...! अहाँ जाउ न' ...हम चिकरि क' सभ कें उठा देबैक...''

—''उठा दहक... हम कहि देबनि जे बुच्ची कें पढ़ैत देखलियै तँ एलहुँ देखए लेल, की पढ़ैए से...''

—''हम गोड़ लागैत छी ...''

—''तों हमर बात मानबह तखनहि हम जाएब.. ''

—''से की?''

—''कहैत छिय'...'' कहैत मर्यादा कें ताख पर ध' नीचता पर उतरबाक प्रयास तँ पूरा कएलनि मुदा सुनीता कहुना कोठरी सँ बहराए पड़ा गेलीह आ बाथरूम मे बन्न भ' गेलीह।

बाथरूमक केबाड़ धएने ठाढ़ि सुनीता सोचए लगलीह...मौसा सन पतित लोक हिम्मत कोना करैत अछि एहन कृत्य करबाक। किनसाइत कुमार्ग पर चलबालेल बस पहिले डेग उठएबा मे देरी लागैत छै एहन प्रवृत्तिक लोक कें। जँ पहिल डेग

उठबैत संकोच नहि भेलैक, तखन फेर दोसर, तेसर आ चारिम, पाँचम डेग स्वतः अनवरत बढ़ैत चलि जाइत छैक प्रायः।

प्रात भेने सुनीता जा धरि सूति क' उठितथि, मौसा कार्यालय चलि गेल छलाह। मोन मन्हुआएल सन देखि मौसी पुछनहुँ छलथिन ''मोन ठीक छौ ने? किछु होइत तँ ने छौ?''

—''नै मौसी... अहाँ कें तँ एहिना लागैत रहैए।''

मौसीक केहन पवित्र मोन, पवित्र सोच, कोना कहितथि मौसाक कुकृत्य केर विषय मे। मौसीक लेल मौसा देवता लोक। केहन भ्रम मे जीबि रहल छथि मौसी से देखि, सुनि मौसीक लेल दयाक भाव मोन मे आबैत छलनि सुनीता कें। ओही दिन बेरुपहर जखन पड़ोसक एक महिला अएलथिन मौसी सँ भेंट करबा लेल, मौसी सुनीता कें सोर कएलथिन। सुनीता दौड़ल आएलि। गोड़ लगलथिन, ओहि महिलाक संग मौसी कें सेहो। मौसी परिचय दैत बजलीह, हमर बहिन-धी अछि, सुनीता... परीक्षा देमए लेल आएलि अछि। हमरा सँ बेसी तँ एकर मौसा धियान राखैत छथिन। बुच्ची नहएलक कि नहि, किछु खएलक कि नहि। कतेक पुरुख कें सासुरक पाहुन नहि सोहाइत छै मुदा एकर मौसा कें से नहि, हुनका हमर नैहरक लोक सेहो ओतबे प्रियगर जतेक अपन भाए-भतीजा आ गौंआँ-घरुआ। मौसाक लेल कहल गेल मौसीक गौरव सँ ओत-प्रोत एहन बात सुनि सुनीता दंग रहि गेल छलीह। विचित्र-विचित्र भाव मोन मे आबनि। मौसीक केहन अंधभक्ति किंवा प्रेमांधता कही, से स्थिति छनि, मौसाक प्रति। ई केहेन पट्टी आँखि पर बान्हिक' बैसलि छथि मौसी जे हुनका वात्सल्यभाव आ वासनाभावक भिन्नता नहि देखाइत छनि। कहुखन लागनि मौसी बकलेल छथि, एहनो कतहु मनुक्ख हुअए।

तीन दिनक उपरान्त फेर परीक्षा छलनि सुनीताक, आब सेंटर पर पहुँचाएब आ फेर घर आनब मौसा स्वयं करए लगलाह। जाहिदिन सुनीताक परीक्षा रहनि मौसा छुट्टी ल' लेल करथि कार्यालय सँ, आ ड्राइवर कें मना क' दैत छलथिन। मौसी कें मौसा पर गौरव दुगुना के कहए कतेको गुणा बढ़ि गेलनि, ई देखि जे हमर बहिन-धीक सुविधाक कतेक धियान राखैत छथि। सुनीता कएक दिन मौसी सँ जिद्द करए, ''अहूँ चलू न' सेंटर पर, सेंटर देखि आएब, हमरो नीक लागत'' मुदा मौसी कें अपन स्नान धिआन, पूजा पाठक बहन्ना...''अनेरे की बौआए लेल जाउ हम सेंटर। सेंटर देखि हम की करब बाउ। हमरा कोन परीक्षा देबाक अछि आब जीवन मे हइ बुच्ची'' इएह सभ कहि मौसी टालि दैत छलीह। फेर सुनीता कें जिद्द करैत नहि बनैत छलनि। मौसीक मोने मौसा वात्सल्य भाव सँ सुनीताक सेवा टहल करैत छथिन, ओ निशछल आत्मा कोना बुझितथि मौसाक कलुषित मोन कें।

मोनक आँखिए लोक कें देखैत अछि लोक। जकर अपन मोन शुद्ध तकरा लेल समस्त संसारक लोक शुद्धात्मा।

जाहिदिन अन्तिम पेपर छलनि, परीक्षाक उपरान्त बजार घुमाए, सुनीता लेल एक-दू नहि, पाँच सेट सलवार-कुर्तीक कपड़ा कीनि देलथिन मौसा। सुनीता बेर-बेर मना करैत रहि गेलीह ''नहि लेबाक अछि हमरा, बहुते रास कपड़ा राखल अछि गाम पर।''

से के सुनैए, उन्टे सुनीता कें डाँटए लगलथिन मौसा, ''आब बीच बजार मे बेसी तमासा नहि करह, जे कहैत छियह से करह, तोहर मौसी कहने छलथुन बुच्ची कें बजार घुमबिते आबए लेल। कहलथुन बाद मे जँ ओ बुझि जाएत जे कपड़ा किनबा लेल जेबाक छै तँ फेर किन्नहुँ नहि जाएत।''

माए कें सोच मे पड़ल देखि पँखुड़ी पाँजर सटि बैसि क' पुछलथिन ''की भेल? कोन चिंता मे पड़ि गेलहुँ? एखन दस दिन समय छै, हम सभ काल्हिए नहि जा रहल छी...अहाँक मुह तँ तेना लटकि गेल जेना ...''

—''से तँ ठीक छै मुदा हम कहैत छी जे अहाँक टिकट लेबाक कोन काज छलनि ओझाजी कें...पल्लवी एकसरि सेहो जा सकैत छलीह। नब-नब बिआह भेलनि अछि दुनूक, तँ बीच मे भदवा बनबा लेल अहाँक ओतए जाएब ठीक रहत? कनि एक बेर सोचू अहाँ।'' एतबा कहि सुनीता रतुका भोजनक ओरिआओन मे पल्लवीक सहयोग करबा लेल भनसाघर चलि गेलीह।

सुनीता अपना कें शान्त, व्यवस्थित राखबाक यथासंभव प्रयास करैत रहलीह मुदा मोनक उद्विग्नता बढ़िते जाइत छलनि, जँ-जँ दुनू बेटीक जेबाक दिन लगचाएल जाइत छलनि। जे बात तीस बरख धरि ककरो संग साझा नहि केलनि से आब किएक ककरो कहथि मुदा पँखुड़ी कें जेबा सँ रोकी तँ कोना रोकी, किछु नहि फुराइत छलनि। सुनीताक मोन डेराएल छलनि ई सोचि, जे हुनका संग भेलनि तकर पुनरावृत्ति नहि हुअए।

पँखुड़ी पल्लवी सँ बेसी उत्साहित छलीह हैदराबाद जेबा लेल, कारण पहिले पहिल फ्लाइट सँ यात्रा करबाक अनुभव सेहो प्राप्त होमए बला छलनि एहि यात्राक क्रम मे। पँखुड़ीक एहेन उत्साह देखि सुनीता कें किछु कहैत नहि बनैत छलनि।

''आठम दिन भोरे आठे बजे घर सँ निकलए पड़त, साढ़े दस बजे फ्लाइटक समय छै'' दुनू बहिनि पलंग पर ओंघड़ाएल बतियाति रहथि, माएक मनः स्थिति सँ एकदम अनभिज्ञ।

माए सोर करए अएलथिन खाएलेल तँ पल्लवी कहलथिन ''कनि थम्हू न'...''

—''ठीक छै...'' कहैत सुनीता सेहो दुनू बहिनिक बीच मे घोसिया गेलथि।

दुनू बेटीक बीच पड़ल कनि काल एमहर-ओमहर कें गप्प करैत अनायास सुनीता भावुक भ' गेलथि। पल्लवी आ पँखुड़ी नहि बुझि सकलीह जे माए कें अनायास की भ' गेलनि। शान्त करबाक प्रयास करैत पँखुड़ी छोट बच्चा सन अपन करेज मे साटि लेलनि माए कें, ''की भेल? कोनो बात की?''

—''नहि किछु नहि, बस ओहिना ...''

—''किछु तँ मोन मे अछि अहाँ कें, कहब तखन ने बुझबै...'' पल्लवी बजलीह।

—''अहाँ दुनू हमरा सँ बेसी पढ़लि, बेसी बुधियारि छी। हमरा तँ किछु बाजैत आब संकोच होइत रहैए। की हम कम पढ़लि छी अहाँ सभ सँ, तँ हमरा अहाँ दुनूक नीक बेजाए लेल सोचबाक अधिकार नहि रहल?''

—''एहन बात मोन मे किएक आएल अहाँक? अहाँ माए छी, अहाँक अनुभवक ज्ञान हमर सभक पोथी मे पढ़ल टेक्निकल ज्ञान पर भारी पड़त माँ...! निस्संदेह...! बात की अछि? किछु बाजब अहाँ...?'' पँखुड़ीक दबाव देब सुनीता कें विवश क' देलकनि।

कहलथिन—''हमरा अहाँ पर धियान लागल रहत। समय-साल खराप छै। सारि-बहिनोइक संबंध मे हँसी मजाकक स्वतंत्रता रहिते छै..., मुदा ई हँसब-बाजब एक टा मर्यादा धरि नीक।''

पल्लवी कें ई बात नीक नहि लगलनि, स्वर मे क्रोधक समावेश भ' गेलनि स्वतः ''अच्छा... एकर मतलब अहाँ कें प्रफुल्लक चरित्र पर संदेह अछि? प्रफुल्ल कें हम पाँच बरख सँ चिन्हैत छी माँ... ओ ओहन लोक नहि छथि। एहन सोच आएल कोना अहाँक मोन मे।''

''प्रफुल्ल खराप लोक छथि, से तँ नहि कहलहुँ हम। प्रफुल्ल पर अहाँक विश्वास देखि नीक लागल। विश्वास करब नीक बात, आँखि मूनि क' विश्वास करब घातक होइछ। कहुखन परिस्थितिक लाभ उठेबाक लेल नीक सँ नीक लोक रस्ता भटकि जाइत अछि। कुमार्ग पर जेबा लेल बस एक्कहि डेग उठेबाक देरी रहैत छैक। लोकक मनोभाव पढ़बाक शक्ति महिला लोकनिक नैसर्गिक गुण छैक। एहि गुण कें निखारब अहाँक काज।''

''अहाँक बात सँ हमरा स्पष्ट बुझना जा रहलए जे अहाँ कें प्रफुल्लक चरित्र पर संदेह अछि। एहन बात किएक क' रहल छी अहाँ? हमरा किछु बुझबा मे नहि आबि रहलए।''

''हमरा प्रफुल्लक चरित्र पर लेषमात्र संदेह नहि, बस हम अहाँ कें सचेत रहबा लेल कहि रहल छी पल्लवी। ओह! हम कोना बुझाबी अहाँकें!''

''हम बुझि गेलहुँ माँ...अहाँक चिंताक कारण की अछि। अहाँ निश्चिन्त रहू।''

''अच्छा बुझि गेलहुँ तँ जाउ कनि पापा कें खेबा लेल पुछने अबियनु। टी वी देखैत काल हुनका समयक सोहे नहि रहैत छनि। एगारह बाजि गेल। खाइत पिबैत बारह बाजि जाएत।''

प्रातः काल पल्लवी बैंक आ हुनकर पापा ऑफिसक लेल प्रस्थान कएलनि, तखन सुनीता पँखुड़ी लग जाए बैसलीह ''देखू पँखुड़ी, अहाँ कोनो नेना नहि छी आब...मुदा तैयो माए लेल ओकर धिया-पूता सभदिन बौआ सन रहैत छैक, से बुझैत छियै ने?''

''की भेल से? हमरा सँ कोनो भूल-चूक?''

''अरे नै..नै...! अहाँ तँ हमर बुधियारि धिया छी। भूल-चूक किछु नहि। बस अपना भरि बुझाए देबाक मोन भेल। हैदराबाद जेबाक दिन लगचाएल जा रहलए से कनि...''

''ओ..ह...हो...माँ ...अहाँ कें की भ' गेलए?

कतेक सोचैत छी, टेक इज इजी...''

''नहि बौआ, सदिखन टेक इट इजी बला सोच राखब ठीक नहि। कहुखन छोट-छोट बातकें सिरियसली लेब सेहो आवश्यक। जेना...जँ हँसैत-बाजैत, हँसी-हँसी मे ओझाजी कखनो अहाँक हाथ पर हाथ राखथि, गाल पर हाथ राखथि, तँ ओकरा 'टेक इट इजी' सोचि इग्नोर नहि करब। ओकर प्रतिकार करब।''

''अरे माँ ...आइ काल्हि छोट बच्चा कें सेहो ई सभ बूझल रहैत छैक 'गुड टच' 'बैड टच ' की होइत छै से। अहाँ निश्चिन्त रहू।''

''चलू ठीक छै, अहाँ कहैत छी तँ निश्चिन्त भ' जाइत छी।''

अपन दुनू धियाक देल एतबा आश्वासन ''अहाँ निश्चिन्त रहू'' सुनीताक मानसिक शान्तिक लेल रामवाण सन छलनि।

मोन मे एक विश्वास कायम भ' गेलनि सुनीता कें, जे कोनो तरहक विषम परिस्थिति नहि अओतनि पल्लवी-पँखुड़ीक सोझाँ आ जँ अएबो करतनि तँ सम्हारि लेतीह दुनू बहिनि मिलि।

ई दोष हमर ने!

हम तीन मास पर बेटी-जमाए लग सँ आएल छलहुँ अपना घर, दरभंगा। स्वाभाविके तीन मासक वियोगक उपरान्त भेंट होएब पति सतीशक ह्रदय मे एकदम नवव्यौहता सन उमंग-तरंग प्रवहमान कएने छलनि। भोजन-भातक उपरान्त ओछैन पर जाइतहि सिनेह सँ हमरा पजिआ लेबा लेल आतुर हुनकर बाहुपाश, बिनु कोनो विलम्ब कएने हमरा जकड़ि लेने छलए। हमहुँ आन दिन जकाँ पिंड छोड़एबा लेल बड्ड नहि फड़फड़ेलहुँ।

क्षणहि मे हुनकर सिनेह भरल चुम्बन ताबड़तोड़ हमर ललाट, कनपट्टी, गाल, ठोर पर होमए लागल। ओ हमर मुँह निहारैत दुलार-मलार करबा मे मगन रहथि आ एमहर हमर ह्रदयक भीतर भयंकर चीत्कार मचल छल। जाहि चीत्कारक ध्वनि हुनका एक्कहु रत्ती सुना नहि रहल छलनि। हुनकर व्यग्रता देखैत हम बड्ड प्रयास केलहुँ, जे स्थिति सामान्य रहए मुदा असफल रहलहुँ। आखिर बड़ी जोर सँ, टूटैत बान्ह जकाँ हमर आँखि सँ अश्रुधार बहइए लागल। हमर हिचुकीसँ ओ एकदम सँ अकबका गेलाह, ''अरे...की भेल सुम्मी...एना किएक कोंढ़ फाटि रहल अछि अहाँक ...भेल की?

हमर हिचुकैते रहला पर फेर ओ बजलाह—''किछु बाजब की कनिते रहब?''

हम तखन करौट फेरि, बस भरि इच्छा कानए चाहैत छलहुँ। बकार नहि फूटि रहल छलए। कनिकाल कानि, ओछैन पर सँ उतरि बेसिन लग जा मुँह-कान धोलहुँ। ओछैन पर पड़ितहि ओ पुनः जोर दैत, पुचकारैत पुछए लगलाह, ''भेल की अहाँ कें यै हम्मर सुम्मी रानी? छोड़ि दैत छी...नहि मोन अछि अहाँ कें...? कोनो बात नहि...सुतू अहाँ आराम सँ।''

किछु नहि बजलहुँ हम। हिचुकैत रहलहुँ। बड़ी काल धरि। ओ बीच बीच मे कखनो पीठ पर हाथ, कखनो केश मे आंगुर फेरि सांत्वना देबाक प्रयास मे लागल रहलाह। हमर मोन मे चलचित्र जकाँ चलाएमान छलए हैदराबाद जेबा सँ एबा धरिक सभटा दृश्य। दरभंगा एयरपोर्ट पर लैंडिंग होइतहि, हमर ह्रदय मे ज्वार-भाटा सन उद्वेग किएक उठल अपन प्राणनाथ सतीश जी लेल, से सभटा बात।

बेटी बबलीक विवाहक एक्कहि मासक बाद मधुश्रावणी पुजएबाक लेल हमरा हैदराबाद जाए पड़ल छलए। मधुश्रावणी तँ पन्द्रहे दिनक पाबनि होइत अछि। मुदा मधुश्रावणीक उपरान्त हैदराबाद आ आस पासक दर्शनीय स्थल घुमाबए लेल बेटी-जमाए रोकि लेलनि। धिया-पूताक संग समय आनन्द सँ बीतत से लोभ संवरण नहि भेल हमरो। बेस! बढ़ैत-बढ़ैत हमर हैदराबाद ट्रिप तीन मासक भ' गेल। बालक अनिमेष, इंजीनियरिंग कॉलेजक छुट्टी मे दरभंगा आएल छलाह, तँ हुनकहि संग हम हैदराबाद गेल छलहुँ। हमरा हैदराबाद छोड़ि ओ बैंगलुरू चलि गेलाह। सतीश जीक रिटायरमेंट मे एखन दू साल शेष रहने ओ बन्हाएल छलाह अपन शहर सँ।

मधुश्रावणी पाबनि भरि तँ खूब व्यस्तता भरल रहल हमर दिनचर्या। मुदा तकर बाद बेटी जमाए दुनू गोटे अपन-अपन कर्मस्थल लेल निकलि जाइथ। एसगरि मे सोम सँ शुक्र, भरि-भरि दिन मोबाइल मे ओझराएल रहबाक हिस्सक लागि गेल छलए हमरा। शनि-रवि क' कतहु-कतहु घुमबाक प्रोग्राम रहैत छलए। नीक लागल अपन जीवन मे, अपन दिनचर्या मे आएल ई बदलाव। जीवन भरि दरभंगा सन छोट शहर मे, सासु ससुरक छोटकी कनिञा बनि घरे मे बन्द रहल छलहुँ, से अनायास जेना खुजल आसमान भेटि गेल छलए हमरा।

खूब फलिगर, सभ सुविधा सँ लैस बड़का सोसाइटी मे बेटी-जमाए टू बी एच के लेने छलाह किराया पर। सभ राज्यक लोक सभ रहैत छलए ओहिठाम। बेसी 'आइ टी'ए सेक्टर मे कार्यरत। नीचाँ उतरि पार्क मे जाइत-अबैत बहुतो लोक सँ हमरा खूब घनिष्ठता भ' गेल छलए। सतीश जी सँ एक बेर फोन क' क' भरि दिनक हाल-चाल पूछि लेल करिअनि। बस एतबे टा सम्पर्क रहल एहि तीन मास मे हुनका सँ। भरि दिन हम अपन दुनिया मे मगन रहए लागल छलहुँ। आ ओ दुनिया आनन्ददायक लागि रहल छलए। खूब आनन्ददायक।

ओहिठामक सोसाइटीक नब परिचित महिला लोकनिक अतिरिक्त तीन मासक हैदराबाद प्रवासक समय हमर गप्प शप्प एकटा अत्यधिक आत्मीय फेसबुक फ्रेंड नवीन जीक संग कनि बेसीए होमए लागल छलए। हुनका सँ गप्प करैत बड्ड नीक लागए हमरा। आ हमरा बुझाए लागल जेना नवीन जी कें सेहो नीक लागैत छनि, हमरा संग समय बिताएब। चाहे ओ फोन कॉल्स हुअए किंवा व्हाट्सएप्प पर चैटिंग करैत बला संग हुअए। सभ रंगक गप्प होमए लागल हमरा दुनूक बीच। माने अपन-अपन सुख दुःख, सभ किछु शेयर करए लगलहुँ एक-दोसराक संग। दरभंगा रहैत कहियो काल होइत छलए गप्प, से हैदराबाद रहैत नियमित होमए लागल छलए। कखनो काल मोन मे आबए कि पर-पुरुष सँ एतेक आपकता ठीक नहि, मुदा फेर मोन मना लैत छलहुँ ई सोचि जे गप्पे ने क' रहल छी हम दुनू गोटे। कोन हर्ज

छै गप्प करबा मे। जहिना हम कोनो महिला मित्र सँ सुख दुःख बतिआइत छी, तहिना नवीन जीक संग सेहो बतिआ लैत छी। कोनो पाप थोड़बे क' रहल छी।

असल मे नवीन जीक संग गप्प करब आनन्ददायके टा नहि छलए। हुनकर वर्चुअल सान्निध्य, हमर जिज्ञासु मोन-प्राण कें खाद-पानि सेहो द' रहल छलए। बहुत बेर बुझाए जेना हम देश-दुनियाक संग अपना-आप कें सेहो कतेक कम जानैत छलहुँ। स्वयं सँ परिचित भ' रहल छी धीरे-धीरे तेहेन सन सेहो बुझना गेल। समग्रता मे कही तँ बहुत तरहक नब अनुभव भ' रहल छलए हुनका संग निरन्तर गप्प करबाक क्रम मे। एना किएक भ' रहल छलए, से हमरा स्पष्ट नहि छलए। मुदा जे छलए से हमरा नीक लागि रहल छलए। मतलब हमरा सतत हुनकर वर्चुअल सान्निध्यक लालसा रहैत छलए।

बेटी-जमाएक ड्यूटी लेल प्रस्थान करितहि मोबाइल हाथ मे लैत जँ नवीन जीक कोनो मैसेज अभरि गेल तँ बस ओझरा जाइ हुनके संग चैटिंग करबा मे। ने स्नान ध्यानक होश, ने खेबा-पीबाक।

हमहूँ छोट छिन शहर दरभंगा मे नहि, तकनीकी रूप सँ सक्षम भारतक एकटा प्रमुख शहर हैदराबाद मे छलहुँ। तेलंगानाक राजधानी हैदराबादक प्रमुख स्थान सभ घूमि क' आबी शनि-रवि क' तँ सभटा विस्तृत विवरण नवीन जी कें सुनाबी। कखनो व्हाट्सएप्प पर टाइप क' क' आ कखनो कॉल लगाए बतिआ क'। जाहि माध्यम सँ संभव हुअए ताहि माध्यम सँ। ओ 'भाग्यक शहर' विशाखापत्तनम मे रहैत छलाह। ओहो हमरा विशाखापत्तम आ आंध्रपदेश सँ जुड़ल नब-नब जनतब सभ दैत रहैत छलाह। हम घुमबा-फिरबाक सौखीन सभदिनाँ रहलहुँ, तैं देश-दुनियाक विषय मे जानकारी इकट्ठा करबाक सौख सेहो रहल। से बड्ड नीक लागए नवीन जीक संग बतिआइत हुनकर नजरि सँ हुनकर देखल दुनिया देखब। हुनकर गप्पक धार मे बहैत, हुनका संग हम ओ सभ स्थान देखि अएलहुँ, जतए-जतए ओ घूमि आएल छलाह। तेना सचित्र वर्णन करैत छलाह कोनो स्थान आ ओहि ठामक वातावरणक, जे विजुअलाइज भ' जाइत छलए हमरा। माने मोन-प्राण हमर सदिखन विशाखापत्तनम भागल करए। पचास सँ बेसी बएस भ' गेल छलए हमर। एहि बएस मे आबि एहि तरहें ककरो मोह मे पड़ि जाएब, हमरा स्वयं अविश्वसनीय सन लागि रहल छलए।

तीन मास लगातार एहि तरहें विशाखापत्तनम शहर दिस भागैत हमर मोन-प्राण तेहेन बेलगाम भ' गेल छलए जे जखन हैदराबाद सँ विदा होएबाक बेर आएल, तखनहु बेटी-जमाएक संग नवीन जी सँ वियोगक पीड़ा हावी रहल मोन-मस्तिष्क पर।

पहिले-पहिल हम एकदम एकसरि हवाइ यात्रा क' रहल छलहुँ, से सभक ध्यान लागल छलैक हमरा पर। बेटी-जमाए सख्त हिदायत द' क' एयरपोर्ट पर छोड़ि अएलाह, जे पल-पल के रिपोर्टिंग अपन फैमिली व्हाट्सएप्प ग्रुप मे करैत रहब। 'सेम' हिदायत दरभंगा सँ श्रीमान जीक आ बैंगलुरू सँ बौआ अनिमेषक सेहो छलनि। हम सभक आज्ञाक पालन करैत तहिना करैत रहलहुँ। चेक इन भ' गेल, बोर्डिंग भ' गेल, रेडी टू टेक ऑफ...एहि तरहें मैसैज करैत यात्रा शुरू भेल। फैमिली ग्रुप पर जे मैसेज करी, से एमहर नवीन जी कें पर्सनल चैट पर सेहो क' दैत छलियनि। हुनकर व्यग्रता देखि। हुनको ध्यान लागल छलनि हमरा पर। जहिना घरक सदस्य सभ परेशान छलाह, तहिना नवीन जी सेहो परेशान हमरा लेल। चूँकि हम कहियो लोकल दरभंगा मे तँ निकलिते नहि छलहुँ एकसरि, हाट-बजार पर्यन्त नहि। सोझे हैदराबाद सँ दरभंगा विदा भेल छलहुँ, एना...एकसरि। ई बात सभ नवीन जी कें सेहो बूझल छलनि, गप्पक क्रम मे।

हमर देह फ्लाइट मे बैसल आकाश मे उड़ान भरैत रहल दू घंटा, लगातार आ मोन लगातार एक्कहि ठाम स्थिर, विशाखापत्तनम...नवीन जीक सान्निध्य मे। मोने मोन बड़बड़ाए लगलहुँ हम... ओह! ककरो ककरो जीवन भरि परीक्षे लैत रहैत छथिन भगवानो...! एना किएक...कोन पाप केलनि अछि ओ...कथीक सजा भुगति रहल छथि...लोक विवाह करैत अछि पत्नी सँ सुख पाबी ताहि लालसाक संग। आ नवीन जी कें पत्नी सँ जतेक सुख नहि भेटलनि जीवन मे, ओहि सँ बहुत बेसी दुख झेलए पड़ि रहल छनि। सभदिन पत्नीक इलाजे करबैत बितलनि...!

नवीन जी अपन ई पीड़ा बतेबो नहि करितथि हमरा जँ हम बहुत खोदि क' नहि पुछितियनि पत्नीक विषय मे। अपन पीड़ा अपना हृदय मे दबा क' राखब केओ नवीन जी सन लोक सँ सीखए...कतेक सहनशील व्यक्ति छथि नवीन जी...मोन विचलित सन होमए लागल हुनका बारे मे सोचि-सोचि।

एकहक बीतैत क्षणक संग हुनका सँ दूर भेल जा रहल छी, से सोचि सोचि मोन दोबर विचलित भेल जाए। अनाउंसमेंट भ' गेल, बीस मिनटक भीतर लैंडिंग भ' जाएत। हम बिहार मे, नवीन जी आंध्र प्रदेश, बेटी-जमाए तेलंगाना, अनिमेष कर्नाटक, सभ यत्र-तत्र छिड़िआएल रहब...इएह सभ सोचैत-सोचैत लैंडिंगक बेर भ' गेल। मोबाइल फ्लाइट मोड सँ हटाए एक्टिव करैत देरी अपन फैमिली ग्रुप मे, अपन एकटा सेल्फीक संग लिखि देलियैक ''landed'' क्षणहि मे पतिक रिप्लाइ आएल ''waiting"।

अचक्के जेना हमर तंद्रा भंग भेल। हिनकर लिखल एक शब्द ''waiting'' आत्मा कें झकझोरि देलक एकदम सँ। यात्राक दौरान पूरा समय हम नवीन जी आ

धिया-पूता सँ वियोगक ''मोड'' मे छलहुँ। आ एहि ठाम ई मिलनक बाट जोहि रहल छलाह। ओह! एहेन मतसुन्न हम कोना भेलहुँ किएक भेलहुँ!

ओह! केहेन अर्द्धांगिनी छी हम... हमरा चुरुभरि पानि मे डूबि मरि जएबाक चाही। हिनकर दुनिया हमरे धरि सीमित रहलनि सभदिन आ हमर मोन एहेन बेलगाम...!

हमर जीवन मे प्रवेश करितहि हिनका लोक, शुरुआत मे दबले स्वर सँ, बाद मे खुल्लम-खुल्ला ''स्त्रीक वशीभूत'' आ ''पत्नी-भक्त'' सन उपाधि देबए लागल छलनि। अपने घरक लोकसभ। आ ई उपाधि सभ हुनका सहर्ष स्वीकार्य रहलनि। मतलब कहियो खौंझेलथि नहि एहि बात पर।

फ्लाइट सँ बहराइत, लगेज कलेक्ट करैत लगातार हमर हृदय मे ज्वार-भाटा उफान मारैत रहल। लगेज ल' क' कॉल क' देलियनि हुनका। आ चकुआइत, हुनका ताकैत बहराए लगलहुँ एयरपोर्ट सँ। जहाँ कि हुनका हाथ हिलबैत अपना दिस ताकैत देखलहुँ, आँखि डबडबा गेल। जे हुनका लगीच आबैत-आबैत गाल पर होइत ससरिए गेल आखिर। ड्राइवर समान डिक्की मे राखि अपन सीट पर बैसल। हम-दुनू गोटे पाछाँ बैसलहुँ। हमरा किछु गप्प जेना फुराइए नहि रहल छलए। जेना कोनो चोरि क' क' आएल होइ। हम हुनकर बामा भाग बैसलि छलहुँ। ओ हमर दाहिना हाथ अपन बामा हाथ सँ पकड़ि अपना हाथ मे लेलनि, फेर दाहिना हाथ सेहो उपर सँ धरैत हमर हाथ दबाबैत हमर कंधा सँ कंधा आ मुड़ी सँ मुड़ी सटा लेलाह। हम मुस्किया क' तकलियनि हुनका दिस, तँ फेर आँखि डबडबाए लागल। भारी मुश्किल बला स्थिति भ' रहल छलए हमर।

हमर हृदय मे उठैत ज्वार-भाटा सँ एकदम अनभिज्ञ ई जॉली मूड मे छलाह। क्षणहि मे हमहूँ अपना कें सम्हारैत किछु बात शुरु केलहुँ, ''बबली बड़ कानैत छलए... बहुत दिन रहि गेलियै ने...ओकरा किछु दिन बड़ अखरतै...!''

पति मात्र हुंकार भरि क' रहि गेलाह।

तत्पश्चात दरभंगा आ हैदराबादक मौसम सँ बात चलैत बिहारक इलेक्शन धरि पहुँचल, जाहि वार्तालाप मे ड्राइवर सेहो बढ़ि-चढ़ि क' हिस्सा लेलनि। एवम् प्रकारें हम-दुनू गोटे स्वगृह पहुँचलहुँ। समय साँझ के सात बाजि गेल छलए।

घर मे घुसितहि पतिक आदेश भेल, ''कपड़ा लत्ता बदलि क' सुभ्यस्त होउ आ पहिले मुह मधुराउ। रसमलाइ आनि क' रखने छी फ्रिज मे।''

''वाह! एतेक खातिरदारी? तीस बर्ख पुरान कनिञाक? से किएक यौ?...'' हम एतबा बजलहुँ आ कि हमर बात लोकि लेलाह ओ। कहए लगलाह, ''के कहत अहाँ कें तीस बर्ख पुरान...आँए...अहाँ कहियो पुरान भइए नहि सकैत छी...''

आब हुनकर बात लोकबाक बारी हमर छलए, ''बस..बस...आब बेसी चनाक झाड़ पर चढ़ेबाक प्रयास नहि करू...चुप-चाप बैसू...''

हम सुभ्यस्त भ' बाथरूम सँ बहरेलहुँ, ता धरि ई रतुका भोजन ऑनलाइन ऑर्डर करबा लेल किछु नीक-निकुत सर्च क' रहल छलाह। हमरो पुछलनि, ''की मंगा लिय'...? शाही पनीर आ मिक्स वेज, दू रंगक तरकारी मँगा लैत छी? की कहैत छी?''

—''एह...छोड़ू न'...! चट् द' खिच्चड़िए चढ़ा लैत छी हम। एतेक फड़फड़ी किएक ढूकल अछि अहाँ कें? पाइ कुट-कुट काटि रहल अछि की...?''

पतिक सिनेह उफान पर छलनि, ''आइ हाथ नहि झरकाबए देब अहाँ कें हम।''

एहि तरहें चुहलबाजी भरल माहौल मे भोजन-भात करैत मोन हमर कनि हल्लुक भ' गेल छलए, खेबा-पीबा काल।

ओछैन पर पड़ल-पड़ल तीन मासक प्रवासक प्रत्येक पल मुट्ठी सँ बालु जकाँ ससरैत रहल।

हिचुकब बंद भेल सुनि पति पीठ हँसोतथि पुछलनि, ''आब ठीक छी?''

हम मुँह बन्दे केने 'हुं...' कहैत हुनका दिस करौट फेरलहुँ। हुनकर मुँह दिस ताकैत फेर भावुक होमए लागल मोन हमर। किएक एना भ' रहल छलए, हम स्वयं अचम्भित छलहुँ।

अन्ततः हिम्मत जुटाए कहिए देलियनि हुनका, ''हमरा एकटा confess करबाक अछि। असल मे हैदराबाद रहैत लगातार हम नवीन जीक संग बहुते गप्प शप्प करए लागल रही।

फेसबुक फ्रेंड नवीन जी...मोन छथि ने...हम कहने छलहुँ अहाँ कें...हुनका संदर्भ मे। विशाखापत्तनम रहैत छथि। हमरा गाम मे हुनकर पीसीक विवाह छनि। मोन पड़ल?''

—''हँ...हँ...अहाँ जे अपना गामक दुर्गा मन्दिरक फोटो पोस्ट कएने छलहुँ, ताहि पर हुनकर कमेन्ट छलए 'हम अहाँ गामक एहि मन्दिर मे गेल छी मैम' से मोन पड़ैए हमरा।''

—''अरे वाह...अहाँक याददाश्त तेज भेल जा रहल अछि बढ़ैत बएसक संग। हमर संगतिक प्रभाव पड़ैत देखा रहल अछि शनैः शनैः...ठीक याद अछि अहाँ कें। ओही पोस्ट सँ परिचय भेल छलए आ मोबाइल नंबर मँगने छलाह ओ।''

—''ठीक छै... गप्प केलहुँ तँ कोन जुलुम केलहुँ? कतेको साहित्यकार लोकनि सँ गप्प-शप्प होइते रहैए अहाँक...हमरा सोझाँ बैसि सेहो अहाँ घंटा-घंटा भरि बतिआइत रहल छी...हम किछु कहलहुँ कहियो?''

—''ताही लेल तँ आत्मा धिक्कारि रहल अछि, सभ सँ गप्प केलहुँ अहाँ कें जनतब दैत आ नवीन जी सँ गप्प करैत रहलहुँ अहाँक परोक्ष मे।''

—''अरे बाबा...हम छलहुँहें नहि अहाँक संग, तँ परोक्षे मे गप्प करइए पड़त ने...? बिना मतलब नेप चुआएब केओ अहाँ सँ सीखए।''

—''ओफ्फोह... अहाँ कें कोना बुझाबी...मतलब हमर ध्यान हुनका पर कनि बेसी रहए लागल छलए एमहर। हमरा दिमाग मे सदिखन ओएह तिरपेच्छन करैत रहैत छलाह।''

—''अच्छा...से बात? दिल मे नहि ने प्रवेश कएने रहथि?''

—''जँ कही हँ...रहए लागल छथि, तँ..? हमर दिल मे, दिमाग मे, सदिखन वास छनि हुनकर...तँ...?''

—''तैयो कोनो हर्ज नहि। कारण मनुष्यक हृदय मे स्नेह जे अछि से कोनो सिंटेक्स के टंकी मे स्टोर कएल पानि नहि ने अछि। जे कनि बेसी खर्च करब तँ खाली भ' जाएत।'' पति दार्शनिक अंदाज मे बजलाह आ आरो बहुत किछु बजैत रहलाह।

हम चुपचाप सुनैत रहलहुँ, ओ बाजबाक मूड मे छलाह। फेर शुरु भेलाह, ''एहि धरती पर अबितहि...मतलब जन्मक संगे सभ सँ पहिले एकटा बच्चा आकर्षण आ स्नेह सन शब्द सँ...शब्द नहि अनुभूति सँ परिचित होइत अछि, सर्वप्रथम अपन माताक स्पर्श सँ। संगहि पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, कक्का-काकी, मामा-मामी, मौसा-मौसी, भाए-बहिन सँ स्नेहक बन्धन बन्हाइत जाइत छै आगाँ जा क'। फेर कनि आरो पैघ भेला पर दोस्त बनैत छै। फेर जीवनसाथीक संग स्नेह-बन्धन बान्हैत अछि ओ जीव। फेर ओकर जीवन मे सन्तानक आगमन होइत छै। सन्तान सँ स्नेह-बन्धन। कोनो नब लोक सँ स्नेह-बन्धन मे पड़ब, पहिलुक सँ स्नेह कम होएब नहि होइत छै। समय आ अटेंशन भले बँटि जाइत छै कनि, दैट्स इट। आ समयक बँटवारा कोना करबाक अछि, से अहाँक टेंशन ने! हमरा कोन टेंशन?''

—''धुर्र...जाउ...अहाँ तँ बड़का लेक्चरे देबए लगलहुँ...''

—''अच्छा एकटा बात कहू सत्त-सत्त...अहाँक सपनो मे आबए लागल छथि की? अहाँक प्रिय नवीन जी? सपना मे आबि चुम्मा-चाटी तँ ने करैत छथि अहाँक संग...!'' हुनका मुह सँ हँसी बहरा गेल छलनि।

हम अचंभित! एतेक टेंशन फ्री केओ कोना रहि सकैत अछि, से हमरा कतेको बेर हुनकर हरकत देखि मोन मे आबैत रहैए।

दोहरा क' फेर पुछलनि, हँसिए क' ''कहू न'...सपनो मे आबए लागल छथि की?''

—''भक्क...'' आब हमर भाव-भंगिमा कनि लजाएल सन भ' गेल छलए, ''हम ओहेन निर्लज्ज नहि छी। बुझलहुँ ने?''

—''अहाँ नहि छी...सामने बला तँ भ' सकैत अछि ने निर्लज्ज...जेना हम छी...ऐं यै हमर ब्यूटी क्वीन...''

—''अहाँक रहने की? मजाल भेलए आइ धरि जे हमर सपना मे आबि कहियो कोनो अश्लील हरकत क' लेने होएब अहाँ...तखन कोनो तेहल्लाक ई मजाल कोना भ' जेतैक? कहू त'!''

—''तखन फेर अपराध बोध किएक?''

—''कोना कहू...बिनु देखनहि, बिनु देह मे भिड़नहि ओ हमर आत्मा मे प्रवेश क' चुकल छथि जेना...तेहेन अनुभव क' रहल छी हम...ई अपराध बोध तैं...हमरा सँ बड़ भारी भूल भेल... हमर ई दोष क्षमाक योग्य नहि अछि, तेहेन अनुभव क' रहल छी हम। मोन मे पड़ल इएह गीरह आत्मा कूही क' रहल छलए हमर। ई गीरह हमरा बताहि बना क' छोड़ैत। तैं खोलब आवश्यक छलए।''

पतिक एकटा नमहर हुंकार कान मे पड़ल हमर।

तत्पश्चात एकटा मौन पसरि गेल ओछैन पर।

हम हुनकर छाती पर अपन माथ धरैत अनुराग भरल स्वर मे पुछलियनि, ''हम बड्ड आहत केलहुँ ने? हमरा पर कतेक विश्वास रहल अहाँक, से तोड़ि देलहुँ ने हम।''

एकटा नमहर साँस लेलनि आ थोड़ेक गंभीर होइत बजलाह, ''हँ...आहत तँ छी...मुदा अहाँ सँ कम, अपना-आप सँ बेसी। हमरा आत्मग्लानि भ' रहल अछि। आइ तीस बरख सँ मात्र अहाँक पति बनि अहाँ पर अपन अधिकार जताबैत रहलहुँ हम। कहियो अहाँक मित्र बनबाक प्रयास नहि कएल। हृदय मे कोनो रिक्त स्थान रहि गेल अहाँक प्रायः... तखन ने ककरो स्थान भेटलैक ओहिठाम...ई हमर दोष ने? अहाँ दोषी कोना भेलहुँ?''

—''अरे... एना नहि बाजू... ई दोष ...''

हम बजितहि छलहुँ आ कि हुनकर ओएह पुरनका रवैया शुरु... हुनकर ठोरक आवरणसँ हमर बात मुँहे मे रहि गेल।

या शुभ्रवस्त्रावृता

''हलो...सोनी...कहाँ नुकाएल छलैंहें गै...! कतेक मोन औनाइत छलए हमर से की कहियौक...। कतेक लोक फेसबुक पर भेटाएल। तोरा नै देखैत छलियौ कत्तहु। भेटबो कोना करितैं...हम 'सोनी' नाम सँ ताकैत छलियौ। हमरा धिआने सँ उतरि गेल छलए तों स्कूल-कॉलेज मे 'कात्यायनी' लिखैत छैं अपन नाम से...'' धाराप्रवाह बजिते जा रहल छलीह हमर नानीगामक संगी रूपा।

क्षण भरि बिलमि फेर शुरु भेलीह, ''धन्न के ई 'फेसबुक' आ धन्न के ई 'महिला सशक्तिकरण' समूह, जे आइ तीस साल पर भेंट करा देलक अपना दुनू गोटा कें...बिआहक बाद नानीगाम नहिए अएलैं तों कहियो...आ तोहर बिआहक तीनिए मासक बाद तँ हमरो बिआह भ' गेल ने...से तँ तोरा बुझले हेतौक। मामा-मामी सभ हाल-चाल कहनहि हेथुन।'' मैसेन्जर पर मोबाइल नंबर मँगितहि झट् सनि हम फोन लगौने छलहुँ, अपन प्राण सँ प्रिय संगी रूपा कें। आ एहि फोन कॉल कें रिसीव करैत रूपाक प्रसन्नताक कोनो सीमा नहि छलैक, से स्पष्ट अनुभव क' रहल छलहुँ हम। ओकर आवाज मे, ओकर बाजबाक टोन मे प्रसन्नता दूध मे चीनी जकाँ घुलल छलैक।

नानीगाम मे हमर दुनूक भेंट दुर्गा-पूजाक आयोजन मे भेल छलए। विवाह सँ पाँच बरख पहिने प्रायः। आ एतबे दिनक मित्रता मे ओ हमर 'आँखिक पुतरी' बनि गेल छलए। हमर नानीगाम देवपुराक पुबारि भाग मे पोखरिक भीड़ पर दुर्गास्थानक प्रांगण मे प्रतिवर्ष आश्विन मासक दुर्गापूजा खूब धूमधाम सँ मनाओल जाइत रहल अछि। ओहि दुर्गास्थान सँ कनिए दूरी पर राधाकृष्ण मन्दिर, बजरंगबली मन्दिर एवं महादेवक प्राचीन मन्दिर सेहो गामक भव्यताक परिचायक रहल अछि। एहि मन्दिर सभक कारणें नानीगामक पुबारि भाग कोनो तीर्थ स्थान जकाँ बुझाइत रहल अछि। नानीगामक एहि दुर्गामन्दिर पर होमए बला आश्विन मासक दुर्गापूजाक आयोजन मे बच्चा सँ बूढ़ धरि, सभ बढ़ि-चढ़ि क' भाग लैत छलथि। दसो दिन भोर-साँझ दुर्गास्थान जाएब, भगवती कें धूप-दीप आरती देखाएब हमर सभ ममियौत-पिसियौत

भाए-बहिनिक रुटीन रहैत छलए। आ साँझ खनि नाटकक संग अन्यान्य कलाक प्रदर्शन करैत गौंआक, उत्साहवर्धन करबाक उत्तरदायित्व सेहो रहैत छलए, हमरा सभ सन पाहुनक। गामक बेटी सभ गीतनाद गाबैत रहथि, स्तोत्रादिक गायन करैत रहथि। आइ तीस बरखक उपरान्तहुँ मन-मस्तिष्क मे गुंजायमान अछि, गामक स्त्रीगण आ बच्चा सभक एक स्वर, एक लय मे ''न मन्त्रं नो यन्त्रं...'' स्तोत्रक गायन।

तीस बरखक बिछुड़ल दू गोट प्रिय संगीक अनायास कत्तहु भेटा जाएब मोन मे कतेक हलचल मचा देने होएत दुनूक हृदय मे, से कहबाक बेगरता नहि। अनन्त-अथाह गप्प जमा छलैक रूपाक मोन मे। आ ओकरा सँ बेसी हमरा मोन मे। कारण हम सात समुद्र पार अमेरिका आबि गेल छलहुँ विवाहोपरान्त। आ तैं अप्पन लोक लेल रकटल सन भ' गेल छलए मोन-प्राण हमर।

भोरे-भोरे दुनू बच्चा टिया-रिया कें स्कूल आ पतिदेव सोमेश कें ऑफिस विदा कएलाक उपरान्त एक रत्ती रिलैक्स होएबाक उद्देश्य सँ मोबाइल हाथ मे लेने छलहुँ हम। रुटीन चेकअप लेल डॉक्टर सँ अपॉइंटमेंट लेल छलए हमर। स्नान ध्यान मे लागी, ताहि सँ पहिने एक बेर व्हाट्सएप्प, फेसबुक आ इंस्टाग्राम पर टहलि आबैत छी कनिकाल लेल, से सोचि सोफा पर बैसि रहलहुँ मोबाइल ल' क'। फेसबुक पर नोटिफिकेशन चेक करैत देखलहुँ, लगातार दसो टा नोटिफिकेशन एक्कहि नाम सँ ''Rupa Rani likes your photo'' ''Rupa Rani commented on your post'' आएल अछि। स्वाभाविके मोन मे आएल, ''के छथि ई रूपा रानी'' आ चेक करबालेल हुनकर प्रोफाइल पर गेलहुँ। देखलहुँ रिक्वेस्ट पठौने छथि रूपा रानी। Mutual friends मे बहुत लोक छलथि। प्रोफाइल फोटो गौर सँ देखलहुँ। दिमाग पर बहुत जोर देलहुँ मुदा चीन्हि नहि सकलियनि, के छथि ई रूपा रानी। रिक्वेस्ट एक्सेप्ट क' प्रोफाइल पर पोस्ट कएल फोटो सभ देखलहुँ, मुदा तैयो फड़िछाएल नहि जे आखिर ई कोन रूपा छथि, कारण रूपा नाम सँ स्कूल-कॉलेज मे तीन चारि टा संगी रहल छलीह हमर। संगहि अप्पन गाम मे एकटा समवयस्क पीसी सेहो छलीह रूपा नामक, जनिका हम रूपा दीदी कहैत छलियनि। नानी गाम मे सेहो दू टा रूपा नामक संगी बनल छलीह हमर। हम गुनधुन मे पड़ले छलहुँ, आ कि तखनहि मैसेंजर पर रूपा रानीक मैसेज आएल, ''नै चिन्हलैं हमरा?''

हमरा सोझें ''नै'' कहैत खराप लागल। कहलियैक, ''रूपा दीदी छी की?''

—''गै बतहिया हम तोहर दीदी कहिया सँ भ' गेलियौक...हम तँ तोहर अप्पन रूपा छियौ...राजूक बहिन...कनि नानीगाम दिस दिमाग ल' ने जो...तखन ने मोन पड़तौक... तोहर ध्यान छौ हजारीबाग आ अप्पन गाम दिस, तँ चिन्हबैं कोना? हम

तँ काल्हि साँझ मे जे तोहर कुमारि बला फोटो देखलियौक, से देखितहि चीन्हि गेलियौक जे ई तँ हमर सोनी अछि... दुनिया लेल कात्यायनी झा होएत...''

हमरा मोन पड़ल, ठीके काल्हि 'महिला सशक्तिकरण' समूह पर ऐडमिन द्वारा कहल गेल छलए, सभ गोटे अपन-अपन पुरान धरोहर फोटो पोस्ट करै जाइ जाउ...आ ओहि पोस्टक कमेन्ट मे असंख्य सखी सभ अपन-अपन नेनपनक वा युवावस्थाक छवि पोस्ट कएने छलीह। हमरो की फुराएल सहजता सँ जे भेटल, अपन एकटा फोटो पोस्ट क' देलियैक। सभटा स्पष्ट होइतहि हम कहलियैक, ... ''आब बुझलियौ बात...''

बस्स...चिन्हार परिचय होइतहि मोबाइल नम्बरक आदान-प्रदान भेल आ गप्पक पेटार जे खूजल, से बन्द होएबाक नामे नहि ल' रहल छलए। अनन्त-अथाह गप्प जमा छलए हमरा दुनूक मोन मे। पहिले कॉल मे बीतल तीस बरखक सभटा हाल-समाचार आ सभटा खिस्सा पिहानी सुनि लेबा लेल हहुतपना जकाँ ढुकि गेल छलए जेना दुनू गोटाक मोन मे। रूपा कें तँ निश्चिन्त बला समय छलैक, साँझक समय। मुदा हमर तँ भोरका समय छलए, स्नान ध्यानक अबेर भ' रहल छलए। डॉक्टर लग सेहो जेबाक छलए। तैं मोन कनि अगुताएल सन छलए। सीमित समय मे असीमित गप्प क' लेबए चाहैत छलहुँ हम।

बेस! पहिने तँ बहुत रास औपचारिक गप्प-शप्प भेल रूपाक संग। कोना-की धिया-पूताक पढ़ाइ-लिखाइ करबौलक, माए-बाबू, सासु-ससुरक संग पतिदेवक बात-व्यवहारक चर्चा। मतलब नैहर-सासुरक सभ रंगक हाल-चाल भेलैक। ओहो हमरा सँ पुछलक, सभक विषय मे। तदुपरान्त कनि काल चुप रहलाक बाद रूपा प्रश्नवाचक 'टोन' मे पुछलक—

''ऐं गै सोनी...निलेशबाक समाचार मामा-मामी केओ गोटे कहबो कएलथुन की...?''

त्वरित प्रतिक्रिया स्वरूप हमरा मुह सँ बहराएल, ''के निलेशबा...'' अपन घर-संसारक ओझरौट मे ओझराएल हमर मोन सँ निलेशबाक स्मृति एहि तरहें क्षीण भ' जाएब हमरा स्वयं चकित कएलक, जखन रूपा बाजलि...''अरे ओएह... तोहर आ मात्र तोहर निलेशबा... कहियो ओ छौंड़ा हमरा सँ भरि मुह नहि बतिआएल... ओकर हृदय पर तोरे राज छलैक ने...कनि बिलमि पुनः बाजलि रूपा, ''कोना कहियौक... ओकर समाचार...ओह...''

—''केहन समाचार...की भेलैक से...ओकर विवाहक समाचार तँ बूझल अछि। मामा-मामी सँ भरि गामक हाल-समाचार बुझैत रहैत छी कहियोकाल। मधुबनीए लग छै ने सिबीपट्टी...ओही गाम तँ विवाह भेलैक ओकर।''

—''अरे विवाह भेला तँ पनरह-सोलह बर्ख भेलैक...से नै कहि रहल छलियौक हम। हम तँ दुःखद समाचार कहि रहल छलियौक...''

—''ऐं...से की गै...की भेलैक ओकरा...''

—''आब ओकरा की हेतैक...किछु नै भ' सकैत छै आब...आब निलेशबा सभटा दुःख-दर्द सँ उपर उठि गेलौक।''

—''की अनाप-शनाप बकने जा रहल छें...साफ साफ कहबें...की भेलैक से...?''

—''हमरा सहास नै भ' रहल अछि गै सोनी...कोना कहियौक...तोहर निलेशबा रेल सँ कटि क' जान द' देलकौ गै...''

हम अवाक...

रूपा विलाप करैत बाजैत रहलि, ''दसे बरखक बेटा छलैक...ओकरो मुह ताकि जीबाक लालसा नै भेलैक बतहबा कें...बूढ़ माए-बापक लेल नै सोचलक, से एक-रत्ती बुझि सकैत अछि लोक, माए-बाप कें तँ दोसर बेटा-पुतहु छै...मुदा अपन छौंड़ाक तँ माए-बाप, सभ ओएह छलैक। एहन निष्ठुर कोना भ' गेलैक, से नै जानि।''

हमर सिसकब सुनि कनिकाल लेल रूपा चुप भ' गेलि। कनिकालक बाद, हमरा चुप करबैत बजलीह —''जीबैत मे कहियो तों ओकरा मनुक्ख नै बुझलहीं गै सोनी...आब विलाप कएनहि की...आब ओ घुरि क' थोड़बे औतौक...तोहर मोन मे ओकरा लेल कनिको किछु छौक...से बुझबाक ओकर सपना, सपने रहि गेलैक।

एक हाथ मे मोबाइल लेनहि, दोसर हाथ सँ नोर पोछैत, बेसिन लग जाए नाक झाड़ैत, कनि मोन थिर करैत पुछलियैक रूपा सँ, ''कहियाक गप्प छै ई..? ई की केलकै बतहबा...'' आगाँ बकारे नहि फुटि रहल छलए हमरा।

ओमहर रूपा सेहो कनिकाल लेल गुम्म भ' गेलि।

फेर बाजलि, ''दू साल पहिनहि भेलैक ई काण्ड.. दरभंगा मे...जे-जतए सुनलक सभ चकित रहि गेल छलए ई हृदयविदारक समाचार सुनि। एहन प्रसन्न चित्त व्यक्ति, एहन कोना क' सकैत अछि, अविश्वसनीय सन लगलैक सभ कें। कारण, बड़ मखौलिया सन स्वभाव छलैक ने ओकर। तोरा सँ भले ही कनि खटपट करैत छलौक मुदा ओहू मे ओकर तामस नै, तोरा प्रति अनुराग रहैत छलैक। तों नै बुझैत छलहिन ओकर स्नेह कें, मुदा हमरा आ ज्योतिया कें स्पष्ट देखाइत छलए 'ओ' अनुराग ओकर। तोरा लेल।

कनिकालक मौनक बाद मोन हल्लुक करबालेल अपन व्यथा सुनाबए लगलियैक ओकरा, ''की कहियौक गै रूपा..हम जखनहि फेसबुक पर अकाउंट खोललहुँ, पाँच

बरख पहिने ओ हमरा फ्रेंड रिक्वेस्ट पठौने छलए। हम ओकरा चिन्हिओ गेल छलियैक प्रोफाइल फोटो सँ। मुदा ओएह...अपना कें पतिव्रता स्त्रीक कवचक भीतर तेना 'सील पैक' क' क' राखैत रहलहुँ सभदिन, जे सहास नहि भेल ओहि कवच सँ बहरएबाक। सती-सावित्री सन छवि बनाए आत्ममुग्धताक अनुभव करैत रहलहुँ, सभदिन। नहि एक्सेप्ट कएलियैक ओकर रिक्वेस्ट। डेराए गेलहुँ, हमर सुख-शांति सँ बीति रहल वैवाहिक जीवन मे किछु समस्या ने उत्पन्न भ' जाए। कारण हम ओकरा सोझाँ भले ही कनि 'ऐटिट्यूड' देखबैत रहैत छलियैक, मुदा झुकाव तँ कनि छलएहे हमरो ओकरा प्रति। छौंड़ाक स्वभावे ततेक नीक छलैक, जे केओ ओकरा सँ मोहित भ' सकैत छलए।''

—''अपन सभक ''अपब्रिंगिंग'' एहि तरहें भेल अछि, जे बड्ड डेराए लागैत छी हमसभ... पुरुष नै भेल... जेना शेर-बाघ भ' गेल... स्त्री-पुरुष सँ पहिने हमसभ एकटा मनुक्ख छी आ मनुक्ख कें मनुक्खक संग चाही...हर्ष आ विषाद दुनू स्थिति मे लोक ककरो संग चाहैत अछि...ई स्वाभाविक छै...आ आवश्यक सेहो छै... मेंटल हेल्थक लेल। आ ओ संग एकटा पुरुषक मात्र पुरुषे सँ हुअए स्त्रीक मात्र स्त्रिए सँ, से आवश्यक नै ने...। बहुत बेर एकटा पुरुष कोनो स्त्रीक सोझाँ बेसी सहज रहैत अपन सुख-दुःखक अभिव्यक्ति करैत अछि, बनिस्बत कोनो पुरुष मित्रक सोझाँ। एहि मे कोनो हर्जो नै छैक। मुदा अपन मिथिलाक लोकक संकीर्ण मानसिकता एखनहुँ सौ साल पहिलुके सन छैक। कोनो परिवर्तन नै देखाइत छैक कत्तहु।'' रूपा बड़ गिरथाइन भ' गेलि तीस बरख मे, तेहन ओकर गप्प सँ बुझाएल हमरा।

—''हँ...से तँ ठीके कहि रहल छैं...समय कतेक तेजी सँ बदलल जा रहल छै मुदा हमसभ अपना भीतर बदलाव नै आनि पाबि रहल छी। स्पष्ट मोन अछि ओ दिन जखन इंटरमीडिएट मे हमर 'एडमिशन' भेल छलए। कॉलेज जाए क्लास करब जे शुरु केलहुँ, त' लड़का सभ तेना घूरए, जेना हम कोनो तेसर ग्रह केर प्राणी होइ। बच्चा सँ मैट्रिक धरि गर्ल्स स्कूल मे पढ़लहुँ, से कॉलेज आबि लड़का सभक संग क्लास करबा मे बड़ असौकर्य सन भेल छलए। लड़का सभ कोनो बहन्ने गप्प करबाक ब्योंत लगाबए। नोट्स लेबा/देबाक बहन्ने, कोनो 'पर्टिकुलर' लेखकक पोथी अछि/नहि अछि, ताहि सभक बहन्ने। कोना रिएक्ट करी, की करी, की नै करी, किछु बुझाइते नै रहैत छलए। घर पछुआर मे कॉलेज रहने, अड़ोस-पड़ोस सँ, कतहु सँ हमर नाम पता क' लेलक दू चारि टा लड़का। एक दिन गर्ल्स 'कॉमन रूम'क बाहर सँ हमरा सोर पारलक ''सोनी...'' हम जोर सँ ''की...'' कहैत बाहर एलहुँ। हमरा भेल, हमर अप्पन लोक केओ पुकारलक, जकरा हमर नाम बूझल छै।

मुदा ओ हमर क्लासमेट छलए। चूँकि हम बाहर तक आबिए गेल छलहुँ, तँ पूछि देलियैक ''क्या काम है?''

मुश्किल सँ दू मिनट गप्प भेल होएत, आ से हमर घर तक बात पहुँचि गेल छलए। बहुत डाँट पड़ल छलए ओहि दिन घर मे। जेना कतेक भारी पाप कए घर घुरलहुँ हम। सएह दिमाग मे एखन धरि बैसल अछि, जे 'लड़का सँ गप्प करब पाप छै।' एही धारणा सँ ग्रसित हमर आत्मा ओकर रिक्वेस्ट एक्सेप्ट नै करए देलक हमरा...भ' सकैए ओकर रिक्वेस्ट एक्सेप्ट करितियैक, तँ किछु मोनक गप्प कहबाक प्रयास करैत ओ।''

रूपा हमर हँ मे हँ मिलबैत बाजलि—''हँ...सेहो ठीके कहलें... एहन कृत्य करबालेल केओ तखनहि विवश होइत अछि, जखन ओकरा बूझए बला केओ नै रहैत छै। जखन ओ ककरो लग अपन दुःख व्यक्त नै क' पाबैत अछि। मानसिक तनाव कम करबा मे ककरो द्वारा देल मानसिक सम्बल बड़ कारगर सिद्ध होइत छै ने।''

हमरा मोन मे असंख्य प्रश्न घुमि रहल छलए। एक्कहि बेर मे कएक टा प्रश्न दागि देलियैक —''मुदा तों से किएक कहलें जे अपन बेटाक माए-बाप दुनू ओएह छलैक? की ओकर कनिञा स्वर्गीय भ' गेल छलैक? की समस्या छलैक ओकरा? वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण छलैक की? किएक एना कएलक आखिर...एहन जिंदादिल मनुक्ख...?''

—''अरे की कहियौक गै सोनी...ई महिला सशक्तिकरणक हवा जे चलल छै ने, ताहि प्रतापें कतेको जिंदादिल पुरुष जीबितहि मुर्दा बनि जाइत छथि एखनुक समय मे। आ किछु तँ वास्तव मे मुर्दा बनि जाइत छथि, जेना निलेश बनि गेल। बड़ मुश्किल समय चलि रहल छैक। आजुक महिला शिक्षित भ' रहल छथि, स्वावलम्बी भ' रहल छथि, सशक्त भ' रहल छथि, ई नीक गप्प मुदा समाज पर एकर भारी दुष्प्रभाव पड़ि रहल छै ताहि दिस लोकक धिआन नै जा रहल छै। गंभीरता सँ सोचबाक बेगरता छै।''

हमहूँ महिला सशक्तिकरणक चलि रहल बसात आ एहि बसातक साइड इफेक्ट पर गौर करैत, बहुत किछु अनसोहाँत देखैत-सुनैत, व्यथित होइत रहैत छलहुँ। रूपाक विचार हमरा अपन विचार सँ एकदम मिलैत-जुलैत बुझाएल। फटाक सनि दही मे सही करैत कहलियैक, ''शिक्षित होएबाक संग-संग अपन सभ्यता, अपन संस्कृति कें नहि बिसरथि आधुनिक स्त्रीगण। शिक्षित होएबाक संग सुसंस्कृत रहथि महिला तँ समाज कतेक नीक भ' जाएत ने! मुदा अपन इर्द-गिर्द

देखि रहल छी, उच्च शिक्षिता स्त्रीगणक मानसिकता एहन सन छनि, जेना असभ्य आ उच्छृंखल होएब तखनहि लोक हुनका 'हाइली क्वालिफाइड' बूझत/मानत।''

—''सएह ने... ई तँ प्रसन्नताक गप्प भेल, जे मिथिलाक ललना आब सुशिक्षित आ स्वावलम्बी भ' रहल छथि। आब गाम-घर मे रहनिहार सामान्य आयवर्गक परिवारक बेटी सेहो उच्च शिक्षा प्राप्त करबालेल दूर-दूर, दोसर शहर जा रहल छथि। ई बदलाव स्वागत-योग्य अछि। मुदा एहि बदलावक नकारात्मक पक्ष बड़ भयंकर देखाइत अछि हमरा। ''विद्या ददाति विनयम्...'' बला बात नै देखाइत अछि स्त्रीगणक भीतर। विनयम् केर तँ बाते छोड़। जे लज्जा स्त्रीक गहना होइत अछि, सेहो उठाएब भ' गेलैक जेना। आइ उच्च शिक्षाक नाम पर लोक ततेक स्वतंत्रता द' रहल छथि अपन धिया कें जे ओहि गहनाक कत्तहु-कोनो अता-पता नहि देखाइत अछि। पश्चिमी सभ्यताक देखौंस कही वा सिनेमाक प्रभाव, अपना कें मॉडर्न देखएबाक जेना कोनो प्रतियोगिता भ' रहल अछि समाज मे। विशेष रूप सँ मैथिल समाजक तँ आरो विचित्र स्थिति बुझाइए हमरा।''

हमर मोनक गप्प क' रहल छलि रूपा। हमहूँ उत्साहित होइत अपन पक्ष राखि रहल छलहुँ। गप्प मे मगन भेल, हमरा स्नान ध्यानक कोनो सोहे नै रहल। अनायास ध्यान गेल, तँ समय देखलहुँ। ''डेढ़ घंटाक उपरान्त डॉक्टर लग जेबाक अछि, ठीक छै...पाँच मिनट मे हाँइ-हाँइ दू मग पानि ढारि लेब देह पर...भ' जाएत'' मोने-मोन सोचैत हम गप्प कें आगाँ बढ़ौलहुँ, ''आ ई घरे-घर जे ''डाइवोर्स''क बसात उठलैए, से की छै गै...एही महिला सशक्तिकरणक साइड इफेक्ट छैक ने!''

—''हँ..तँ..आर की...महिला लोकनि आब ततेक ने सशक्त भ' गेलीह जे पुरुषे कें प्रताड़ित करए लगलीह। एक तँ पढ़ि लिखि महिला ओहिना सशक्त भ' गेल छथि ताहि पर सँ कतेको कानून महिलाक सुविधा लेल बना देल गेल अछि जकर दुरुपयोग करैत कतेको महिला मिथ्या दोषारोपण क' पुरुषक शोषण क' रहल छथि आ एहने महिला सँ त्रस्त छलए निलेश... बेचाराक संग बड़ भारी 'छल' भेलैक।''

हम व्यथित होइत पुछलियैक, ''से...? से की..? बड़ पढ़लि लिखलि छलैए कनिञा ओकर...?''

—''धुर..जो...बिआह काल तँ ग्रेजुएशन फर्स्टे इयर मे पढ़ैत छलैक। निलेश समाजक सोझाँ 'आदर्श पति'क उदाहरण प्रस्तुत करैत ओहि मुहझौंसी कें ग्रेजुएशनक बाद एम ए आ तकर बाद नेट के परीक्षा दिआए पीएचडी धरि करौलकैक। पढ़ए मे होशियारि सेहो छलैए मौगी।''

—''अच्छा...से...'' हम अकचकाइत बजलहुँ।

रूपा धाराप्रवाह निलेशक जिनगीक वृत्तान्त सुनाबए लागलि, ''पीएचडी करिते काल मौगीक रंग-ढंग बदलए लगलैक। एम ए करैत छलैक मौगी तखने बेटा रहि गेलैक पेट मे। से...ओहि बच्चा कें ओ रच्छसनी किन्नहुँ नहि राखए चाहैत छलैक... ओ तैं निलेश आ ओकर माएक दबाव एहन पड़लैक जे ओ छौंड़ा आइ एहि संसार मे छैक। मुदा एहन पढ़ाकू छलैक मौगी, जे भरल पेट बच्चा...आ परीक्षा नै छोड़लकैक...एहनो कोन पढ़बाक लुतुक...''

—''नै..नै...से नै कहिन...पढ़बाक ई लुतुक तँ प्रशंसनीय छैक...एहन डेडिकेशन कम लोक मे रहैत छैक। हमरा स्वयं नै छलए... ग्रेजुएशन के बाद छुटिए गेल पढ़ाइ...जैं नै छलए एहन डेडिकेशन, तैं ने...!'' हम बीच मे टोकलियैक।

रूपा कें हमर टोकब नीक नहि लगलैक। हमरा झिड़कैत बाजलि, ''एँह...तों की बुझबिहिन ओहि मौगीक खचरइ...डेडिकेशन-तेडिकेशन किछु नै छलैक... ओकरा तँ ककरो संग चक्कर छलैक, तैं जी-जान लगाए पढ़ाइ कएलकैक आ जखन अपना पैर पर ठाढ़ भ' गेलैक, तँ निलेश कें ठेंगा देखा देलकैक। ओहि मनसा संगे रहए लगलैक। भगवान जानथि, कुमारिए सँ संबंध छलैक आ कि पीएचडी करैत काल संबंध बनलैक।''

''गे दाइ गे दाइ...घोर कलियुग आबि गेलैक.. ठीके! मतलब निलेशक खर्चा सँ पढ़ि लेलकैक आ ओकरा छोड़ि भागि गेलैक? एहन कसाइ कतहु मौगी भेलए...आ बेटा?'' हमर आश्चर्यक ठेकान नहि छलए।

—''सुनै न'...सभटा कहैत छियौक। 'तलाक'क नामपर पाइ ऐंठब आब ततेक सुविधाजनक भ' गेल छै जे की कहियौक। महिलाक पक्ष मे ततेक कानून सभ छै जे पुरुष अशक्त पड़ि जाइत अछि। गुजारा-भत्ताक लेल बच्चाक सहारा लेबाक मोन तँ बनौने छलैक मौगी मुदा बच्चाक कस्टडी निलेश कें भेटलैक। लम्बा केस लड़लाक बाद। मुदा तैयो बहुत मोट रकम देबैए पड़लैक निलेश कें। बुझाइए बत्तीस लाख कि पैंतीस लाख...एहने सन। एकटा सरकारी स्कूलक 'टीचर' निलेश आर्थिक आ मानसिक दुनू तरहें टूटि गेल। लोक-बेदक नजरि दया-भाव सँ ओकरा दिस उठए लगलैक...सेहो पीड़ादायके रहल हेतैक ने..! भगवान जानथि कथी सँ आहत भेलैक ओकर आत्मा एतेक...अतिशय आहत भेल हेतैक मोन ओकर, तखनहि एहन कठोर कदम उठौलक ने!''

''बाप रे! कतेक कठिन समय रहल हेतैक ओ निलेश लेल...ओह...हमरा ओकर रिक्वेस्ट एक्सेप्ट करबाक चाही छलए... ओकर हाल-चाल पुछबाक चाही छलए... ओफ्फोह...किएक हम एहन कठोर बनि गेलहुँ...बड़का भारी अपराध भेल

हमरा सँ। भ' सकैत अछि हमर दू टा मधुर बोल ओकर मानसिकता मे परिवर्तन आनि दितैक...ओह...'' हम अपराध बोध सँ मरल जा रहल छलहुँहें।

—''मोन शान्त करै सोनी...आब तँ जे हेबाक छलैक से भ' गेलैक...आ तोरा कोना आभास होइतौक जे एहन किछु चलि रहल छै निलेशक जीवन मे।''

—''हँ गै रूपा...करहे ने पड़त...हमरा मोन अशान्ते कएने की ओ वापस आबि जाएत..'' हम तत्काल कहि तँ देलियैक, मुदा निलेशक अपराधी तँ हम स्वयं कें आजीवन मानैत रहब आ व्यथित होइत रहब, एहन मोने-मोन तत्क्षण सोचि लेलहुँ हम।

—''नै जानि आइ-काल्हि महिला सभक भीतर कोन तरहक आक्रोश मोन मे व्याप्त रहैत छै पुरुषक प्रति...कहियो कोनो समय मे पुरुष महिला कें प्रताड़ित करैत छलथिन...शारीरिक, मानसिक यातना दैत छलथिन तकर ई मतलब कदापि नहि ने...जे आब महिला पुरुषक शोषण करए लागथि। मतलब हर ओ अधलाह काज जे पहिने पुरुख करैत छलाह, अपन स्त्री कें प्रताड़ित करबा लेल, से सभटा आब महिला लोकनि कें करब आवश्यक छै की? हमरा ई सभ सोचि दिमाग खराप होइत रहैए।''

हमहूँ चिन्ता व्यक्त कएल, ''स्थिति दिनानुदिन भयावह भेल जा रहल अछि आ आगाँ आरो बेसी भयावह होएबाक संभावना देखाए पड़ि रहल अछि। अपन-अपन धिया पूता कें शिक्षित करबाक संग-संग संस्कारी सेहो बनाबी हमसभ। नहि तँ लोकक सुख-चैन तेना विलुप्त भ' जाएत, जेना गाम-घर सँ 'ढक' आ 'कोठी' विलुप्त भ' गेल।''

—''हँ...एहिलेल दोषी तँ माइए-बाप छथि, कत्तहु-ने-कत्तहु...''

आब हमरा अबेर होइत बुझाएल...रूपा कें कहलियैक, ''हम-तों चिन्ते क' क' कोन बदलाव आनि लेब समाज मे, लोकक मानसिकता मे... ठीक छै... फेर दोसर दिन गप्प करैत छियौक...हमरा डॉक्टर लग जेबाक अछि रुटीन चेकअप लेल। मोन तँ नै भ' रहल अछि जेबाक, मुदा अपॉइंटमेंट लेल अछि...जाइए पड़त।''

—''ठीक छै...जो..जो...बाइ...''

—''बाइ...'' कहैत फोन डिस्कनेक्ट तँ क' देलियैक मुदा रूपाक संग हमर 'इंटरनल टॉकिंग' चलिए रहल छलए... लगातार।

मोने मोन कहैत रहलियैक ओकरा, ''की कहियौ गै रूपा... कखनोकाल लागैए जेना जिनगी निकलि गेल मात्र अपन चरित्रक शुभ्रता बचबैत। जेना शुभ्र वसनक शुभ्रता बचबैत लोक सजग रहैत अछि, जे कतहु सँ एक-रत्ती धूल-गर्दा नै पड़ए. ..कथूक दाग नै लागि जाए...तहिना...। निरर्थक सन लागैत अछि कखनोकाल

अपन जीवन। ने स्कूल-कॉलेज मे अपन इच्छानुसार ककरो सँ दोस्ती क' सकलहुँ, ने ककरो सँ भरि इच्छा गप्प क' सकलहुँ। सदिखन दिमाग मे एतबे रहल, हम फल्लाँ बाबूक बेटी छी, फल्लाँ बाबूक पोती छी, फल्लाँ बाबूक नातिन छी...लोक की कहत, लोक की सोचत, बस एतबे सोचैत जिनगी बिता लेलहुँ। कहियो ककरो परेशानी कम करबाक प्रयास करितहुँ से सहासे नै कएलहुँ...जखन कि अवसर तँ बहुत ठाम, बहुत बेर आबैत रहल। ककरो काज नै अएलियैक कहियो। जखन कि मनुष्य-जन्मक सार्थकता तँ परोपकारे मे छै...मोन पड़ैए ई श्लोक--

''आत्मार्थं जीवलोके'स्मिन् को न जीवति मानवः।

परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवतिः''

एहि तरहें रूपाक संग हमर 'इंटरनल टॉकिंग' चलैत रहल बड़ी काल धरि। वस्तुतः हमर साध्य एतबे छलए।

बसात

गुलाबदाइ आ घनश्याम बाबूक बीच कइअक दिन सँ घमर्थन चलि रहल छलनि। जीवनक अन्तिम पड़ाव जीबि रहल एहि दम्पतिक चारू सन्तान मे सँ एक्कहु टा लग मे नहि रहैत छलनि। बूढ़ी गुलाबदाइक जिद्द छलनि कोनो हालत मे डुबकी लगाइए क' रहतीह ओ।

भोर-साँझ पतिक कपार खाएब, रंग-रंगक दलील देब नियम भ' गेल छलनि। हुनकर कहब छलनि, ''नर्क भोगबाक लालसा ककरा हेतैक यौ...! ताहि पर सँ अपना मिथिलाक लोक ततेक ने दरबज्जे-दरबज्जे जाए गरुड़-पुराण सुनने रहैत छथि, माने हम अपनहुँ गप्प क' रहल छी...हमहूँ सुनैत रहल छी...से ओ सुनैत नर्कक आतंक सँ कनि बेसीए आतंकित भेल रहैत छै मोन सभक। हमरा डुबकी लगेबाक अछि, कोनो हालत मे।''

पतिक तर्क छलनि, ''मुदा से नर्कक आतंक ककरो शोषण करैत काल, ककरो कुबोल कहैत काल वा कोनो तरहक कष्ट दैत काल सेहो ने रहबाक चाही लोकक भीतर। जखन बुझले बात छै जे 'फाइनल डेस्टिनेशन' श्मशाने घाट अछि सभ मनुष्यक। नीक-बेजाए सभ कर्मक हिसाब-किताब एतहि चुकता करबाक अछि हमरा सभ कें, तथापि इरखा, द्वेष सँ भरल रहैए लोक।''

—''हे...बेसी ज्ञान झाड़ने हम नहि मानए बाली छी...प्रयागराज कोनो बिलैत नहि छै...लाखक लाख नै खर्च भ' जाएत। दस-बारह घंटाक यात्रा रहत, ट्रेन सँ जाइ चाहे गाड़ी सँ...जेना-जे व्यवस्था हुअए से जानी अहाँ...हमरा जेबाक अछि...बस्स...'' गुलाबदाइ छोट बच्चा जकाँ जिद्द पर उतरि गेल छलीह।

घनश्याम बाबू सेहो आसानी सँ मानि जाए लेल तैयार नहि। पत्नी कें बुझेबाक अपना भरि प्रयास जारी रखलनि—''भेड़िया धसान लोक रहतै...अहींक असुविधा लेल डेरा रहल छी हम। हमरा कोनो दिक्कत नै हैत...आ रहल पाइ खर्च करबाक बात...तँ आब हमरा कोन बेटीक विवाह करबाक अछि कि बेटा कें

पढ़ेबाक अछि...सभ किछु सँ निश्‍चिन्त छी...तखन पाइ के चिन्ते कोन...कहब तँ स्विट्जरलैंड घुमा देब अहाँ कें...!''

—''बस...बस...रहए दियौ...अहाँक दिलदारी बूझल अछि हमरा...पहिने संगम मे डुबकी तँ लगबा दिय'...बड़का ने ई हमरा स्विट्जरलैंड घुमा देताह कहाँदनि...''। गुलाबदाइ कोनो स्थिति मे कुम्भ स्नान सँ फराक गप्प सुनए लेल तैयार नहि छलीह।

घनश्याम बाबू पत्नी कें बुझेबाक प्रयास जारी राखैत बजलाह, ''देखियौ...सभ सँ आवश्यक छै जे मन, वचन आ कर्म सँ ककरो आहत नहि करी। सदिखन चेतना जागृत रहए, जे ई देह क्षणभंगुर अछि। स्वयं कें सुख, स्वयं कें लाभ सँ बेसी दोसराक उपकार लेल सोची हमसभ। जँ ई सभ बात कें ध्यान राखल जाए तँ से कोनो डुबकी सँ बेसी कारगर सिद्ध होएत। वास्तव मे सत्कर्म सँ बेसी कारगर कोनो तीर्थ, कोनो स्नान नहि भ' सकैत अछि। लाख संगम मे डुबकी लगा लेब कर्मक फल भोगहि पड़तै हरेक मनुष्य कें। ई बात बुझितो लोक प्रयागराज जाए लेल आफन तोड़ने अछि। विचित्र हाल छै स्त्रीगणक...!''

—''ठीक छै...रहए दियौ अहाँ... बहुत लोक जेतैक दरभंगा सँ...हम ककरो संगे चलि जाएब।'' आब गुलाबदाइ रुखि बदललीह। ओ आश्‍चर्य मे छलीह पतिक मुहें सत्कर्म करबाक आ कर्मफल भोगबा सन बड़का-बड़का बात सुनि। वास्तव मे डींग हाँकब इएह भेलैक, एहेन मोने-मोन सोचि रहल छलीह ओ।

पत्नीक तेवर बदलल देखि घनश्याम बाबू सेहो कनि नरम पड़लाह, ''अच्छा...मोन स्थिर राखू अहाँ...देखियौ तँ पहिले...किछु लोक कें घूमि क' आबए ने दियौक...पतो तँ चलत...केहन की व्यवस्था छै ओहिठाम। तखन चलब स्थिर सँ...''

गुलाबदाइ आ घनश्याम बाबूक तीन पुत्र मे सँ मात्र छोट बालक अपना देश मे रहि गेल छलनि। जे बेर-कुबेर सरकारी सेवा सँ निवृत्त पिताक टहल लेल उपस्थित रहैत छलनि। मुदा देश मे रहनिहार बालक मिहिर कें सेहो ततबा छुट्टीक जोगाड़ नहि भ' सकितनि, जे दरभंगा आबि माए-बाप कें अपना संगे ल' जाए प्रयागराज मे डुबकी लगबाए दितथिन।

एहेन मे पड़ोसी ठाकुर जी लग अपन समस्या रखलनि एकदिन घनश्याम बाबू। बेसी काल पार्क मे भेंट भ' जाइत छलनि दुनू गोटाक। टहललाक उपरान्त ओहिठाम कनिकाल बैसकी सेहो होइत छलनि हुनका लोकनिक। योगाक संग गप्प सरक्का चलल, फेर घुरैत काल संगे घर आबैत गेलाह, इएह रुटीन छलनि।

तँ पार्क मे बैसल एक दिन चर्चा शुरु केलनि घनश्याम बाबू, ''अरे की कहू ठाकुर जी...हमरा घर मे तँ जिद्द ठानि क' बैसलि छथि आलोकक माए...। संगम मे डुबकी लगाइए क' रहतीह ओ...। कोन उजाहि उठल छै प्रयागराज जेबाक से नहि जानि। आ मौगी सभ कें तँ बुझले अछि, खाली देखाउँसक पाछाँ बताहि भेल रहत।''

—''अरे से नहि कहियौ भाइ साहेब... अपन-अपन विश्वास छै लोकक।'' घनश्याम बाबूक मोन शान्त करबाक प्रयास करैत ठाकुर जी बजलाह।

आब घनश्याम बाबू बात कें सम्हारबाक प्रयास केलनि, ''प्रयागराज जाए डुबकी लगौनिहार पर कटाक्ष नहि क' रहल छी हम। प्रगतिशील सोचक लोक लेल भले ही बतहपनी होइक ई मुदा हम तँ अभिभूत छी, संगहि चकित सेहो, सनातन धर्म पर सभ आयुवर्गक आस्था ओ विश्वास देखि।''

दही मे सही करैत बात कें आगाँ बढ़ौलनि ठाकुर जी, ''वास्तव मे हम-अहाँ, केओ जिन्दगी जीबाक सही-गलत मापदण्ड तय करबाक पात्रता नहि राखैत छी। एक व्यक्ति लेल जे कर्म सही छैक, से दोसराक लेल गलत भ' सकैत छैक। अपन-अपन मापदण्ड छैक सभक। केओ मन्दिर मे भगवान कें ताकैत अछि, केओ हरेक मनुष्यक भीतर भगवान देखैत अछि। ककरो लेल अपन आनन्द सर्वोपरि छैक, ओकरे ओ जीवनक सार्थकता बुझैत अछि, आ ओकरे सत्कर्म। ओतहि ककरो लेल अपन निकटतम लोक कें सुखी आ आनन्दित देखब सर्वोपरि छैक। दोसराक सुख मे अपन सुख बुझैत अछि, एहन लोक। ओकरा ओही मे सन्तुष्टिक अनुभव होइत छैक। जिन्दगी जीबाक अपन-अपन तरीका छैक सभक। जकरा जाहि विधिएँ आत्मसन्तुष्टिक अनुभव होइत छैक, से सएह करबा मे रत देखाएत। चाहे ओ सन्तुष्टि घर मे भेटए, किंवा बाहर घूमि-फिरि क' भेटए। तीर्थ यात्रा वा संगम स्नान मे भेटए। सभक अपन नजरिया छैक। अपन सोच छैक।''

ठाकुर जीक एहेन भारी-भरकम ज्ञान भरल वक्तव्यक उपरान्त आब घनश्याम बाबू पत्नीक विरोध मे एक्कहु शब्द बाजब ठीक नहि बुझलनि आ सोझे प्रयागराज जेबाक दिन, समय आ माध्यमक गप्प करए लगलाह।

ओहुना टी वी मे सेहो देखिए रहल छलाह सभदिन महाकुम्भक धूम केहेन मचल अछि, से। देश के कहए, विदेश धरि। बच्चा, बूढ़, युवा, प्रौढ़, सभ बएसक लोकक उत्साह चरम पर देखा रहल छलैक। ट्रेनक टिकट उपलब्ध नहि रहने, हजार कि दुइओ हजार किलोमीटर दूर सँ लोक हिम्मत क' रहल छलए, गाड़ी 'हायर' क' क' संगम मे डुबकी लगएबाक। भले ही जाइए-आबए मे पाँच-छओ दिन समय खर्च भ' रहल छलैक लोकक। दस-दस घंटा रोड-जाम रहैक, ताहि सँ की!

इएह सभ स्थिति-परिस्थिति देखि, आखिर सुरेश ठाकुर आ हुनक पत्नी नीलम ठाकुर कें संग कए प्रयागराजक यात्राक प्रोग्राम बनौलनि घनश्याम बाबू। जखन अपन सन्तान सभ लग मे छलनिहें नहि, तखन तँ बस पड़ोसी ठाकुर दम्पतिक आस छलनि। आ से आस ओ दुनू प्राणी सहृदयताक संग पूरा करबा लेल तत्पर रहैत छलाह। बेर-कुबेर सम्हारए बला नीक पड़ोसी छलाह।

अन्ततः ओ दिन एलनि जाहि लेल गुलाबदाइ बेहाल छलीह। चारू गोटे एकटा चारि-चकबा भाड़ा कए विदा भेलाह प्रयागराज लेल। एक सप्ताहक प्रोग्राम छलनि। तैं पहुँचलाक बाद गाड़ी छोड़ि देल गेल। घुरती कालक ट्रेनक टिकट भ' चुकल छलनि दुनू दम्पतिक। पहुँचैत गेलाह गंतव्य पर। सहृदय आ सजग पड़ोसी संग छलथिनहें। स्नान सँ ल' क' भोजनादिक बात-व्यवस्था पर्यन्त केर ध्यान राखबा मे कतहु कोनो चूक नहि हुअए, ताहि लेल तत्पर छलाह ठाकुर जी आ हुनकर अर्द्धांगिनी सेहो। तीनू बेटा-पुतहु जखन-तखन फोन पर हाल-चाल पूछैत रहैत छलथिन। बेटी-जमाए सेहो हैदराबाद सँ हाल-चाल लैत रहैत छलथिन। कखनो हुनका लोकनि कें गप्प होइन, कखनो नेटवर्क धोखा द' जाइन। मुदा नहिओ गप्प होइन, तैयो एकटा निश्चिन्तता छलनि धिया-पूताक मोन मे। कारण, पड़ोसी ठाकुर दम्पति ततेक परोपकारी, ततेक विश्वासपात्र लोक छलथिन जे धिया-पूता आश्वस्त छलाह, ओ सभ सम्हारि लेताह नीक जकाँ।

संगम तट पर आबि दुनू दम्पति कें अभूतपूर्व आनन्दक अनुभूति भ' रहल छलनि। जाहि कुम्भ मेलाक चर्चा टी वी पर देखि/सुनि रहल छलाह कइअक दिन सँ, ताहि संगम तट पर साक्षात विद्यमान रहब सुखद छलनि हुनका सभ लेल। महाकुम्भक एहि भव्य आयोजनक साक्षी होएब भाग्यक बात छलनि, जाहि लेल विश्व भरि मे अपन देश चर्चा मे छलए। सनातन धर्म पर लोकक आस्थाक चर्चा, सनातन धर्मक चर्चा, सनातन धर्मक शाश्वतताक चर्चा चरम पर छलए। देश-विदेश सँ आएल श्रद्धालु मे सनातन धर्म कें बुझबाक, अपनएबाक इच्छा सेहो देखबा मे अएलैक लोक कें, एहि महाकुम्भ मेला मे। वास्तव मे सनातन धर्म खराप आचरण सँ दूर रहि, शान्ति आ ध्यान पर फोकस करब सिखबैत अछि, से लोक कें स्पष्ट भेलैक एहि चर्चा सँ।

''एहि महाकुम्भ मेला मे बहुत किछु एहन भ' रहल अछि जे पहिले नहि होइत रहल छलए। ई पहिल कुम्भ मेला अछि, जखन लोक प्रयागक संग-संग अयोध्या जाए रामललाक दर्शन सेहो क' रहल अछि। अधिकांश तीर्थयात्री सएह प्रोग्राम बना क' आएल छथि। वास्तव मे ई बहुत सुखद संयोग बनलैक लोक लेल।'' सुरेश ठाकुर, घनश्याम बाबूक संग गप्पक क्रम मे बजलाह।

रामचरितमानस केर कइअक बेर पाठ क' चुकल घनश्याम बाबू अपन ज्ञानक पेटार खोलैत बजलाह, ''असल मे भगवान रामचन्द्र सेहो पहिले प्रयागराज पहुँचि गंगाजीक दर्शन कएलनि, तखन अयोध्या पहुँचल छलाह। एहन रामचरितमानसक किछु पाँती सभ सँ स्पष्ट प्रतीत होइत अछि। श्री रामचन्द्र भगवान जखन विमान सँ अयोध्या लौट रहल छलाह, तखन विमाने पर सँ जहिना गंगा जी देखा पड़लथिन, भगवान बजलाह–

''पुनि देखी सुरसरी पुनीता। राम कहा प्रनाम करु सीता।।''

आगाँ ओ कहैत छथिन–

''तीरथपति पुनि देखु प्रयागा।
निरखत जन्म कोटि अघ भागा
देखु परम पावनि पुनि बेनी।
हरनि सोक हरि लोक निसेनी
पुनि देखु अवधपुरि अति पावनि।
त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि।।''

–''अच्छा...इहो कारण भ' सकैत छै, जे करोड़क करोड़ लोक प्रयागराज मे स्नानक उपरान्त अयोध्या जाए अपन भगवान रामचन्द्र जी कें प्रणाम करबाक मोन बना क' आएल अछि।'' एहि बातक संग ठाकुर जी सरकारी आँकड़ाक गप्प सेहो केलनि। जकर पुष्टि होइत रहल अछि न्यूज चैनल सभक माध्यम सँ।

थोड़े आगाँ बढ़ला पर दुनू गोटे देखलनि जे भीड़ सँ परेशानी भ' रहल छनि दुनू गोटाक स्त्री कें...तखन घनश्याम बाबू कनि खौंझाइत बजलाह, ''बहुत लोक प्रतिद्वंद्विताक भाव सँ सेहो धरोहि लागि, भीड़ बढ़ा देने अछि। माने एहि सोचक तहत सेहो आबए लागल लोक सभ जे जखन पड़ोसी भ' आएल प्रयागराज सँ, तँ हम कोना पाछाँ रही। सभ सर-कुटुम्ब भ' अएलाह तँ हमरो जेबाक चाही। एकरा आस्था थोड़बे ने कहल जाएत। ई देखाउँस भेल! बतहपनी भेल!''

ठाकुर जीक पूर्ण सहमति छलनि घनश्याम बाबू सँ। ओहो अपन बात रखलनि, ''जखन कि सनातन धर्म मे पुण्य-स्नान आ मन्दिर जेबाक उद्देश्य रहैत छै अपन अन्तःकरणक शुद्धि करब। भावक पवित्रता महत्वपूर्ण होइछ। हमर-अहाँक भीतरक अज्ञानताक क्षय हुअए तीर्थाटन सँ, तखनहि तीर्थाटनक सार्थकता बुझी। मन्दिर वा कोनो तीर्थ जाए दानक परम्पराक पाछाँ ई सोच अछि जे लोभक वृत्ति कम हुअए, हमर-अहाँक बीचक राग-द्वेषक क्षरण हुअए। वैराग्य उत्पन्न हुअए। माया-मोह सँ उपर उठी हमसभ। जे एकटा स्वस्थ समाजक लेल आवश्यक अछि/रहत सभदिन। अपना लेल किछु माँगब सनातन धर्म नहि सिखबैत अछि।

अन्तःकरणक शुद्धि, राग-द्वेषक शिथिलता आ वैराग्य पर बल दैत अछि अपन सनातन धर्म। मुदा से के बुझैए...''

मौनी अमावस्या दिन भगदड़क समाचार, जहि-तहि रेलवे स्टेशन सभ पर भीड़भाड़ सँ उत्पन्न विकट स्थिति आ सड़क सभ पर भयंकर जामक समस्या, सभ किछु न्यूज चैनल पर प्रसारित कएल जा रहल छलए। ई सभ देखि/सुनि दरभंगा निवासी दुनू दम्पतिक धिया-पूता दरभंगा सँ विदा होएबा सँ एक दिन पहिनहुँ धरि बुझबैत रहल छलनि। नहि जाउ एतेक भीड़भाड़ मे। फोन पर बेर-बेर बुझेबाक प्रयास करैत रहलथिन मिहिर जी, ''परेशान भ' जाएब...बहुत भीड़ चलि रहल छै...पहिनहुँ एक बेर उज्जैनक कुम्भ मे नहाएले छी...किएक जिदिआएल छी...छोड़ि ने दियौक...''

मुदा ता धरि दुनू दम्पति मोन बना लेने छलाह। केओ टस-सँ-मस नहि भेलाह।

घनश्याम बाबूक कहब छलनि, ''ठीक छै...बेसी सँ बेसी की भ' सकैत अछि...जान चलि जाएत, सएह ने..? संगम-स्थल पर किछु भइए जाएत तँ चिंताक कोन बात...? तरिए जाएब ने!''

मिहिर जी कनि खिसिआए क' बाजल छलथिन। माए-बाप कें बुझबैत-बुझबैत मोन जेना दिक् भ' गेल छलनि, ''एँह...तरि जाएब...हमरा सभक परेशानी सँ कोनो मतलबो अछि अहाँ सभ कें...? प्राण टाँगल रहत, हमर आ हमरा संग-संग दुनू भाइजी आ बहिन दाइ कें सेहो।''

—''से मोन तँ कत्तहु रहब तँ टँगले रहत...जा धरि जीबैत रहब ता धरि चिन्ता छूटए बला अछि थोड़बे ने...! नहि जा सकब तँ अफसोच रहि जाएत...आ ओहुना ठाकुर जी दुनू प्राणी संग मे रहबे करताह... किएक टेंशन ल' रहल छी अहाँ...?''

हारि मानि गेल छलाह आखिर मिहिर जी। बुझा गेलनि, नहिए मानताह किन्नहुँ। मोने-मोन माता-पिताक हिम्मत कें दाद सेहो द' रहल छलाह। तामस सेहो आबि रहल छलनि। मिश्रित सन भाव छलनि हुनका मोन मे।

जीवनक अन्तिम पड़ाव जीबि रहल छलथिन माता-पिता सेहो दिमाग मे सदिखन रहैत छलनि। एहन मे हुनका लोकनिक इच्छाक मान राखब आवश्यक अछि, सेहो ज्ञान छलनि। आ सएह कएलनि मिहिर जी। प्रयागराजक उपरान्त अयोध्या, आ अयोध्याक उपरान्त मथुरा, वृन्दावन, ऋषिकेश, सभ ठाम अपन हाजिरी लगबैत, तीर्थ यात्रा संपन्न करताह घनश्याम बाबू सपत्नीक, से तय भेलनि। बालक मिहिर अयोध्या पहुँचि, माए-बापक संग लागि जेताह आ सभठाम

घुमबैत-फिरबैत अपन दिल्ली स्थित किरायाक डेरा पर विश्राम लेल ल' जेथिन माता-पिता कें, से निश्चित भ' गेल छलए।

बेस! प्रयागराज पहुँचला पर सेक्टर अठारहक एकटा पंडाल मे दरभंगा सँ आएल दुनू दम्पति कें जगह भेटलनि। संगम मे डुबकीक संग बहुतो सन्त, साधक, संन्यासी, जगतगुरु शंकराचार्य, महामण्डलेश्वरक संग नागाक दर्शन करैत गेलाह। संगहि किछुए दूरी पर महामण्डलेश्वर स्वामी भास्करानन्द जी महाराजक 'अखण्ड दया धाम शिविर' मे कथा-प्रवचन केर श्रवण करबाक अवसर सेहो भेटलनि। कुम्भक आयोजनक पाछाँक मूल कथाक श्रवण सेहो कएल, स्वामी जीक मुखारविन्द सँ।

कुम्भ आ अमृतक ओहि पौराणिक कथा सँ निष्कर्ष ई निकलैत अछि जे जीवन मे अमृत प्राप्त करबाक अछि तँ एकोन्मुख भ' विवेकक मन्थन करैत सनातन धर्मक रक्षा करब आवश्यक अछि। आ एहि क्रम मे बहुत बेर एहन अवसर सेहो आबि सकैत अछि जखन किछु समयक लेल असुरक सहायता सेहो लेबए पड़ि जाए। ओहि अस्थायी गठबन्धन सँ विचलित होएबाक बेगरता नहि छैक।

एहि तरहें प्रवचन सुनैत बेरु पहरक समय बितबैत छलाह दरभंगा सँ आएल दुनू श्रद्धालु दम्पति। भोरे सबेर-सकाल स्नान-ध्यान, तदुपरान्त भोजनादि, आ तकर बादक समय ज्ञान-ध्यानक बात सुनैत बिताएब, एकटा रुटीन बनि गेल छलनि चारू गोटेक।

अगिला दिन भोरे अयोध्या लेल प्रस्थान करबाक छलनि गुलाबदाइ आ घनश्याम बाबू कें। ठाकुर दम्पति वापस दरभंगाक लेल प्रस्थान करताह, सेहो सुनिश्चित छलनि। रेलवे स्टेशन लेल संगहि सभ गोटे निकलताह, आ अपन-अपन ट्रेन पकड़ताह से तय छलए। हालाँकि दरभंगा बला आ अयोध्या बला ट्रेनक समय मे तीन घंटाक 'गैप' छलनि तथापि संगहि संगम-तट सँ निकलबाक नेआर छलनि दुनू दम्पतिक।

आहि रौ बा! ई की! भोरे निकलबाक नेआर छलनि आ ओहि सँ पूर्व संध्या एकटा बड़का काण्ड भ' गेलनि। 'अखण्ड दया धाम शिविर' मे कथा-प्रवचन केर श्रवण करैत दुनू दम्पतिक आँखिक सोझाँ हुनकर सभक ठहरबाक स्थान माने सेक्टर अठारह आगिक चपेट मे आबि गेल। धधरा आ धुआँ सँ भरि गेल वातावरण। अफरा-तफरी आ हल्ला-गुल्ला भिन्ने!

घनश्याम बाबूक आदति छलनि अपन डाँड़े मे सभटा पाइ-कौड़ी बान्हि क' राखबाक मुदा ठाकुर जी संग मे कम्मे-सम्मे पाइ राखि, शेष बैग मे राखैत छलाह। ताला मारि क'। सभ स्वाहा भ' गेलनि। कपड़ा-लत्ताक लेल तँ ततेक अफसोच नहि, मुदा पाइ-कौड़ी सुड्डाह भेने हाथे-पैर हेराएल सन बुझाए लगलनि। बेटा-बेटी

कतबो सिखबनि ऑनलाइन पेमेंट करब, ठाकुर जी प्रयासो नहि करथि सिखबाक। कैश सँ कोनो बस्तु कीनब-बेसाहब बेसी सुविधाजनक लागैत छलनि हुनका।

बासा पर राखल सभ समान सुड्डाह भेने, 'बाबाजी' बनि प्रयागराज सँ विदा भेलाह दुनू दम्पति स्टेशन लेल। स्टेशन धरि जेबाक जोगाड़ तँ भ' गेलनि घनश्याम बाबूक कृपा सँ आ ट्रेनक टिकट बुक छलनिहें। तथापि घर सँ बाहर निकलने डेग-डेग पर पाइ तँ चाहबे करी।

से घनश्याम बाबूक पत्नी गुलाब दाइ मात्सर्यवश ठाकुर दम्पति लेल अपन पति सँ सिफारिश केलनि, ''ठाकुर जी संकोची स्वभावक लोक छथि। मुँह खोलि किछु कहि नहि पाबि रहल छथि। मुदा रस्ता मे पाइ कें बेगरता तँ हेब्बे ने करतनि। किछुओ हजार-दू हजार द' ने दिअनु हाथ क'...''

बाप रे! पत्नी पर तेना आँखि गुरड़लनि घनश्याम बाबू... बेचारी गुलाब दाइ सकदम्मे भ' गेलीह। पत्नी कें सकपकाएल देखि बात कें सम्हारबाक प्रयास केलनि, ''अप्पन करीबी लोक कें पाइ-ताइ नै देबाक चाही। अहाँ दुनियादारी नै बुझैत छियै... एक रत्ती नै बुझैत छियै। बेसी अपनैती जाहि ठाम रहैत छै, ओहि ठाम तगादा करब सेहो कठिन। अपना मोनें नै देलाह पाइ, तँ पानि मे गेल बुझू!''

''हद्द करैत छी अहूँ यौ...'' पत्नी अचम्भित!

''अहाँ बेसी नीक लोक नहि बनू...'' पतिक आदेश छलनि।

''माने एहनो समय मे...एना सोचबै? नै घुराबथि, सहयोगेक रूप मे नै द' सकैत छिअनि? धुर जाउ... कतेक सिखाउ अहाँ कें हम...!''

ठाकुर दम्पति सँ कनि दूरी पर आबि घनश्याम बाबू आ गुलाब दाइ बहसबाजी मे लागल छलाह। माने सजग छलाह दुनू गोटे जे ठाकुर दम्पति धरि हुनकर सभक आवाज नहि पहुँचनि।

आ हुनका सभ धरि आवाज ने पहुँचि जाए, ताहि डर सँ गुलाब दाइ बेसी जोरो नहि द' सकलीह घनश्याम बाबू पर। आखिर नहिए निकललनि एक नया पाइ, घनश्याम बाबूक हाथ सँ।

एहि बात लेल बड़ी काल धरि गुलाब दाइ मुहो फुलौने रहलीह, पति सँ। मुदा मुह फुलौने की ठाकुर दम्पति कें हाथ मे पाइ चलि जइतनि?

खैर...जे भेलैक से भेलैक... अगिला दिन भोरे आठ बजे अयोध्या पहुँचलाह दुनू प्राणी। मिहिर फोन लाइन पर जुड़ल रहलथिन। थोड़बे काल स्टेशन पर रुकए पड़लनि, आ मिहिर अपन माता-पिताक सोझाँ उपस्थित। आनन्दित भेलाह दुनू प्राणी।

बेटाक संग अयोध्याक उपरान्त मथुरा, वृन्दावन, ऋषिकेश, सभ ठाम अपन हाजिरी लगबैत, तीर्थ यात्रा संपन्न कएलनि, गुलाबदाइ आ घनश्याम बाबू।

सभठाम घुमबैत-फिरबैत बालक मिहिर अपन दिल्ली स्थित किरायाक डेरा पर विश्राम लेल ल' अनलथिन माता-पिता कें। जेना कि प्रोग्राम तय छलनि। दस दिन ठहरलाह बेटाक डेरा पर। पुतहु-पोता-पोती सभ कतबो जिद्द कएलकनि, किछु दिन आरो ठहरबाक लेल, नहिए मानलनि। अन्ततः गाड़ी पर बैसा देलथिन माता-पिता कें। दरभंगा लेल प्रस्थान कएलनि गुलाबदाइ आ घनश्याम बाबू।

माता-पिता कें रेलगाड़ी पर बैसा क' घर घुरलाक उपरान्त सेहो थोड़े-थोड़े काल पर फोन क' पूछि लेब नहि बिसरलाह बालक मिहिर। ''कोनो असुविधा तँ नै ने बाबूजी...'' पुत्र-धर्मक पालन करैत मिहिर जिज्ञासा करैत रहलथिन, भरि रस्ता।

प्रातःकाल जखन रनिंग स्टेटस मे देखि लेलनि जे गाड़ी दरभंगा पहुँचि गेल अछि। माए कें फोन लगौलनि बालक मिहिर—''हँ माँ...सकुशल पहुँच गेलहुँ ने घर? मोबाइल मे देखलहुँ, साढ़े दसे बजे arrived लिखने अछि। तखन नै कॉल केलहुँ, सोचलहुँ घर पहुँचि जाइ अहाँ सभ तखनहि निश्चिन्त सँ गप्प करब।''

—''हँ'...हँ'... बड़ नीक जतरा छलए। कोनहुँ असुविधा नहि भेल। समय पर सेहो छलए गाड़ी।'' माए हर्षक संग सूचित कएलथिन।

पुनः बजलीह, ''संजोग एतेक नीक जे गाड़ी सँ उतरितहि एक टा छौंड़ा भेटि गेल। कहलक 'पचास रुपया दे देम मैडम, समान पहुँचा देम बाहर तकले।' बड्ड गरीब छलए बेचारा...पैर मे चप्पल पर्यन्त नहि छलैक। हमरा तँ बड़ माया लागि रहल छलए। मोन भेल, पचास टाका अपना दिस सँ आरो द' दियैक। ओना तँ कूली सभ दू सए टाका सँ कम मे नहिए ल' जाइत समान। आ से अहाँक बाबू किन्नहुँ नहि दितथिन, भले ही प्लैटफॉर्म नम्बर पाँच सँ समान उघैत तबाह भ' जइतथि। अपन बाबूजी कें तँ चिन्हिते छी अहाँ। कम-सँ-कम ओही दरिद्र-नारायण कें पचास टाका अपनो दिस सँ दितथिन, सेहो नै फुरेलनि। हमहूँ आखिर कतेक लड़ैत रहू सभ बात लेल हुनका संग। चुप रहि गेलहुँ। मुदा घर पहुँचलाक बाद सोचि-सोचि आब बेसी खराप लागि रहल अछि। एहेन तीर्थयात्रा कइए क' की? तेहेन सन लागि रहल अछि।'' माएक स्वर मे ग्लानिक भाव स्पष्ट सुनाइ पड़लनि मिहिर जी कें।

एकटा दरिद्रक दरिद्रताक लाभ उठएबाक ई प्रसंग भीतर तक झकझोरि देलकनि जेना। चुप्पे रहलाह थोड़े काल।

''मानवक भीतर सँ मानवता एना किएक विलुप्त भेल जा रहल अछि आखिर!'' मिहिरक दिमाग मे बस एतबे चलि रहल छलनि।

पुरुष मनोविज्ञान

‘पति’ ओ जे पत्नीक सभ बात बिना एक्कहु सेकेंड गमओने अस्वीकार क’ देल करथि। थिर मोन सँ सोचि विचारि फेर अन्ततः करताह पत्नीक कहल। मुदा पत्नी किछु कहथि आ पति सहर्ष बात मानि लेथि, ई असंभव!

किछु प्रसंग प्रस्तुत क’ अपन बात स्पष्ट करबाक चेष्टा कएलहुँ।

• • •

‘‘यौ! सुनै छी?...एहि रवि क’ बजार चलब... पनरह दिन मात्र समय रहि गेलए बबलीक विवाहक। कपड़ा-लत्ता, गहना-जेवर कहिया लेबै? एकमात्र भगिनी छथि। ई सभ मौका बेर-बेर नहि आबैत छै ने! मामा-मामी भ’ क’ जेबै तँ ल’ द’ क’ जेबै ने...? लाल दाइक सासुरक लोक सेहो कहतनि ने! जे बबलीक नाना नानी स्वर्गीय भ’ गेलथिन ताहि सँ की? मामा-मामी कोनो त्रुटि नहि रहए देलथिन। मोन गद गद भ’ जेतनि लाल दाइ कें। आ...हे...सुनू... हमरा अपनालेल सेहो एक-दू टा नीक नूआ लेमए पड़त। बिआह मे पहिरब से एक्कहु टा नीक नूआ कहाँ अछि हमरा लग।’’ अखबार मे आँखि गड़ओने पतिदेवक सोझाँ पत्नी अपन बात रखलीह।

बिनु एक्कहु सेकेंड गमओने पतिदेवक त्वरित प्रतिक्रिया—

‘‘एह! अहूँ जुलुमे बला बात करैत छी... एक सए नूआ भरने छी अलमीरा मे...’’ बिच्चहि मे बात काटैत पत्नी बजलीह—

‘‘हमरा बूझल अछि अहाँक बहन्ना ...रहए दियौ। छोड़ू हमरा नहि किछु लेबाक अछि।’’

पत्नी अपन मोन हल्लुक करबालेल बड़बड़ाइत रहलीह, ‘‘अहाँ तँ से कॉमर्स पढ़ने छी, जे एकटा बस्तु लेमए सँ पहिने चारि बेर सोचब आवश्यक अछि अहाँ कें, ‘की अमुक बस्तु लेब अत्यावश्यक अछि?’ अहाँ तँ सभदिन दोसरो कें इएह पट्टी पढ़बैत रहलहुँ ने...? अहाँ सन कृपण मनुक्ख नै देखलहुँ एहि संसार मे।’’

दोसर दिन बजार गेला पर साड़ी दोकान मे पतिदेव, ‘‘पसिन पड़ैए तँ अपनालेल सेहो ल’ लिय’ दू टा दामी नूआ।

''पार्टीवेअर''...

• • •

''यौ... सुनू न'! ई एतेक जगह जे बरामदाक नामपर अनेरे छोड़ल अछि से जँ एकरा घेरबा क' स्लाइडिंग बला खिड़की सभ लगवा देल जाए तँ एतबा जगहक सदुपयोग भ' जाएत।''

पतिक त्वरित प्रतिक्रिया, ''ओ घेरल केहन लगतै...कतेक नीक हवा आबैत छै। अहाँ कें बैसल-बैसल किछुओ फुराइत रहैए...।''

दस दिनक उपरान्त ''ओना अहाँक आइडिया कोनो बेजाए नहि...किछु खर्चा क' घरक लुक सेहो नीक भ' जाएत आ जगहक सदुपयोग सेहो भ' जाएत।''

• • •

''यौ! देखियौ न' अपने गली मे एक टा रिक्शाबला खाली रिक्शा ल' क' हल्ला क' रहल अछि। ''कुछ मदद कर दो, बाबू लोग। कुछ अनाज पानी, रुपया-पैसा दे दो। लॉकडाउन मे सवारी नहीं मिल रहा है।'' बालकोनी सँ ओकरा रुकबाक इशारा क' देलहुँ हम। लिय' निचाँ जाए ई चूड़ा-गुड़ आ किछु पाइ द' ने अबियौ। हमरा भानसक अबेर होइए।''

पतिक त्वरित प्रतिक्रिया ''ककरा ककरा मदद करबै अहाँ...रिक्शा तँ एखन बहुतो के नै चलि रहल छै। एकर सभक धंधा रहैत छै माँगबाक... ''

दू मिनटक उपरान्त, ''अच्छा लाउ ...द' आबैत छियै ...।

• • •

''यौ, मोन होइए एक बेर देवघर जाए रुद्राभिषेक करबितहुँ।''

''ई कोन भूत चढ़ि गेल अनायासे। कोनो पंडितक फेरा मे पड़लहुँ की? डरा देने होएत जे ग्रह-नक्षत्र ठीक नहि चलि रहल अछि।''

''से किएक? ग्रह दशा ठीक रहैत लोक रुद्राभिषेक नहि करा सकैत अछि? सभदिन सभठाम सभ गोटे निकें-नाँ रहए ताहिलेल?''

''ओ...हो..., अहाँ तँ तेना एक टा बात कें पकड़ि लैत छी जे...। अच्छा ठीक छै चलू। कहिया जेबाक नेआर अछि?''

• • •

यौ सुनू न'...चारू धाम यात्राक बड्ड नीक ऑफर आएल छै आइ आर सी टी सीक तरफ सँ। सोलह दिन मे चारू धाम घूमि आएब। एक बेर बुकिंग कराउ... बस। हमरा गुड़िया माए कहलनि। ओहो सभ जेबाक नेआर कएने छथि। बेर-बेर टिकट लेब, बेर-बेर प्रोग्राम बनाएब ताहि सँ नीक एक्कहि बेर मे सभ टा भ'

जाएत। तकर बाद मात्र जे ज्योतिर्लिंग सभ बचल छथि, हुनकर सभक दर्शन करब बाकी रहत। आ तकर बाद मात्र गंगासागर।''

पतिक त्वरित प्रतिक्रिया, ''एहन कोन पराहि लागल अछि से? एखने कोन अस्सी बरखक बूढ़ भ' गेलहुँ... जे मात्र तीर्थयात्रा पर धियान लागल रहैए।''

''अहूँ विचित्र बात करैत छी? माने तीर्थयात्रा करबा लेल बूढ़ होएब आवश्यक शर्त रहैत छै की?''

''अरे हमर कहबाक मतलब से थोड़बे छलए...चलू चलब तँ ... शुभ काज मे विलम्ब किएक?''

• • •

''ऐं यौ! ई की कहि रहल छथि बौआ, हमसभ मुंबइ जा रहल छी आठम दिन? हमरा कतहु नहि जेबाक अछि। हॉस्पिटले हॉस्पिटले छिछियाइत रहब? ओहि सँ की लाभ? कहुना छओ मास, साल भरि घीचैत तीरैत बेसी जीबि लेब हम। सएह ने? ओहन जीवन नहि चाही हमरा। हमरा कारण अहाँ तीनू बाप-पूत हरान भेल रहब से हमरा कोन सुख देत? कहू तँ...? हमर जीवन बहुत आनन्दमय बीतल, कोनो टा मनोरथ शेष नहि अछि आब। एकमात्र मनोरथ शेष छल जे मरैत काल सीथ मे सेनुर आ हाथ मे लहठी भरल रहए, सेहो भगवान पूरा करबाक ब्यौंत लगा देलनि। हम शान्ति सँ अपना घरे मे रहि अपन शेष जीवन बिताएब, बुझलहुँ ने? आ ...हे...एक टा इहो मनोरथ पूरा क' दिय'... आइ धरि कहियो कोनो बात एक्कहि बेर मे अहाँ मानि गेलहुँ हमर से मोन नहि अछि हमरा।''

''अहाँ सोचि कोना लेलहुँ जे एहन अनर्गल बात हम एक्कहि बेर मे मानि लेब।'' पतिदेव खौंझाइत बजलाह—''एक बेर मे के कहए, अहाँक ई गप्प तँ हम कहियो नहि मानब, आठम दिन चलबाक अछि मुंबइ, तँ चलबाक अछि, बस्स!''

कहबाक लेल तँ कहि देलनि मुदा बात मनबाएब स्त्रीगणक लेल कोनो कठिन काज नहि, से नीक जकाँ बूझल छलनि पतिदेव कें। तथापि टिकट कैंसिल नहि करओलनि मुंबइ जेबाक।

जेबा सँ दू राति पहिने पत्नी भोरहरिया मे बाथरूम जाएलेल उठलथि। बाथरूम सँ आबि सुतलथि से फेर नहि उठलथि। स्वास्थ्य समस्या तँ छलनि मुदा अनायास एहेन किछु घटित होएबाक संभावना नहि छलनि।

संस्कार काल पतिदेव एतबा बाजैत भोकासी पाड़ि कानए लगलाह, ''अपन बात मनबाइए क' रहलहुँ ने...?''

दामी नूआ

दस-बारह बर्ख पहिलुक एकटा प्रसंग मोन पड़ैए। एक दिन संध्या काल हम दुनू प्राणी चाह पिबैत किछु एमहर-ओमहर के गप्प क' रहल छलहुँ। गप्पे-गप्प मे गप्प कहाँ सँ कहाँ चलि पड़ल से एक रत्ती स्मरण नहि अछि। गप्पक कोनो ओर-छोर तँ होइत नहि छै। गप्प प्रारंभ भेल कोन विषय सँ आ कखन गप्प होमए लागल बच्चा सभक गर्मी छुट्टीक विषयमे, से नहि जानि। हम कहलियनि—''आब तँ मात्र पनरह दिनक उपरान्त दुनू बौआक विद्यालय मे गर्मी छुट्टी प्रारंभ भ' जाएत, किएक नहि एहि बेरक छुट्टी मे वैष्णो देवीक यात्रा पर चलल जाए।''

हमर विचार सुनि ओ प्रत्युत्तर मे अपन सहमति दैत कहलनि—''दिन निश्चित करू तँ टिकट देखैत छी... उपलब्ध अछि कि नहि।''

हुनकर गप्प सुनि हमरा बड़ अजगुत लागल, पहिने कहियो कतहु जेबाक चर्चा करैत छलहुँ तँ दस रंगक बहन्ना करैत छलाह, जेना—गर्मी मास रहल तँ कहितथि एतेक गर्मी मे कतहु जाए बला छै? जाड़क मास रहल तँ कहितथि एतेक ठंढा मे दुनिया भरि कें समान ल' क' जाए पड़त...जड़काला मे लोक घर मे आराम सँ रहत आ कि घर छोड़ि घुरमुरिया खेलाएत? कहियो कहितथि बच्चा सभक छुट्टी छै ने.... हमरा थोड़बे ऑफिस मे गर्मी छुट्टी भेटैत अछि? माने कहियो एहन नहि भेल छलए जे हम एक बेर कहलियनि कतहु चल' लेल आ बिना कोनो नाकर-नुकुर कएनहि ओ ''हँ'' कहि देने होइथ। जखन एक्कहि बेर मे ''हँ''...कहि देलथि तँ तुरन्त मोन मे इएह विचार आएल जे मैयाक बजाहटि आबि गेल अछि तैं ओ कोनो बहन्ना नहि बनओलनि। सभ दिन सँ सुनैत आएल छलहुँ जे जा धरि मैयाक बजाहटि नहि आबैत छै ता धरि यात्राक संयोग नहि बनैत छैक।

अस्तु! जेबाक दिन तय भेल। पहिने तँ टिकट उपलब्ध नहि भ' सकल तखन तत्काल मे टिकट लेल जाएत से निश्चित भेल। हमर सभक एहि कार्यक्रमक चर्चा एक दिन गप्पक क्रम मे पतिदेव, अपन माँ-बाबू जी लग कएलथिन। एत' ई बताएब आवश्यक जे हमर सासु ससुर ग्राउण्ड फ्लोर पर बड़का बेटा पुतहक संग

रहैत छलथि आ हम सभ फर्स्ट फ्लोर पर। भोर साँझ बाबूजी लग जा क' बैसब, हुनका भरि दिन खेबा योग्य पाँच-सात खिल्ली पान लगा क' खिलबट्टी मे ओरिया क' राखि देब हिनकर दिनचर्या छलनि। जहिना माए-बाबू जी लग ई चर्चा कएलथिन, हुनकर दुनू गोटे कें इच्छा सेहो बलवती होमए लगलनि वैष्णो देवी जेबाक।

माए कहलथिन—''सभ तीर्थ भेल एकमात्र वैष्णो देवी टा छूटल अछि।''

हुनकर सभक इच्छाक मान राखैत 'तत्काल' मे छओ टा टिकट लेल गेल अर्चना एक्सप्रेस कें, जे पटना सँ जम्मू तवी जाइत अछि। सभ गोटे खूब उत्साहित छल मैयाक दरबार जएबाक लेल मुदा हमरा मोन मे उत्साहक संग संग कनि चिंताक भाव सेहो छल कारण हमर सासु पूर्ण स्वस्थ नहि छलीह। चारि वर्ष सँ ओ लकवाग्रस्त छलीह, दाहिना हाथ-पैर प्रभावित छलनि। बहुत उपचार आ फिजियोथेरेपिस्ट द्वारा व्यायाम इत्यादि करओलाक उपरान्त कहुना अपन नित्य क्रिया करबा योग्य भेल छलथि। एहेन स्थिति मे हुनका एतेक पैघ यात्रा पर ल' क' जाएब हमरा लेल बहुत पैघ जिम्मेदारी छल। महिला होएबाक कारणें सभ भार हमरा पर रहत से सोचि कनेक चिन्तित छलहुँ। भगवती कें मोने मोन गोहराबए लगलहुँ—''हे भगवती नीक जकाँ यात्रा सम्पन्न भ' जाए एतबा कृपा करब।'' सभ भार भगवती पर ध' हमहूँ प्रसन्नचित्तें यात्रा पर निकललहुँ। गाड़ी मे जतेक बेर सासु कें वॉशरूम दिस जेबाक होइन तँ हुनकर हाथ पकड़ि क' ल' जाएब आ फेर ल' आएब, बेर बेर खेबा पिबा लेल पूछि हाथ क' पानि देब, खाए लेल देब, फेर हाथ धोआएब, ई सभ टा क्रियाकलाप सोझाँ बैसलि महिला जनिक बएस पचास-पचपन बर्खक रहल होएतनि, बहुत धियान सँ देखि रहल छलि। ओहि महिलाक संग एक गोट नवयुवक छलनि जनिकर बर्थ दोसर बॉगी मे छलनि, टिकट प्रायः बाद मे कन्फर्म भेल हेतनि। ओ महिला बड़ धीर गंभीर मुद्रा बनओने, बेसी बाजए बाली नहि, चुपचाप वस्तुस्थितिक अवलोकन करैत यात्रा क' रहल छलि। टी टी आएल ताहि क्रम मे एतबा बुझलहुँ जे हुनका पठानकोट कैंट उतरबाक छनि आ ओ बिहारी नहि छथि। माने मैथिली भाषा बुझबा मे अक्षम छथि। भोरे सात बजे हम सभ गाड़ी मे चढ़ल छलहुँहें। चारि-पाँच घंटा सँ हमर सभक क्रियाकलाप देखैत-देखैत अन्ततः रहल नहि गेलनि ओहि महिला कें, हमर सासु सँ पुछलथिन—''बेटी है क्या?''

—''नहीं...बहू है''

—''कोई विश्वास नहीं करेगा कि ये आपकी बेटी नहीं, बहू है।''

मात्र एतबे गप्प क' ओ महिला अपन वास्तविक धीर-गंभीर मुद्रा मे आराम करए लगलीह।

तकरा बाद भरि दिन, भरि राति हमरा सभक ओहि महिला सँ कोनो तरहक वार्तालाप नहिए जकाँ भेल।

प्रातःकाल सासु कें मुँह हाथ धोआबैत अपनहुँ मुँह हाथ धो क' अपना सीट पर पालथी मारि क' बैसलहुँ आ खिड़की सँ बाहरक मनोरम दृश्य देखबा मे मगन भ' गेलहुँ हम। आ कि महिला हमरा दिस ताकैत बाजि उठलीह—''अरे देखिए आपका साड़ी नीचे से फट गया है, कहीं खोंच लग गया क्या?''

हम पालथी मारनहि साड़ी दिस देखलहुँ, सत्ते निचाँ सँ लगभग चारि आँगुर फाटल छलए नूआ हमर। प्रायः पायल सँ खोंच लागि गेल छलए। हम अकचकाइत बजलहुँ—''हे भगवान! कब फट गया पता भी नहीं चला...मेरा मनपसंद साड़ी था, पिछली बार मायके गई थी तो माँ ने दिया था..।''

हम एतबा बजलहुँ आ कि सासु कें जेना आगि लेसि देलकनि, ओ धाराप्रवाह बाजए लगलीह—''हँ...सभटा दामी नूआ, नीक नूआ तँ माइए दैत छथि ...हम आ कि हमर बेटा कहियो देलक एक्कहु टा दामी नूआ अहाँ कें... ओ कहैत छै ने खैब घ'रे सँ आ कानब अगहने सँ ...सएह परि अछि अहाँक... सभ दिन सभ सुख देलक हमर बेटा आ गुण गाएब माए बापक... के आबैत अछि नैहर सँ खोज पुछारी करबाक लेल...हमर सभक कोनो नाम चर्चा नहि...।''

हम अकबकाएल रहि गेलहुँ, घर मे रहितहुँ तँ एतबा निश्चित कहितियनि—''हम से कहाँ कहलियनि जे ई सभ किछु नहि दैत छथि।'' मुदा पब्लिक प्लेस पर कठाइन सन लागल किछु बाजैत। ओहुना तखन हुनका बुझाएब असंभव छलए। बूझल छलए...आब ओ भरि इच्छा बजतीह तखनहि शांत हेतीह।

सोझाँ बैसलि ओहि धीर-गंभीर महिला कें हमर सभक गप्प तँ बुझबा मे नहि आएल हेतनि मुदा भाव भंगिमा देखि भान भ' गेल हेतनि सभ टा गप्प... तैं बाजलि प्रायः—''हाँ... अब विश्वास हुआ कि आप दोनों सास-बहू हैं...!''

परिभाषा

''यै...कहाँ गेलहुँ...अरे...कॉल आबि रहल अछि अहाँक मोबाइल पर...हैया लिय'...'' हाथ मे पत्नीक मोबाइल लेने हुनका ताकैत, दौगल एलाह अजय बाबू। पत्नी ममता पछबरिया कोठरी मे हुनकहि शर्ट-पैंट पर प्रेस क' रहल छलीह। अजय बाबू पुबरिया कोठरी मे टी वी देखैत रवि दिनक आनन्द उठा रहल छलाह। दुनू कोठरीक बीच डाइनिंग हॉल रहने, दुनू कोठरीक दूरी कनि बेसीए छलनि, तँ सहजहि पत्नी धरि पहुँचैत-पहुँचैत पूरा रिंग होइत कॉल डिस्कनेक्ट भ' गेल छलनि।

खिसिआइत बजलाह, ''मोबाइल कत्तहु फेकल रहैए, अपने कत्तहु रहैत छी...अनेरे दौड़ौलहुँ हमरा ओहि घर सँ एहि घर।''

''अरे...बाबा...दौड़लहुँ तँ कोन दिक्कत भ' गेल...किछु ने किछु लाभे भ' जाएत। रवि दिन रहने, भरिदिन बस मोबाइल आ टी वी देखैत जे एक्कहि ठाम स्थापित रहैत छी, से स्वास्थ्य लेल कतेक हानिकारक छै, सोचैत छियै कखनो... ऐं...? सोम सँ शनि धरि ऑफिस मे कुर्सी तोड़ब आ रवि दिन घर मे बैसल पलंग तोड़ब।'' ममता दाइ कें लेक्चर देबाक अवसर भेटबाक देरी छलनि...से भेटितहि शुरु भ' गेल छलीह!

आब बेचारे अजय बाबूक बोलती बन्द। घुरि क' जाए लगलथि, तखन पुछलथिन ममता, ''फोन छलए ककर?''

—''नंबर छलए...कॉलबैक करबाक अछि?''

—''हँ देखियौ ने...लगबियौ न' कनि...''

आज्ञाकारी पति जकाँ क्षणहि मे कॉल लगा देलनि अजय बाबू। स्पीकर ऑन करबाक पत्नीक आग्रह केर सेहो पालन केलनि। दुइए बेर रिंग गेल होएत आ कि कॉल रिसीव कएल गेल। ओम्हर सँ एकटा पुरुखक स्वर—''हलो...'' सुनि ममता तत्क्षण दिमाग दौड़ेलीह। हाथक इशारा सँ पतिदेव कें कहलथिन... अहीं बतिया लिय'...

''हलो...के...?''

—''जी...हम एकटा पाठक छी, ममता रानी जीक। फेसबुक पर सेहो हिनकर पोस्ट सभ पढ़ैत रहैत छी। एखनहि 'भाषान्तर' पत्रिका मे हिनकर लिखल एकटा कथा पढ़ि बड्ड प्रभावित भेलहुँ, तँ सोचलहुँ साधुवाद कहि दियनि फोन पर।''

—''हम ममता जीक पति अजय बाजि रहल छी।''

—''जी...ममता मैम सँ गप्प भ' सकैत अछि की?''

—''जी..जी...किएक नहि...हैया लिय' गप्प करु...'' मोबाइल पत्नीक हाथ मे दैत चुप्पे मुँह बाबि संकेत कएलनि अजय बाबू ''ना..म..'' पुछियनु से...

—''जी नमस्कार! ... अपनेक शुभ नाम?''

—''जी... सुजीत''

—''वाह! अद्‌भुत संजोग...हम जाहि लघुकथा सँ अपन लेखन यात्रा शुरु केलहुँ, तकर मुख्य पात्रक नाम सेहो ''सुजीते'' रखने छलहुँ। अहाँक नाम आब कहियो नहि बिसराएत हमरा।''

—''हमर सौभाग्य! एकटा पाठकक नाम जँ आजीवन स्मरण रहतनि लेखक कें, तँ एकरा हम अपन सौभाग्ये बूझब।''

—''अरे...केहेन बात करैत छी। अहाँ सन पाठके सँ तँ हमरा सन कलम घसनिहारक अस्तित्व छैक। सौभाग्य हमर, जे एहेन पाठक भेटलाह। अच्छा... अहाँ हमर फेसबुक पोस्ट केर गप्प क' रहल छलहुँ हिनका सँ...। तँ की...अहाँ हमर फ्रेंड लिस्ट मे छी?''

—''जी...लगभग दू साल सँ छी। हमहीं रिक्वेस्ट कएल, अपने एक्सेप्ट केलियै, हमरा बड्ड प्रसन्नता भेल छलए। मुदा से प्रसन्नता मैसेंजर पर व्यक्त नहि कएल, अन्यथा नहि ल' लेल जाए अपनेक द्वारा, से सोचि।''

—''नीके केलहुँ...'' हँसैत कहलथिन ममता।

—''जी मैम...से ठीके कहलहुँ। ओना हम गप्प करैत सेहो धखाइते रही...मुदा गप्प करबाक इच्छे ततेक बलवती होमए लागल जे आखिर नहिए रोकि सकलहुँ स्वयं कें...असल मे एहि कथा सँ एतेक प्रभावित होएबाक एकटा कारण अछि। हम स्वयं भुक्तभोगी छी। हमरा बुझाएल जेना ई हमरे खिस्सा हुअए। हमरा घरक लोकक सेहो भयंकर दबाव छलए हमरा पर, जीव विज्ञान पढ़ि डॉक्टर बनबाक लेल... मुदा हमर रुचि साहित्य पढ़बा मे छलए। अन्ततः भेल ई जे, ने विज्ञान पढ़ैत नीक रिजल्ट भेल, ने डॉक्टर बनि सकलहुँ, ने मोन मुताबिक साहित्य पढ़ि सकलहुँ। कहुना प्रतियोगिता परीक्षा पास क' बिजली विभाग मे कार्यरत छी। जीवन ठीकेठाक बीति रहल अछि मुदा एकटा कसक अछि मोन मे, जे हमर इच्छाक विरुद्ध विषय पढ़बाक दबाव रहल हमरा पर।''

—''अरे...कोनो बात नहि। जो बीत गई सो बात गई... पहिने ई सभ आम बात छलैक। आ गार्जियन अपना भरि धिया-पूताक नीके सोचि एहि तरहक दबाव दैत छलथिन। ई कथा लिखबाक उद्देश्य हमर ई छलए, जे भविष्य मे लोक एना नहि करथि अपन धिया-पूताक संग। से मैसेज देबाक प्रयास कएल हम। कतेक सफल भेलहुँ, से तँ समये बताएत।''

—''जी, सएह नीक लागल ने...बहुत नीक मैसेज दैत अछि ई कथा।''

—''बहुत आभार अहाँक। हमर लिखल पढ़लहुँ। अपन प्रतिक्रिया सँ अवगत करौलहुँ। नीक लागल गप्प क' क'। एकटा निवेदन जे, जेना आइ प्रशंसा करबा लेल कॉल केलहुँ, तहिना कहियो कोनो कथा वा लेख मे किछु अधलाह लागए, तँ से ताहू सँ अवगत कराबी। निस्संकोच। अहाँ सजग पाठक बुझेलहुँ, तैं कहल। हमर नम्बर सुरक्षित राखि लिय'...इएह हमर व्हाट्सएप नम्बर सेहो अछि। हमर एकमात्र मोबाइल नम्बर अछि ई। अहाँक स्वागत अछि हमर कॉन्टैक्ट लिस्ट मे।

—''जी, धन्यवाद मैम!''

—''स्वागत!''

पहिले गपशप मे एहि सजग पाठक सुजीत जी लेल बहुत सकारात्मक धारणा बनि गेलनि ममताक मोन मे। नहि जानि किएक? बहुत समझदार, व्यवस्थित लोक बुझा पड़लथिन, सुजीत हुनका। नीक लोकक सभटा लक्षण सँ युक्त मनुक्ख बुझना गेलथिन। भ' सकैए नब-नब लिखब शुरुए कएने छलीह ममता, तैं पाठकक प्रतिक्रिया बेस प्रभावित करैत छलनि।

तँ सएह प्रभावित होएबाक क्रम मे फोन पर गप्प होइतहि एहि सजग पाठकक तलाश फेसबुक पर सेहो कएलनि ममता। हुनकर पोस्ट सभ पर नजरि खिरौलनि। ज्ञानवान लोक बुझेलथिन, जहिना कॉल पर गप्प करैत बुझाएल रहथिन, सएह फेसबुक पोस्ट सँ सेहो परिलक्षित भेलनि। अपन लेटेस्ट पोस्ट सभ पर हुनकर कएल कमेन्ट सभ सेहो देखलनि। आ तैं आब ममताक सोझाँ सुजीतक पोस्ट सभ देखाए लागल छलनि। पढ़ए/देखए लागल छलीह। कहियो काल लाइक कमेंट करैत रहैत छलीह। ओ तँ सहजहि ममताक सजग पाठक छलाह, आ बनल रहलाह। कहियो काल कोनो मोटिवेशनल संदेश बला मैसेज पठा देल करथिन सुजीत जी, ममताक व्हाट्सएप्प पर। संगहि पाबनि तिहारक अवसर पर व्यक्तिगत रूप सँ एक-दोसरा कें व्हाट्सएप पर शुभकामना संदेशक आदान-प्रदान सेहो होमए लागल छलनि। एहि तरहें एकटा विश्वसनीय संबंध बनि गेलनि दुनू लेखक-पाठकक बीच।

एक दिन बेरुपहर बैसल-बैसल अनायास ममता कें मोन पड़लनि, जे ओ अपन पहिल लघुकथाक पात्रक नाम 'सुजीत' होएबाक चर्चा कएने छलीह अपन धीर-गंभीर पाठक सुजीत जीक सोझाँ। से की फुरएलनि, व्हाट्सएप पर पठा देलिथिन हुनका अपन लिखल ओ लघुकथा।

''जाहि लघुकथा सँ लेखनक शुभारम्भ कएल, से अवलोकनार्थ प्रस्तुत अछि।'' एहि मैसेजक संग अपन लिखल पहिल लघुकथा पठाए, ममता एकटा अपूर्ण पोथी पढ़बा मे लागि गेलीह।

सजग पाठक एतेक सजगता देखौथिन, से एक रत्ती अनुमान नहि छलनि ममता दाइ कें। पाँचो मिनट नहि बीतल हेतनि आ कि कॉल आबि गेलनि सुजीत जीक। प्रतिक्रिया संप्रेषित करबा लेल तेना अगुताएल छलाह जेना कोनो महिलाक पेट मे बात नहि अरधैत रहैत छैक, जखन ओकरा दोसर महिलाक विषय मे कोनो चटपटा गॉसिप पता लागि जाइत छैक। कुशल-क्षेम पूछैत एक्कहि सुरे बाजि गेलाह, ''कतेक कम शब्द मे कतेक नीक मैसेज देल अछि मैम। हमरा ततेक नीक लागल जे धैर्य नहि रहल। एखन ऑफिस मे छी हम...अपन केबिन सँ बहरा क' बतिया रहल छी। नहि जानि किएक, बेस प्रभावित करैत अछि अहाँक लेखनी!''

अपन प्रशंसा सुनब ककरा बेजाए लगतैक। उत्साहित होइत चोट्टहि बाजि उठलीह ममता, ''एहि लघुकथाक मैसेज कें हम अपना जीवन मे उतारि चुकल छी पूर्णतया। ब्रान्डेड आ दामी नूआ पहिरि ककरो प्रभावित करबाक प्रयास कहियो नहि रहल। दुइओ सए, चारिओ सएक नूआ पहिरि लैत छी, प्रसन्नता सँ। आन्तरिक गुण/चारित्रिक गुण सँ लोक स्मरण राखथि हमरा, कीमती वस्त्राभूषणक कारणें नहि। हमर अभिलाषा सदति सएह रहल।''

जहिना ममता चोट्टहि बाजल छलीह, तहिना बिनु एक्कहु क्षण गमौने सुजीत जी बाजि उठलाह, ''अरे अपने तँ साक्षात् भगवती स्वरूपा छियै, भगवती कृपा सँ भगवती सन रंग-रूपक स्वामिनी छियै, अपने कें दामी नूआक खगते कोन। किछुओ पहिरि नीके लगबै।'' क्षण भरि रुकलाह, फेर बजलाह, "कृपया अन्यथा नहि लेल जाए मैम...फोटो देखल अछि पत्रिका आ फेसबुक पर, सएह मुखाकृति मोन मे आएल आ जे यथार्थ छलए, से मुँह सँ स्वतः बहरा गेल।''

कनिकाल तँ अकबकाएले रहि गेलीह ममता। कारण सुजीत जीक गंभीरताक हिसाबें ई गप्प कनि हल्लुक सन लागल छलनि ममता दाइ कें। मुदा क्षणहि मे सुभ्यस्त होइत अपन सजग पाठक कें सहज करबाक प्रयास करैत बजलीह, ''अरे..रे..रे...अहाँ एतेक घबड़ा किएक रहल छी..? एहि मे अन्यथा लेबाक कोनो

बाते नहि अछि। अहाँ नीक लोक छी। निश्छल भावें कहल अहाँक बात कें अन्यथा लेबाक प्रश्ने नहि!''

कनि बिलमि क' अपन लेक्चर शुरु कएलीह, ''मनुष्यक नीक/बेजाए मुखाकृति पूर्णरूपेण भगवानक देन होइत छैक तथापि लोक ओकरा अपन उपलब्धि मानि गौरवान्वित होइत रहैए विशेष रूप सँ सुन्नरि स्त्री। एहेन सन क्रम जेना सुनरताइ सेहो हुनकर अपन प्रतिभा होइन। मुदा हम एहेन कोनो भ्रम मे नहि जीबि रहल छी। ठीक छै...भगवान जेहेन बनौलनि...ककरो नीक लागैत छियै, ककरो बेजाए...अहाँ कें नीक लगलहुँ, ई अहाँक सिनेह भेल हमरा लेल। आ हमरा बूझल अछि, जे ई सिनेह निर्विकार अछि। 'सिक्स्थ सेंस' सँ जरूर अवगत होएब। से ई सिक्स्थ सेंस महिला सभक भीतर बेसी प्रभावी रहैत छैक। बूझल अछि ने? एहेन हम नहि, रिसर्च कहैत छैक। कोनो पुरुखक नीक/बेजाए इन्टेन्शन बुझबा मे आबि जाइत छैक महिला सभ कें। आ हम तँ मनोविज्ञानक विद्यार्थी रहल छी। लोकक दिमाग मे चलैत बात बुझबाक क्षमता कनिको तँ निश्चिते होएत, से मानब ने...? ऍं यौ पाठक महाराज...?''

—''जी मैम...मानब किएक नहि।''

—''तँ आब कोनो तरहक डर नहि ने मोन मे..? जे मोन मे रहए स्पष्ट बाजी। मोन मे नहि राखी बात। जाहिठाम बेसी सोचि-विचारि क' बाजए पड़ए, ताहिठाम बुझू अपनत्वक छूतिओ नहि अछि। बेसी चोपेतल सन रहब हमरा स्वयं पसिन नहि अछि। बुझलियै ने..?''

—''जी...जी...बुझि गेलियै।''

सुजीत जी आ ममता प्रायः समवयस्के सन रहल होएताह। से हुनकर फेसबुक पोस्ट आ फोटो सभ सँ अनुमान लागि रहल छलनि ममता दाइ कें।

एक दिन भोरे-भोरे सुजीत जीक पोस्ट ममताक सोझाँ अएलनि। विवाहक पचीसम वर्षगाँठक उत्सव केर छवि सभ पोस्ट कएने छलाह ओ। किछु फोटो अपन धर्मपत्नीक संग सेहो छलनि, आ किछु धिया पूताक संग सेहो। बेटा आ बेटी, दुनू धन जाहि घर मे हुअए, ओहि परिवार सँ समृद्ध के भ' सकैए। से हुनकर समृद्ध परिवार देखि नीक लागल छलनि ममता कें। बड्ड नीक लागल छलनि। एकटा बेटा आ एक टा बेटीक पिता छथि सुजीत, से फैमिली-फोटो देखि स्पष्ट भ' गेल छलनि। फोन पर व्यक्तिगत गप्पक क्रम शुरू भेल नहि छलनि ता धरि।

ममता अपन बालकक विवाह क' क' साल भरि पहिने निश्चिन्त भेल छलीह। मुदा बेटी कुमारिए छलथिन। सुन्दर सुयोग्य वर भेटनि ताहि कामनाक संग लड़का ठेकनाबैत रहैत छलीह। ताहि क्रम मे एकटा स्वभाव बनि गेल छलनि, केओ जँ

अपन बेटाक फोटो पोस्ट करथि, जन्मदिन वा एकेडमिक उपलब्धि पर, तँ ममता दाइ ओहि हिसाबें बहुत ध्यान सँ देखैत रहैत छलीह फोटो कें। जूम क' क' फोटो देखबाक एकटा हिस्सक सन भ' गेल छलनि। ताही हिसाबें सुजीत जीक बेटाक फोटो सेहो गौर सँ देखबाक क्रम मे बच्चाक ताकब किछु गड़बड़ सन बुझेलनि। मतलब नॉर्मल नहि बुझेलनि बच्चा। भाव-भंगिमा कनि दोसरे रंग सन। चिन्ता भेलनि ममता कें। कनि बेसीए चिन्ता होमए लगलनि बच्चाक विषय मे सोचि सोचि क'।

मोन छओ-पाँच करनि, ''की करी...एहि संदर्भ मे किछु पूछियनि सुजीत सँ कि नहि पुछियनि। कहीं खराप तँ ने लागि जेतनि। भारी समस्या। नहि पुछियनु, तँ अपना मोन मे घुरिआइत रहत...आखिर की समस्या छनि बच्चा कें...कहियो अपना मोने बजलाह किएक नहि।''

अन्ततः नहिए रहल गेलनि। एक दिन फोन पर हालचाल पुछबाक क्रममे चर्चा कइए देलथिन—''ऐं यौ सुजीत जी...अहाँक बच्चाक फोटो देखलहुँ फेसबुक पर। ओ जे फैमिली फोटो सभ पोस्ट कएने छलहुँ अहाँ अपन विवाहक वर्षगाँठ पर, से बला। बड़ पवित्र धिया। तेहने सुन्दर बेटा। बात छै जे...माए बाप दुनू तँ सुन्दरे छै...तँ धिया पूता किएक ने सुन्दर हेतैक...''

ओमहर सँ किछु बाजिए नहि रहल छलाह सुजीत जी। हुनकर चुप्पी ममता दाइक घबड़ाहटि द्विगुणित करए लगलनि। दू बेर ''हलो... हलो'' करैत पुछलथिन, ''की भेल? चुप किएक छी? अपसेट छी? किछु समस्या अछि की?''

—''जी नै मैम...सोच मे पड़ल छलहुँ, कही कि नै कही...असल मे हमर बच्चा एकटा गंभीर बेमारीक चपेट मे छथि। रहीमक दोहा मोन पड़ि गेल छलए, रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय...''

—''अहाँ सोच मे पड़ल छी, बतबियनि कि नै बतबियनि। हम क्षुब्ध छी, जे एतेक बड़का बात आइ धरि गुप्त राखि कोना बैसल छलहुँ अहाँ। ई अहाँ नीक काज नै केलहुँ सुजीत बाबू। हम प्रायः भ्रम मे जीबि रहल छलहुँहें। हमरा होइत छलए आब हमरा-अहाँक बीच एकटा पारिवारिक संबंध बला आपकता भ' गेल अछि।''

—''जी मैम...से तँ ठीके...पारिवारिक संबंध तँ बनिए गेल अछि। एहेन अनुभव तँ हमरो होइए। नहि बताबी, से मोन मे आएल मात्र एक्कहि कारण सँ। हम जहाँ धरि बुझि सकल छी अपने कें, हमरा बुझाएल अनेरे परेशान भ' जाएब अपने।'' सुजीत सकुचाइत बजलाह।

—''पारिवारिक संबंध मे एतेक सोचि क' गप्प होइत छै की? अहीं कहू त'?''

सुजीत चुप्प...

—''अहाँ अपन परेशानी हमरा नै कहब, हम अपन परेशानी अहाँ लग नै बाजब। एतेक फॉर्मल रहब हमरा नै पसिन। जखन ककरो संग हेम-क्षेम बढ़ि जाए...तँ सहज आ ओपन होएब सेहो आवश्यक रहैत छै। आ देखियौ आइ-काल्हिक जेहेन समय अछि, के ककर सुख-दुःख सुनबालेल उपलब्ध रहैत छै? अहीं कहू न' कनि... अपन सहोदरोक बीच एकटा 'गैप' आबि जाइत छै। के ककरा समय पर काज आबैत छै? समये नै रहैत छै ककरो लग।'' ममता दाइ फेर कनि लेक्चर देबाक मूड मे आबि गेल छलीह।

—''जी मैम''।

—''अरे! जी मैम की? की समस्या छनि बच्चा कें? से तँ कहू... मानसिक समस्या तँ ने छै कोनो?''

—''नै नै...मानसिक समस्या तँ नै छै तेहेन किछु...। इम्यूनोडिफिशिएंसी डिसऑर्डर सँ पीड़ित छथि, तकर प्रभावें कनि डल्ल पर्सनैलिटी भ' गेलनि...ततेक दवाइ खाए पड़ल छनि एतबे टा जीवन मे जे बेचारे तबाह भेल रहैत छथि।''

—''कहिया सँ छनि समस्या...?'' ममताक स्वर मे व्याकुलता स्पष्ट सुनाइ पड़लनि सुजीत कें।

—''जखन बच्चा पाँचवीं कक्षा मे पढ़ैत छलाह, तखनहि पता चलल बिमारीक। घर सँ बहरएबाक लेल एकदम मनाही क' देलकनि डॉक्टर। आगाँक पढ़ब लिखब घरे सँ करबौलियैक।''

कनि थम्हि क' फेर बजलाह सुजीत—''कहुखन लागैत अछि पूर्वजन्मक कोनो पापक भोगना भोगि रहल छी हम। बेटाक रूप मे भगवान हमरा 'सजा' देलनि अछि, कोनो पापक। जखन-जखन बेटाक मुँह ताकैत छी, बस ओकर भविष्य लेल सोचाए लागैत अछि...''

—''ओह...एतेक तकलीफ झेलि रहल छलहुँ अहाँ आ अपने मोने किछु कहलहुँ नहि कहियो...कतेक कष्टकर होइत छैक अपन आँखिक सोझाँ सन्तान कें कष्ट मे देखब, तकर अनुमान लगा सकैत छी हम...'' एतबा बाजैत-बाजैत भावुक होमए लगलीह ममता आ से हुनकर आवाज सँ सुजीत कें बुझबा मे आबि गेलनि।

—''अरे...की भेल मैम..अहाँ कानए किएक लगलहुँ...हमरा सभ कें आब एहि दुःखक संग जीबाक अभ्यास भ' गेल अछि।''

ममता किछु बाजि नहि पाबि रहल छलीह। वाक् बन्द भ' गेल छलनि किछु समय लेल। सुजीतक जिनगीक दुःख हरि लेबालेल की क' सकैत छथि ओ, दिमाग मे बस एतबे चलि रहल छलनि। भानस-भात करैत, स्नान-ध्यान करैत, सुतैत-उठैत

सुजीत आ हुनकर परिवार हुनका दिमाग मे रहए लगलथिन जेना। आत्ममन्थन सेहो करथि कखनोकाल, ''आखिर किएक हम एतेक सोचि रहल छी? एतेक छटपटाहटि किएक? हुनकर मानसिक पीड़ा कम करबाक कोन उपाए कएल जाए, ताहि लेल सदिखन व्याकुल! एकटा पाठकक लेल, एकटा फेसबुक फ्रेंड लेल एतेक व्याकुलता...ई की अछि? सहानुभूति अछि...समानुभूति अछि...दयाभाव अछि...कि प्रेम अछि?''

मोन पड़लनि ममता कें, कतहु-कहियो पढ़ल छलनि, ''जखन केओ अहाँक लेल स्वयं सँ बेसी महत्वपूर्ण भ' जाए तँ बुझू जे अहाँ प्रेम मे छी।'' मुदा प्रेम कोन तरहक अछि, से बूझब सहज नहि। ई आत्ममन्थन अनवरत चलैत रहलनि, ममताक मन-मस्तिष्क ओझराएल रहलनि लगातार।

''ओना प्रेम कोनो तरहक हुअए, प्रेम सुख-चैन छीनिए लैत छैक। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण अछि एकटा मनुक्खक माए/बाप बनितहि सदिखन सन्तानक सुरक्षा लेल, स्वास्थ्य लेल चिन्तित रहब, परेशान रहब। देवता-पितर, पूजा-पाठ सभ किछु बस हुनकहि सुरक्षित, आनन्दमय जीवनक लेल करब। अपन भूख, अपन पिआस पर ध्यान जाएब स्वतः बन्द भ' जाइत छैक शनैः शनैः'' ममता अपना-आप सँ बतिआइत रहलीह कनिकाल धरि।

एहने सन, सुख-चैन छिनाइत अनुभव क' रहल छलीह ममता, सुजीतक लेल सोचि-सोचि क'। पूजाक आसनी पर बैसथि तँ अरबद्धि क' हुनकर ध्यान चलि जाइत छलनि सुजीत आ हुनकर परिवार दिस। भगवान-भगवती कें गोहराबए लागैत छलीह, 'कोनो चमत्कार क' दिअनु...आ सुजीतक मानसिक कष्ट हरि लिअनु...हे भगवान!'

''अहाँ राति चैन सँ सुतलहुँ कि नहि, से चिन्ता...अहाँक घर मे कोनो नब समस्या नै ने ठाढ़ भ' गेल कोनो... से चिन्ता...अहाँक माथ पर हाथ फेरि अहाँक संग ठाढ़ रहबाक इच्छा, 'आइ एम विथ यू' कहबाक इच्छा... मूलतः अहाँक सभटा दुःख हरि लेबाक लालसा रहैत अछि सदिखन...एना किएक सुजीत...हमरा जनैत अहाँ लेल हमरा हृदय मे ममत्वक भाव उमड़ैत रहैए प्रायः!'' अपन मोन हल्लुक करबाक लेल अन्ततः व्हाट्सएप्प पर मैसेज कइए देलिथिन ममता। मोनक भाव मोन मे दबा क' राखबाक लूड़ि नहि रहैत छै सभ कें, से ममता कें तँ एकदम्मे नहि छलनि।

लगले ओहि मैसेजक रिप्लाइ सेहो आबि गेलनि—''दिस इज पीक ऑफ लव मैम...सभ तरहक प्रेम मे सर्वाधिक स्वच्छ-निर्मल-प्रगाढ़ प्रेम अछि ई ममत्व भाव सँ युक्त प्रेम।''

त्वरित प्रतिक्रिया स्वरूप सुजीतक मोन मे जे अएलनि, से लिखि देलनि मैसेज मे। मुदा चिन्तन-मनन चलैत रहलनि मोने मोन...। मात्र ओही दिन नहि, अगिला दू-तीन दिन धरि सोचैत रहलाह, से ओहि मैसेजक उपरान्त हुनकर मौन कहि रहल छलनि। ''दू गोट समवयस्क स्त्री-पुरुषक बीच प्रस्फुटित ई मोह कतेक दिन धरि निर्मल ममता-युक्त स्नेहक रूप मे विद्यमान रहि सकत, से के जानैए? मनुष्यक मोन आ मोनक भाव स्थिर रहि सकैत अछि की?'' सुजीतक चिन्ताक विषय इएह छल हेतनि, से ममताक अनुमान छलनि।

मौन भंग करबाक प्रयास मे ममता थोड़े थोड़े दिनक अन्तराल पर फोन क' लेल करैत छलथिन। ई फोन कॉल्स आब एकदिसाहे होमए लागल छलए। माने ममते दिस सँ कएल जाइत छलनि हरदम। गप्पक क्रम मे कतेको दिन ओ भावुक भ' जाइत छलीह। ममताक अनुमान छलनि, जे ई सभ बात सुजीत कें एक तरहें सुखद सेहो लागि रहल छलनि। ककरो सिनेह पाबि निकें ने लगतैक कोनो मनुष्य कें। बिनु कोनो संबंधक, हुनकर एतेक चिन्ता करब, हुनकर दुःख कें बूझब, हुनकर मानसिक कष्ट दूर करबाक प्रयास करब, सुखद छल हेतनि निस्संदेह! मुदा दोसर दिस मोन डेराइत सेहो छल हेतनि। डर एहि लेल जे सुजीत कें नीक जकाँ बूझल छलनि, ममता पूजा-पाठ, देवता-पितर पर श्रद्धा रखनिहारि, कर्मकाण्डक अनुसरण कएनिहारि, शुद्ध सात्विक विचारधाराक महिला छथि। आ जँ कहियो हुनका आभास भ' जेतनि, कि सुजीतक प्रति सहानुभूति आ समानुभूतिक भाव शनैः शनैः आसक्ति मे परिणत भेल जा रहल छनि, तखन ओ आत्मग्लानि आ अपराध बोध सँ मरए लगतीह। आजीवन मरैत रहतीह।

सुजीत सचेत छलाह। एहेन नहि जे बाद मे पछताए पड़नि ममता दाइ कें आ संगहि हुनको। संपर्क कएलथिन एकटा पाठकक तौर पर, से ओ पाठक-लेखकक संबंध कें कायम राखबाक प्रयास मे छलाह। ममताक सिनेह पाबि स्वाभाविके सुजीतक हृदय मे सेहो ओतबे वा ओहि सँ बेसीए सिनेह उमड़ैत रहैत छलनि। प्रेम-भाव नुकौने नहि नुकाइत छै, परिलक्षित भइए जाइत छै। हुनको ममताक संग नीक लागए लगलनि। हुनकर बाजब, हुनकर कानब, सभ किछु सँ अटैचमेन्ट बढ़ैत जा रहल छलनि प्रायः। से ओ कहियो स्पष्ट बजलाह तँ नहि तथापि ममता कें स्पष्ट अनुभव भ' रहल छलनि। देखाइत छलनि स्पष्ट। मुदा ई अटैचमेन्ट हुनका दुनू गोटाक लेल आह्लादकारी होइतहुँ खतराक घंटी छलनि। सुजीत कनि बेसीए सचेत छलाह मर्यादा मे रहबा लेल। ओ एक टा सजग पाठके टा नहि समग्र रुपें एकटा सजग व्यक्तित्व बुझा पड़लथिन ममता कें।

तत्काल एहि गप्प-शप्प आ मैसेजक आदान-प्रदान कें बन्द करब आवश्यक अछि, से बुझबा मे आबि गेल छलनि सुजीत कें। आ से सुजीतक एहि मनःस्थितिक भान ममता कें सेहो भ' गेल छलनि। सभ किछु सामान्य नहि अछि से स्पष्ट देखा रहल छलनि।

जकरे डर छलनि, सएह भेलनि। दू दिन धरि मौन पसरल रहलनि ममता ओ सुजीत जीक बीच। तेसर दिन स्नान ध्यानक उपरान्त मोबाइल हाथ मे लैते देरी सभ सँ उपर सुजीत जीक मैसेज देखएलनि ममता कें, ''एहि बातचीत कें विराम कोना देल जाए मैम?''

अकचकएबाक नाटक कएलीह ममता, ''की भेल यौ सुजीत बाबू? हमर कोनो बात खराप लागि गेल की?''

—''अरे...नै...एहेन किछु नै छै मैम। सीरियसली कहि रहल छी हम, दिस शुड बी स्टॉप्ड इमिडीएटली...''

—''कारण बुझबाक अछि हमरा...बात की छै आखिर?'' एतबा टाइप करैत ममताक आँखि डबडबा गेल छलनि।

—''हम बता नै सकब मैम आ अहाँ बुझियो नै सकब प्रायः...'' ई पढ़ैत ममताक आँखिक नोर बान्ह तोड़ि झहरहे लगलनि आखिर।

कनि बिलमि, आँखि पोछि टाइप कएलीह, ''अरे...एहेन कोन गूढ़ कारण छै जे ने बताएल जा सकैत अछि आ ने बूझल जा सकैत अछि?''

इमोशनल इमोजीक संग सुजीतक रिप्लाइ अएलनि, ''प्लीज मैम नेहोरा करैत छी...बुझू बात कें... बहुत जरूरी अछि ई...''

सुजीतक समझदारी पर विश्वास छलनि ममता कें। एकदम शुरुहे सँ। ओ जे सोचताह से दुनू गोटाक भलाइ लेल, से विश्वास छलनि। कहि देलथिन, ''ठीक छै, जे अहाँक इच्छा...मुदा ई होएत कोना?''

—''हम सोचि रहल छी मैम...अहाँक मोबाइल नम्बर कें ब्लॉक क' दी हम। व्हाट्सएप्प आ कॉलिंग, दुनू ठाम।''

कोंढ़ फाटए लगलनि ममताक, ''एहेन क्रूरता? किएक सुजीत? आ कएल भ' जाएत अहाँ बुतें...?''

—''अहाँ बुझिए नै रहल छी मैम...जतेक देरी करब, सिनेहक डोरी मजगूत होइत जाएत...ततेक मजगूत जे तोड़ब असंभव भ' जाएत। ई उचित नहि ने...पर-पुरुष लेल एतेक माया-मोह बढ़ाएब काल बेसाहब सन ने भ' जाए अहाँ लेल...हमरा से डर अछि मैम... अप्पन चिंता एक रत्ती नहि अछि हमरा। अहाँ

लक्ष्मी स्वरूपा गृहणी छी, सुखमय जीवन अछि अहाँक...सुखमय बनल रहए...से कामना अछि हमर।''

ममता खेखनिआ करैत कहलथिन, ''नै... सुजीत एहेन नै होएत, जखन हमरा एहेन लागत, जे काल बेसाहि रहल छी तँ हम अपने कहि देब...''

—''नै मैम...किछु नै सुनबाक-बुझबाक अछि आब हमरा...एहि जन्म बस एतबे दिनक संग छलए से मानि लेबा मे भलाइ अछि दुनू गोटाक।''

मौनक चद्दरि धीरे-धीरे पसरल जा रहल छल।

• • •